

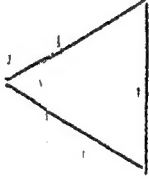
श्रीक्षपणासारगर्भित लब्धिसारका अर्थसंदृष्टि अधिकार ।

संहृष्टेलब्धिसारस्य क्षपणासारमौगुणः ।

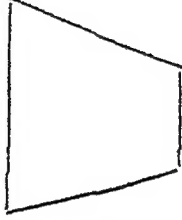
प्रकाशिनः पदं स्तोमि नेमीन्दोर्मोघवप्रभोः ॥ १ ॥

अथ लब्धिसार क्षपणासार शास्त्रविषे कहे जे अर्थ तिनविषे कते इक अर्थनिकी सं-
दृष्टि जो पूर्वाचार्यनिकरि कीनी संकेतरूप संहनानी तिनके स्वरूपका निरूपण कीजिए-
हे— सो संहृष्टि तो मूलगून्यविषे वा टीकाविषे जेसँ लिखीं तेसँ इहां लिखिए है । तहां
परंपरा लेखक दोषतँ जे संहृष्टि तहां अन्यथा लिखीं तनिने बुद्धि अनुसारि सवारि लि-
खोंगा । वा बुद्धि अमतेँ अन्यथा लिखों तो विशेषबुद्धि सवारि लीजियो । बहुरि तिनि-
का स्वरूप गाथानिविषे लिख्या नाहीं टीकाविषे भी लिख्या नाहीं में मेरी बुद्धि अनुसारि
विधि मिलाह २ तिनके स्वरूपकों लिखोंगा सो आकारादिरूप संहृष्टि तो कठिन अर मेरी
बुद्धि अल्प, शास्त्रविषे लिख्या नाहीं, वा बतानेवाला मिल्या नाहीं तातँ जानो हों तिनके
स्वरूप लिखनेमें चूक परेगी परंतु मार्ग तो जान्या जाह इस वासतँ में लिखों हों सो जहां
क होह तहां विशेषबुद्धि सवारि शुद्ध करियो । मोकों बालक मानि क्षमा करियो । ब-
हुरि इहां संहृष्टि वा तिनका स्वरूप विषे जिनिका मोकों स्पष्ट ज्ञान न भया ते इहां नाहीं

लिखी हैं, मूल ग्रंथतें जानियो। बहुरि केते इक सुगम जानि ग्रंथ विस्तार भयतें नार्हीं लिखिये हैं तिनिकों विधि मिलाइ जानिये बहुरि केते इक गोम्मटसार टीकाका संहटि अधिकार विषे लिखी हैं ते इस शास्त्रविषे थीं तिनकों इहां नार्हीं लिखिण हैं तहांतें जानियो। बहुरि जे इहां संहटि वा तिनका स्वरूप इहां लिखिण है ते इहांतें जानियो। तहां एक्बार जिस अर्थकी जो संहटि लिखी होइ सोई तिस अर्थकी जहां तहां संहटि जानि लेनी। ग्रंथ विस्तारभयतें वारम्बार लिखी नाही है। बहुरि इहां लिखी संहटिनिकों वा तिनके स्वरूपकों जान्या बाहे सो पहलें तो श्रीगोम्मटसारकी भाषाटीकाविषे जो जुदा जुदा संहटि अधिकार कीया है ताकों अभ्यासै तहां पहलें सामान्यस्वरूप निरूपण कीया है ताकों जानें तो संहटिनिकों पहिचानै अर विशेषकों जानें। वहां इहां संहटि संहटि होइ तिनिका ज्ञान होइ जाइ। बहुरि इहां आकार रूप संहटि बहुत हैं। तहां ऊर्ध्व रचनाविषे घटता कमलीएं निषेकादिकनिकी संहटि औसी—



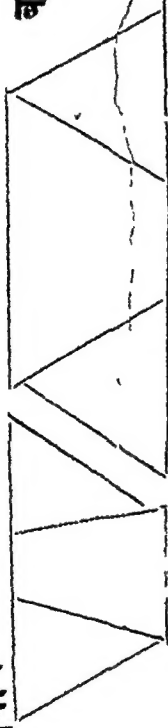
अर गुणश्रीणि आयामादिविषे बघता क्रमकी औसी



अर पूर्वे द्रव्य था

अर नवीन द्रव्य और मिलाये तहां दो बडा लीक, तहां पूर्वे घटता क्रम था अर दीया द्रव्य का बघता क्रम है वा पूर्वे बघता क्रम था, दीया द्रव्य घटता क्रम लीएं था तिनकी औसी संदृष्टि जाननी ।

बहुरि नीचले ऊपरले निषे-



कानि विषे जैसे जैसे विधान होइ तैसे तैसे नीचे ऊपरि रचना लिखनी । बहुरि समपट्टिका विषे समरूप रचना औसी करनी । बहुरि अनुभाग आदि तितय रचनो विषे

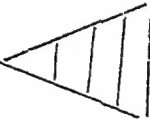
आडी रचना करनी तहां समपट्टिका की सूची औसी घटता क्रम की औसी करनी

इत्यादि अनेक प्रकार हैं । सो आगे जहां संदृष्टि लिखेंगे तहां तिनका

स्वरूप भी लिखेंगे सो जानना । तहां पहले प्रथमोपशम सम्यक्त्वका विधानकी संदृष्टि कहिए है-

तहां प्रकृतिनिकाबंध उदय सत्त्वविषे कृटरूप गोमटसारका स्थान समुत्कीर्तन अधिका-
र विषे जैसे कही है तैसे इहां संभवती जानि लेने । बहुरि तीनों करणनिकी संदृष्टि गोमटसार
का संदृष्टि अधिकार विषे गुणस्थानाधिकार विषे जैसे कही है तैसे जाननी । बहुरि अपकर्षण उ-
त्कर्षणका कथन विषे परमाणुनिकी अपेक्षा घटता क्रम लीएं जे निषेक तिनकी औसी Δ संदृष्टि

करि तहां अपकर्षणविषै जघन्य अतिस्थापन जघन्य निक्षेपकी संहृष्टविषै तौ जघन्य अ-
तिस्थापन अर जघन्य निक्षेप अर ग्रहया हूवा निषेक इनका विभागके अर्थि औसी-

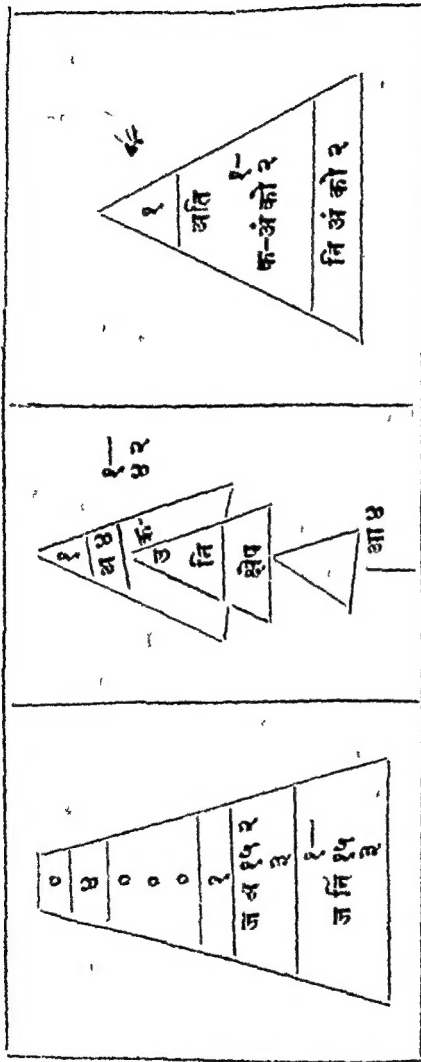


इह
ग

वीचिमैं लीककरि तहां आवलीकी संहनानी इहां सोलह तामैं एक घटाएं पंद्रह ताका
त्रिभाग एक अधिक प्रमाण नीचले निषेक जघन्य निक्षेप हैं। अर तामैं पंद्रहका दोयत्रिभाग
मात्र वीचिके निषेक जघन्य अतिस्थापन अर ताके ऊपरि ग्रहया हूवा निषेक एक लिखना
अर ताके ऊपरि अपकर्षणके अन्य भेदनिके अर्थि विंदी लिखनी। बहुरि उत्कृष्ट निक्षेप
अतिस्थापनकी संहृष्टविषै नीचे तौ आबाधावली अर ऊपरि उत्कृष्ट निक्षेप ताके ऊपरि
उत्कृष्ट अतिस्थापन, ता ऊपरि ग्रहया हूवा अंतका निषेक स्थापना। इहां आबाधाविषै
निषेक रचना नाही है तौ ऊभी लकीर ही करनी। अर अतिस्थापन ग्रहय, निषेकका वि-
भागके अर्थि निषेक रचनाके वीचिमैं लकीर करनी तहां आवलीकी संहनानी च्यारिका
अंक उत्कृष्ट निक्षेपविषै कर्म स्थितिकी संहनानी औसी (क) ताके आगे धाड़नेकी संहनानी

औसी (—) बहुरि ताके आगे हीनका प्रमाण एक समय अधिक दोय आवली ४। २ लिखनी
बहुरि ग्रहया हूवा निषेक एक लिखना। बहुरि व्याघातविषै अतिस्थापन निक्षेप ताकी
रचनाविषै तहां निक्षेप अतिस्थापन ग्रहया हूवा निषेकका विभागके अर्थि वीचिमैं लीककरि
तहां निक्षेपका प्रमाण अंतः कोटाकोटि (अं को २) अतिस्थापनका प्रमाण कर्म स्थिति (क)

मि घटावना (—) एक समय अधिक अंतः कोटाकोटि अं को २ अर ग्रह्या हुवा अंत निषेक एक औसैं कीएं अपकर्षणविषै औसी संहृष्टि रचना हो है—



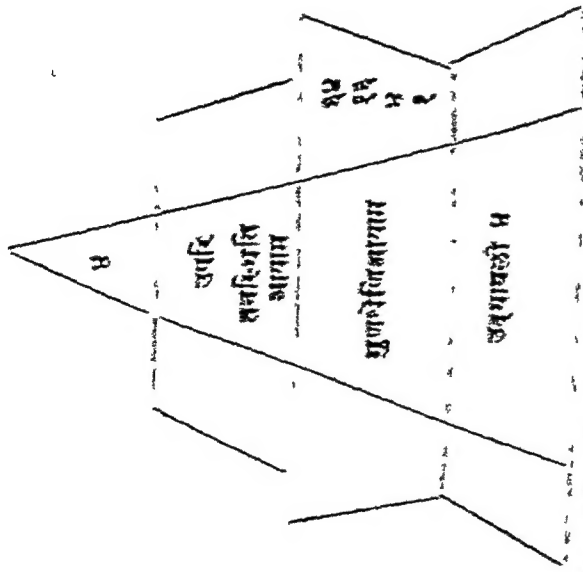
इहां ग्रह्या हुवा निषेकका द्रव्यग्रहि निषेकरूप निषेकनिविषै दीजिए है । अतिस्थापनरूप निषेकनिविषै न दीजिए है औसा जानना । बहुरि उत्कर्षण कथनविषै पूर्व सत्तारूप निषेकका द्रव्य नवीन बंध्या समयप्रबद्धका निषेकनिविषै दीजिए है तातैं पूर्व सत्तारूप निषेकनिकी रचनाकरि ताकें आगैं द्रव्य नवीन बंध्या सो समयप्रबद्ध ताकी नीचैं तौ आबाधाकी अर ऊपरि निषेकनिकी संहृष्टि लिखनी । तहां तौ पूर्व सत्ताका निषेकका ग्रहण कीया ताकें अर नवीन बंध्या समयप्रबद्धकें संबंध मिलावनेके अर्थि दोऊनिकौ अंतरालविषै लीककरि मिलाय देने । बहुरि नवीन समयप्रबद्धविषै अतिस्थापन निषेकका विभाग करनेके अर्थि बीचमें लीक करनी । तहां पूर्व सत्ताका अन्त

निषेकका उत्कर्षण होते तहां जघन्य रचना हो है । ताका अतिस्थापनविषे आवलीका असंख्यातवां भागकी सहनानी औसी ४ निक्षेपविषे आवलीका असंख्यातवां भागकी सह-

नानी औसी २ बहुरि पूर्व सत्ताका उदयावलीतें ऊपरि जो निषेक ताका उत्कर्षण होते उत्कृष्ट रचना हो है । ताका अतिस्थापनविषे एक समय अधिक आवलीकरि हीन आबाधा

काल औसा आ - ४ । उत्कृष्ट निक्षेपविषे एक समय अर आवलीकरि युक्त जो आबाधा काल तीहिंकरि हीन कर्म स्थितिमात्र काल औसा क - ४ ताके ऊपरि एक समय अधिक

आवलीमात्र अंत निषेकनिविषे न दीजिए हे ते औसे ४ जानने । बहुरि औसा जानना—
जो जघन्यविषे तो पूर्वसत्ताका निषेक ग्रहया सो जिससमय उदय होगा तिस समय आवने योग्य जो नवीन समयप्रबद्ध ताके ऊपरि अतिस्थापनके निषेक अर तिनके ऊपरि निक्षेपरूप निषेक जानने । बहुरि उत्कृष्टविषे पूर्व सत्ताका ग्रहया निषेक वर्तमान समयतें आवली काल पीछें उदय आवने योग्य है । अर एक समय उस निषेकके उदय आवनेका है । अर नवीन समयप्रबद्धकी आबाधाका काल वर्तमान समयतें लगाय है सो तातें एक आवली एक समय घटाएं अतिस्थापन हो है । अर नवीन समय प्रबद्धके प्रथमादि निषेक निक्षेप रूप हो हैं, अन्त विषे न दीजिये है । औसे उत्कर्षणविषे औसी संहति बना हो है—



इहां अपकर्षण कीएं पीछें जो हीन क्रम लीएं निषेक रचना रही ताकी ओसी
संज्ञा करि बहुरि निक्षेपण कीया द्रव्यकी सहनानी दूसरी लकीरकरि रचना करी ।
तहां उदयावली पर्यंत निषेकनिविष हीन क्रम लीएं द्रव्य दीया तातैं हीन क्रम लीएं दूसरी
लीक करी । अर ताके ऊपरि गुणश्रेणि कालविषे असंख्यातगुणा अधिक क्रम लीएं द्रव्य
दीया तातैं अधिक क्रम लीएं दूसरी लीक करी । ताके ऊपरि उपरितन स्थितिविषे हीनक्रम
लीएं द्रव्य दीया तातैं हीनक्रम लीएं दूसरी लीक करी । बहुरि ऊपरि अतिस्थापनावलीविषे
द्रव्य दीया ही नाही तातैं दूसरी लीक न करी । बहुरि इहां उदयावलीका अंत निषेकविषे
दीया द्रव्यतैं गुणश्रेणिका प्रथम निषेकविषे दीया द्रव्य बहुत है । अर गुणश्रेणिका अन्त-

विषे दीया द्रव्यतै उपरितन स्थितिका प्रथम निषेकविषे दीया द्रव्य स्तोक है । तातै दीया द्रव्यका हीनाधिक जाननेके अर्थि संकोच विस्ताररूप रचना करी है । अैसे ही आगे भी रचना औसी आवै तहां औसा अर्थ समझ लेना । बारंबार लिखनेमें विस्तार होइ तातै नाही लिखौंगा । बहुरि इन उदयावली आदिविषे दीया द्रव्यका वा तिनके निषेकनिविषे दीया द्रव्यका प्रमाणकी संहति गोमटसारका संहति अधिकारविषे जो गुणस्थानाधिकार है ताविषे लिखी है तैसे जाननी । बहुरि गुणश्रीनिविषे दीया द्रव्यका अंकसंहति अपेक्षा पिब्यासीका भाग देह क्रमतै एक च्यारि सोलह चौंसठिकरि गुणै प्रथमादि निषेक हो है तातै गुणश्रीनिविषे एक आदि अंक लिखे हैं । आवलीकी सहनानी च्यारिका अंक है तातै उदयावली अतिस्थापनावलीविषे च्यारिका अंक लिख्या है अैसे गुणश्रीनि रचना जाननी । बहुरि स्थितिकांडकघातका व्याख्यानविषे कोई जीवकै जघन्य स्थिति संख्यात पत्यमात्र औसी प ७ बहुरि कोई जीवकै तातै संख्यातगुणी उत्कृष्ट स्थिति औसी प ७ उत्कृष्टमें जघन्य घटावनेके अर्थि आगिला संख्यातमें एक घटाएं अर सर्वमें एक अधिक कीएं नाना

जीवनिके सर्व स्थितिभेद औसे प ७ बहुरि याके संख्यातवे भागमात्र नाना जीवनिकै

स्थिति कांडकभेद औसे प ७ इहां स्थितिकांडक भेद प्रमाणराशि स्थितिभेद फलराशि

इच्छाराशि एक कीएं संख्यात स्थिति भेदनिविषे एक कांडक भेद आवै है ताकी रचना औसी—

पृष्ठ ९ (क) में देखो

इहां पूर्वे सचरूप क्रम हीन प्रमाण लीं निषेकानि की औसी Δ संदृष्टिकरि तहां स्थितिकांडकविषे उपरले निषेक नष्ट कीए अर अवशेष नीचले निषेक राखे तिनका विभागके अर्थी बीचिमें लीक कीए औसी Δ संदृष्टि भई। बहुरि कैसा स्थितिसत्त्वविषे

कैसा स्थितिकांडकायाम संभवै? ताके जाननेके अर्थी उपरि तौ कांडककरि घटाए निषेकानि का प्रमाण लिख्या अर नीचें जो स्थिति सत्त्व या ताका प्रमाण लिख्या। तहां पहलें अंक संदृष्टिकरि सात आठ नव समय स्थिति विषे स्थितिकांडकायाम एक समय प्रमाण है। अर दश ग्यारह बारह समय स्थिति सत्त्वविषे स्थितिकांडकायाम दोय समय प्रमाण है। औसैं ही अंत पर्यंत जानना। बहुरि अर्थ संदृष्टिकरि संख्यातपत्यमात्र जघन्य स्थिति अंतः कोटकोटी सागर के संख्यातवे भागमात्र ताकी संदृष्टि औसी अं को २ ताविषे अर यातें एक समय अधिक

स्थिति सत्त्वविषे स्थितिकांडकायाम पत्यके संख्यातवे भागमात्र है ताकी संदृष्टि औसी प १

बहुरि बीचिमें एक एक समय अधिक स्थिति सत्त्वविषे तावन्मात्र स्थितिकांडकायाम जाननेके अर्थी विंदीकी संदृष्टिकरि जघन्यतें संख्यात समय अधिक स्थिति औसी १, ^{अं को २} ताभैं अर

यातें एक समय अधिक स्थिति औसी १, ^{१-१-१} ताभैं जघन्यतें एक समय अधिक स्थिति कांडका-
^{अं को २}

याम औसा होहै प बहुरि बीचिमें स्थिति सत्त्वके स्थिति कांडकके बहुत मध्यभेद जाननेके अर्थी १

विंदीकी संहटिकरि संख्यात घाटि अंतः कोटाकोटि सागर घाटिमात्र स्थिति औसी अं को २-७ तातैं एक समय अधिक औसी अं को २-७ तामें एक समय घाटि पृथक्त्व सागर प्रमाण स्थितिकां-
 १-८
 डकायाम औसा-सा । ७ । ८ इहां पृथक्त्वकी सहनानी सात वा आठ जाननी । बहुरि वीचिमें एक एक समय अधिक स्थिति सत्वविषे तावन्मात्र स्थिति कांडकायाम जाननेके अर्थि विंदीनिकी सहनानी करि एक घाटि अंतः कोटाकोटि सागर औसा-अं को २ संपूर्ण अंतः कोटाकोटि औसा अं को २ तामें स्थिति कांडकायाम पृथक्त्व सागर प्रमाण औसा सा ७ । ८ बहुरि अपूर्व करणकी आदिविषे स्थिति सत्व अंतः कोटाकोटि, स्थितिबंध तातैं असंख्यातेवे भागमात्र है । तिनकी संहटि औसी-

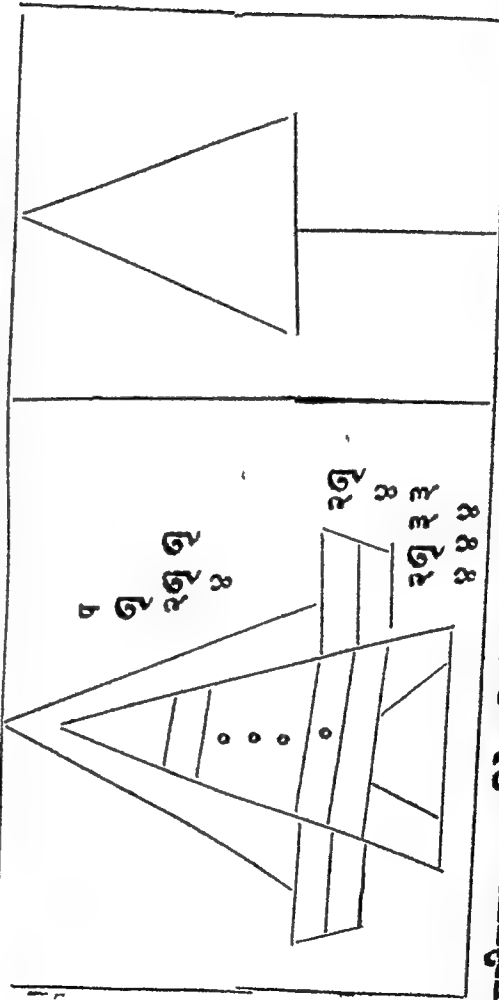
अं को २ ।	अं को २	अं को २	अं को २
४	४	४	४

इहां संख्यातकी संहटि व्या्रिका अंक है । औसैं स्थितिकांडकविधानविषे संहटि जाननी । बहुरि अनुभाग कांडकका व्याख्यानविषे जघन्य वर्णकाकौ स्पर्धक शलाका औसी ९ अर नानागुणहानि औसी । ना । ताकरि गुणैं अंत गुणहानिकी प्रथम वर्गणा होइ । तामें अंक संहटि अपेक्षा तीन अधिक कीएं अंत गुणहानिकी अंतवर्गणा संबंधी उरुष्ट अनु-
 ३-१-८
 भाग औसा व । ९ । ना । ताका अनंत बहुभागमात्र प्रथम कांडक औसा व । ९ । ना ख बहुरि अवशेष एक भागका अनंत बहुभागमात्र द्वितीय कांडक औसा व ९ ना ख औसैं अंत

कांडक पर्यंत क्रम जानना । बहुरि एक गुणहानिके स्पर्धक संख्याकी संहति ऐसी ९ तातें क्रमतें अनंतगुणे वीचिके अतिस्थापनरूप स्पर्धक अर नीचेके निक्षेपरूप स्पर्धक अर ऊपरि के अनुभागकांडकायाम रूप स्पर्धक तिनकी संहति ऐसी जाननी-

स्पर्धक	अतिस्थापन	निक्षेप	अनुभागकांडक
६	६	६	६
६	६	६	६

हैं असें अपूर्व करणविषे भए कार्यनिकी संहति कही ।
बहुरि अनिवृत्ति करणविषे अंतर करण होहै तहां रचना ऐसी-



हहां कमहीनरूप सत्व निषकनिकी संहतिकरि नीचें उदयावलीकी ऊपरि गुणश्रोणि आया-
मकी ऊपरि उपरितन स्थितिकी संहति पूर्ववत्करि गुणश्रोणि आयामविषे गुणश्रोणिशर्षिकों
जुदा दिखावनेके आर्थे वीचिमें लीक करी । अर उपरितन स्थितिविषे अंतरायाम अर

नाम	विध्यात्व	मिश्र	सम्यक्त्वमोहनी
निपेक			
द्रव्य	स ३ १२-गु ७ ख १७ गु ३	स ३ १२-३ ७ ख १७ गु	स ३ १२-१ ७ ख १७ गु
अनुभाग	३- वा ९ ना	३- व ९ ना ख	३- व ९ ना ख

इहाँ ऊपरि मिथ्यात्व मिश्र सम्यक्त्व प्रकृतिके निपेक क्रमहीन रूप हैं तिनकी संहति करि नीचै तिनके द्रव्यका प्रमाण लिख्या । तहां किंचिदून द्वयर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्धमात्र सर्व कर्म परमाणूनि का प्रमाण असा स ३ १२ - ताकौ सातका भाग दीएं मोहका द्रव्य होइ । ताकौ अनंतका भाग दीएं सर्वदाती द्रव्य होइ ताकौ सतरहका भाग दीएं दर्शन मोहका द्रव्य असा स ३ १२ - होइ । याकौ गुणसंक्रम भागहारका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र मि ७।ख। १७

थ्यात्वका द्रव्य होइ । बहुरि तिस एक भागविषै एक अधिक असंख्यात था ताविषै एक रूप जुदा स्थापि अवशेष मिश्र मोहका द्रव्य होइ अर जुदा स्थाप्या एक रूपमात्र सम्यक्त्व मोहका द्रव्य होइ । इहां सहाष्टिविषै गुणकार भागहार कैसें भए ? ताका मौकों नीकें ज्ञान न भया है, विशेषज्ञा-नी जानियो ।

बहुरि ताके नीचें अनुभागका प्रमाण लिहया सो जघन्य वर्गणाकौ एक गुणहानिविषे स्पर्धक संख्याकी संहति नवका अंक ताकरि अर नाना गुणहानिकरि गुणें तामें तीन अधिक करीए उत्कृष्टरूप मिथ्यात्वका अनुभाग औसा— व। १। ना। ताकौ अनंतका भाग दीए मिश्रका, ताकौ अनंतका भाग दीए सम्यक्त्व मोहका अनुभाग हो है। बहुरि गुण संक्रम कालविषे मिथ्यात्वका द्रव्य मिश्रमोह सम्यक्त्व मोहरूप परिणमै है ताकी संहति औसी—

गुण १५ (क) में देखो।

इहां गुणकार संक्रमका प्रथम समयविषे पूर्वोक्त प्रकार मिथ्यात्व द्रव्य औसा स ३ १२—

७ क १७

याकौ गुण संक्रमका भाग दीए सम्यक्त्व मोहरूप परिणम्या द्रव्य हो है। तातें असंख्यात गुणा मिश्ररूप परिणम्या द्रव्य है। तातें द्वितीय समयविषे सम्यक्त्वरूप परिणम्या द्रव्य असंख्यात गुणा है। सो इहां गुणकार रूप दोयवार असंख्यातकी सहनानी करी। औसैं ही चतुर्थ समय पर्यंत रचना जाननी। तहां चौथे समय असंख्यातके अगैं छहका अर सातका अंक है सो छहवार वा सातवार असंख्यात जानना। बहुरि वीचि मध्य समयनिकी रचना की सहनानी विंदी जाननी बहुरि अंत समयविषे प्रथम समय सम्यक्त्व रूप परिणम्या द्रव्यकौ दोय घाटि अंतमुहूर्तका दूणाकरि तामें दोय वधताकरि गुणित जो असंख्यात ताकरि गुणें सम्यक्त्व प्रकृति रूप परिणम्या द्रव्यकी संहति है। अर तिसहीकौ एक घाटि अंतमुहूर्त दूणा एक अधिक ताकरि गुणित जो असंख्यात ताकरि गुणें मिश्रमोहरूप परिणम्या द्रव्यकी संहति हो है। अर तहां सम्यक्त्व मोहनीतें मिश्रमोहनीविषे, मिश्रमोहनीतें सम्यक्त्व मोह-

विषे गुणकार अपेक्षा गमन कल्पित सर्पकी चालवत् रचना करी है। बहुरि कालका अल्प बहु-
त्वविषे संहष्टि सुगम है। तहां प्रथम पद अंतर्मुहूर्तमात्र औसा २ १ ताके आगे संख्यातकी
सहनानी न्यारिकरि जहां संख्यातवां भागमात्र अधिक होइ तहां पूर्व राशिकों न्यारिका
भाग पांचका गुणकार जानना। जहां संख्यातगुणा होइ तहां पूर्व राशिके आगे न्यारि लि-
खना। बहुरि ग्यारहौं वारहों पद समय घाटि दोय आवलीमात्र अधिक है तहां ऊपरि
औसी-४। २ जाननी। इहां आवलीकी संहष्टि न्यारिका अंक है। बहुरि चौदहवां पदविषे
अपवर्तन कीएं संहष्टि औसी २ १ यातें संख्यातगुणा पंद्रहवां पदविषे औसी २ १ १ यामें
औसा २ १ अर औसा - २ १ मिलाएं सोलहवां पदविषे औसी २ १ १। ४ यातें आगे पू-
र्वोक्त प्रकार। बहुरि वीसवां पदविषे पत्यका संख्यातवां भागकी औसी- ५ इकईसवां
पदविषे पृथक्त्व सागरकी औसी सा। ७। ८ वाईसवां आदि पदनिविषे सागर अंतः कोटा-
कोटीकों तीन दोय एकवार संख्यातका भाग दीएं पचीसवां पदविषे सागर अंतः कोटाकोटि
की संहष्टि जाननी। औसैं इनकी औसी संहष्टि हो है-

पृष्ठ १६ (क) में देखो।

बहुरि प्रथमोपशम सम्यक्त्व काल समाप्त भाएं उदय योग्य प्रकृतिका द्रव्य अपक-
र्षणकरि उदयावली अंतरायाम द्वितीय स्थितिविषे निक्षेपण करे है। अनुदय प्रकृतिका
उदयावली विना अन्यत्र निक्षेपण करे है। तहां दर्शनमोहके द्रव्यकों गुणसंक्रमका भाग
दीएं उदय योग्य सम्यक्त्व प्रकृतिका द्रव्य औसा स ७ १२- याकों अपकर्षण भागहारकी
७। ख। १७। गु

संहति प्राकृत आदि अक्षर अपेक्षा औसी (ओ) ताका भाग दीएं अपकृष्ट द्रव्य औसा स ३। १२ -
 याकौ असंख्यात लोक ३ का भाग दीएं उदयावली विषे दीया द्रव्य औसा - स ३। १२ -
 याका बहुभाग औसा स ३। १२ - ३ ^{१०} इहां गुणकार विषे एक घाटिकौ न गिणें औसा
 ७। ख। १७। गु। ओ ३ ३
 स ३। १२ - बहु रि इस अपकर्षण भागहारका भाग दीएं तहां एक भागमात्र ग्रहण कीएं
 ७। ख। १७। गु। ओ
 जो द्रव्य बहुभागमात्र अवशेष रह्या सो औसा स ३। १२ - ओ इहां गुणकार विषे एक
 घाटिकौ न गिणें औसा स ३। १२ - याकौ द्व्यर्ध गुण हानिकी संहति औसी (१२) ताका भाग दीएं
 ७। ख। १७। गु
 द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेकका द्रव्य औसा स ३। १२ - भया याकौ अंतरायाम अं-
 तर्मुहूर्तमात्र ताकरि गुणें अंतरायामका समपट्टिका द्रव्य औसा स ३। १२ - २ ७
 ७। ख। १७। गु। १२
 यामें चयधन मिलावनेके अर्थ साधिककी औसी (१) संहति ऊपरि कीएं इतना स। ३। १२ - २ ७
 ७। ख। १७। गु। १२
 द्रव्य भया। ताहि तिस अपकर्षण कीया द्रव्यतैं ग्रहि अंतरायाम विषे दीएं अंतरायामके अ-
 भाव कीए थे निषेक तिनका सदभाव हो हे। इसकौ घटाएं जो अपकृष्ट द्रव्य किंचित् ऊन
 भया सो औसा स ३। १२ - याकौ द्व्यर्ध गुणहानिका भाग दीएं प्रथम निषेक ताकौ अंतरायाम
 ७। ख। १७। गु। ओ

करि गुणै समपट्टिका द्रव्य ताको साधिक कीए इतना द्रव्य स १२ — २१ अंतरा-
यामविषै और दीया अवशेष अपकृष्ट द्रव्य औसा स १२ —
विषै अतिस्थापनावली छोडि क्रम हीन करि औसै उदय योग्य प्रकृतिविषै द्रव्य देनेका वि-
धान है। बहुरि उदय अयोग्यका उदयावलीतें बाह्य अंतरायाम अर द्वितीय स्थितिविषै ही
द्रव्य दीजिए है।

इति प्रथमोपशम सम्यक्त्वाधिकारसंहति समाप्त

अब क्षायिक सम्यक्त्वाधिकारविषै संहति लिखिए है—तहां प्रथम अनंतानुबंधीका
विसंयोजन है। तहां गुणश्रेणी आदिककी संहति पूर्ववत् जानना। अर तहां च्यारि पर्व-
निकी वा तहां स्थिति कांडक प्रमाणकी संहति औसी—

पर्वनिविषै स्थिति	सातमये ७ सागर १०००	प	दूरापकृष्टि	उच्छिष्टा बली
	१००		५।५।५।५	४
	५०			
	२५			
कांडकायाम	५	५	१०	
	३	५	५।५।५।५	३

इहां स्थितिविषै पृथक्त्व लक्ष सागरकी वा मध्यविषै सहस्र आदि सागरकी अर पत्य
की अर दूरापकृष्टि विषै च्यारि बार संख्यातकरि भाजितकी अर उच्छिष्टावलीकी संहति
प्रथमादि पर्वनिविषै जानना। बहुरि तिनके बीच स्थिति कांडकायामविषै पत्यका संख्यातवां

भागकी पत्यका असंख्यात बहुभागकी दुरापकृष्टिका असंख्यात बहुभागकी सहाष्टि जानना
बहुरि सर्व कर्मके द्रव्यको सात अर अनंत अर सतरहका भाग दीए अनंतानुबंधी क्रोध
द्रव्य ऐसा स ३१२ - ताको अपकर्षण भागहारका भाग दीए जो अपकृष्ट द्रव्य

७।ख।१७

भया ताको उदयावली आदिविषे निक्षेपण करै है। अर तिसहीको संख्यातका भाग दीए
जो कांडक द्रव्य ऐसा स ३१२ - ताको गुण संक्रमका भाग दीए प्रथम फालि ऐसा-

७।ख।१७।ग

स ३१२ - यातै क्रमतै असंख्यात गुणा द्वितीयादि फालि तिनको बारह कषाय नव
७।ख।१७।ग।गु

नोकषाय तिनिरूप समय समय परिनिमावै है। उच्छिष्टावली मात्र द्रव्य रहै ताको एक एक
निषेककरि तिनिरूप परिनिमावै है। औसै अनंतानुबंधीका विसंयोजन करि दर्शन मोहकी
क्षपण प्रारंभै है। तहां अन्य क्रिया होइ जहां असंख्यात समय प्रवद्धकी उदरिणा हो है।
तहां सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्य ऐसा स ३१२ - याको अपकर्षण भागहारका भाग दीए

७।ख।१७।ग

ऐसा स ३१२ - याको पत्यका असंख्यातवां भागका भाग दीए बहुभाग उपरितन स्थिति
७।ख।१७।ग।को

विषे दीया शेष एक भागका पत्यको असंख्यातवां भागका भाग दीए बहुभाग गुणश्रेणि
विषे एकभाग उदयावलीविषे दीया तहां सहाष्टि औसी-

उपरिन्न स्थिति	१- स ३ १२ - प ७। ख। १७। गु। ओ। प। ३
गुणार्थणी आयाप	१- स ३ १२ - प। प ७। ख। १७। गु। ओ। प ३ प ३
उदयावली	१- स ३। १२ - प १ ७। ख। गु। ओ। प ३ प ३ ३

इहाँ बहुभागविषे एक घाटि भागहारका गुणकार संपूर्ण भागहारका भाग जानना।
बहुरि सम्यक्त्वमोहनीकी अष्ट वर्षमात्र स्थिति जिससमय हो है तिस समय विषे
क्रिया करे है।

मिश्र सम्यक्त्वमोहका अंतफालिका द्रव्य किंचिदून द्वयर्ध गुणहानिमात्र है। कैसे !

मिथ्यात्वका द्रव्य औसा-स ३ १२ - गु ताविषे उच्छिष्टावलीविना अन्य द्रव्यको मिश्रमो-

१-
७। ख। १७। गु ३
१-
३

हनीविषे निक्षेपण कीएं मिश्रमोहका द्रव्य औसा स ३ १२ - इहाँ दर्शन मोहका द्रव्यके
७। ख। १७

आगे किंचिदूनकी सहनानी ऐसी (—) जाननी। बहुरि याका असंख्यातवां भागमात्र इतर कांडक द्रव्य सम्यक मोहनीविषै संक्रमण भए अवशेष बहुभागमात्र मिश्रमोहका चरम कांड-

ककी चरम फालिका द्रव्य ऐसा स ३। १२ — ३ बहुरि सम्यक्त्व मोहका द्रव्य ऐसा-
७।ख। १७।ग। ३

स ३ १२ — इहां भी इतर कांडक द्रव्य याका असंख्यातवां भागमात्र नीचले निषेकनिविषै
७।ख। १७।ग। ३
निक्षेपण कीएं अवशेष बहुभागमात्र सम्यक्त्व प्रकृति की चरमफालिका द्रव्य ऐसा-

स ३। १२ — ३ इनि दोऊनिकों मिलाएं किंचिदून द्वयर्थ गुणहानि गुणित समय प्रबद्ध प्रमाण
७।ख। १७।ग। ३

मिश्रादिककी चरम फालिका द्रव्य किंचिदून दर्शन मोहका द्रव्यमात्र ऐसा- स ३। १२ —
७।ख। १७।ग। ३

याकौ पत्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भाग उदयादि गुणश्रेणी आयाम-
विषै असंख्यात गुणा क्रम लीएं देना। तहां तिस द्रव्यकों अंक संहति अपेक्षा पिब्यासीका
भाग देइ पहला निषेकविषै व्यारि अर सोलहका, अंत निषेकविषै चौसठिका गुणकार कीएं
ऐसी संहति-

अंतनिषेक	स ३। १२ — ६४ ७।ख। १७।ग। ८५
मध्यनिषेक	० १६ ४ ० ४
प्रथमनिषेक	स ३। १२ — १ ७।ख। १७।ग। ८५

बहुरि अवशेष बहुभागमात्र द्रव्य असा स ३। १२-प इहां गुणकारविषै एक घाटिकों न गिणें

३

७। ३७। १७

३

असा स ३। १२-याकों गुणश्रेणि आयाम मिलावनेके अर्थि अष्टवर्षनिविषै किंचिदून कीएं गच्छ

७। ३७। १७

असा व ८ - ताका भाग दीएं मध्यधन असा स ३ १२ - याकों एक घाटि गच्छका आधा

१७७। ३७। १७। ३८

प्रमाणकरि हीन दोगुणहानि असा १६ - व ८ - ताका भाग दीएं चयका प्रमाण असा-

स ३ १२ -

१७ याकों दोगुणहानि असा (१६) ताकरि गुणै प्रथम निषेक एक

७। ३७। ३८ - १६ - व ८ -

३

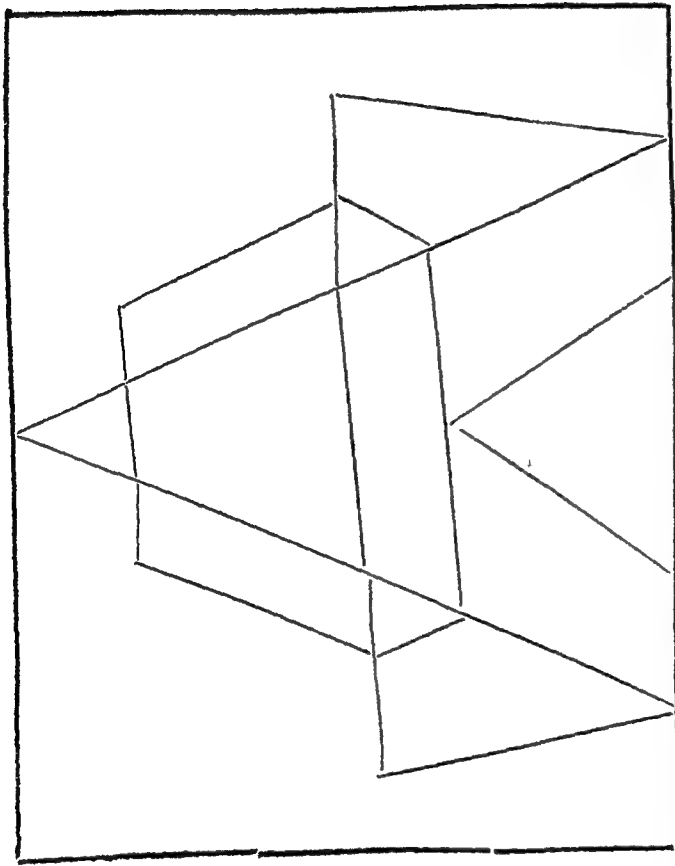
घाटि दोगुणहानि असा १६ - १ ताकरि गुणै द्वितीय निषेक इत्यादि क्रमतें एक घाटि ग-

च्छकरि हीन दोगुणहानि असा १६ - व ८ - ताकरि गुणै अंत निषेकविषै दीया द्रव्य हे

तिनकी संदृष्टि असी-

अतन्त्रिक	म ३ १२-१६-१८- ७ ख १७ व ८-१६-८-२
मध्य	० ० ०
चतुर्थ	म ३ १२-१६-३ १ ७ ख १७ व ८-१६-८-२
तृतीय	म ३ १२-१६-२ १ ७ ख १७ व ८-१६-८-२
द्वितीय	म ३ १२-१६-१ १ ७ ख १७ व ८-१६-८-२
प्रथमनिक	म ३ १२-१६ ७ ख १७ व ८-१६-८-२

बहुरि इहां गुणश्रेणि आयामका वा उपरितन स्थितिकी संक्षिप्ति ऐसी



इहां कपहीन सत्तारूप निषेकनिकी रचनाकरि पूर्वे जो नीचें उदयावलीविषे क्रमहीन रूप ताके ऊपरि गुणश्रेणि आयामविषे क्रम अधिक रूप निक्षेपण कीएं तिनकी रचनाकरि बहुरि तहां उदय रूप प्रथम समयतें लगाय गुणश्रेणि आयामविषे क्रम अधिक रूप अर ताके उपरितन स्थितिबिषे अतिस्थापनावली छोडि क्रम हीन रूप द्रव्य निक्षेपण किया तिनके अनुसारि लकीरनिकी संहति क्रम हीन रूप वा अधिक रूप करी है । बहुरि इमही समय-विषे अनुभागका अनुसमयापवर्तन हो है । तहां पूर्वे अनुभाग एक गुणहानिविषे स्पर्धक

शलाकाको नाना गुणहानिकरि गुणें औसा (९ ना) ताको अनंतका भाग दीएं द्वितीयावलीके
 प्रथम निषेकका अनुभाग औसा (९ ना) इहां अवशेष बहुभाग नष्ट कीएं ते औसैं ९ ना ख
 बहुरि ताको अनंतका भाग दीएं उदयावलीके अंत निषेकका अनुभाग औसा ९ ना। इहां नष्ट
 कीएं बहुभाग औसा ९ ना। ख ख बहुरि ताको अनंतका भाग दीएं उदयावलीके प्रथम
 निषेकका अनुभाग औसा ९ ना। इहां अवशेष बहुभाग नष्ट कीएं ते औसैं ९ ना ख ख ख
 औसैं ही अनंत गुणहानि लीएं समय समय अनुभागापवर्तनका विधान जानना।
 बहुरि जिस समयविषे सम्यक्त्व मोहनीकी स्थिति अष्ट वर्ष प्रमाण हो है तिस समय
 तें पूर्व समयविषे विधान हो है ताकी संदृष्टि कहिए है-सम्यक्त्व प्रकृतिका द्रव्य औसा-
 स ४। १२- इहां गुणसंक्रम विधानतें असंख्यात गुणा द्रव्य भया है। परंतु सामान्यतें इतना
 लिख्या सो नाना गुणहानिविषे वर्ते है। तहां तिस द्रव्यको द्रव्य गुणहानि (१२) का भाग देह
 ताको दो गुणहानि (१६) का भाग दीएं चय होह। ताको दो गुणहानिकरि गुणें उदयावलीका
 प्रथम निषेक होह। बहुरि दो गुणहानिमात्र गुणकारविषे क्रमतें एक एक घटाएं मध्य निषेक
 होह। एक घाटि आवली औसी १६ - ४ घटाएं ताका अंत निषेक होह। बहुरि ताहीमें
 आवली घटाएं गुणश्रेणिका आदि निषेक होह। बहुरि तैसैं ही मध्य निषेक होह। ताहीमें

एक घाटि अंतर्मुहूर्त औसा १६ - १२ घटाएं ताका अंत निषेक होइ । वहरि ताहीमें
अंतर्मुहूर्त घटाएं उपरितन स्थितिका आदि निषेक होइ । वहरि तैसें ही मध्य निषेक होइ ।
तिसहीविषे एक घाटि किंचिदून आठवर्ष औसैं १६ - व ८ - घटाएं अंत निषेक होइ औसैं
तो पूर्व सत्व द्रव्य पाइए ।

बहरि इहां अपकर्षणकरि दीया द्रव्य पूर्वोक्त सम्यक्त्व प्रकृतिके द्रव्यको अपकर्षण
भागहारके असंख्यातवां भागका भाग दीएं औसा स ३ । १२ - याको पल्यका असंख्यातवां
७ । ख । १७ । गु । आ

३

भागका भाग दीएं बहुभागमात्र औसैं स ३ १२ - प उपरितन स्थिति विषे दीया द्रव्य होहे ।

१८

३

७ । ख । १७ । गु । ओ प

३ ३

तहां गुणकारविषे एक हीनको न गिणें अपवर्तन कीएं औसा स ३ १२ - याको व्योढ

७ । ख । १७ । गु । ओ

३

गुणहानि अर दो गुणहानिका भाग दीएं चय औसा स ३ । १२ -

७ । ख । १७ । गु । ओ । १२ । १६

३

याको दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम निषेक अर दो गुणहानि गुणकार विषे क्रमते एक
एक घटाएं मध्य निषेक होइ । एक घाटि किंचिदून आठ वर्ष घटाएं अंत निषेक हो हे । व-
हरि एक भाग रखा सो औसा स ३ । १२ - इहां पल्यका असंख्यातवां भागका

७ । ख । १७ । गु । ओ प

३ ३

१-

भाग दीपं बहुभाग ऐसा स ७ १२ - प

गुणश्रोणिविषै दीया द्रव्य इहां भी गुणकारविषै

७।ख।१७।गु।ओपप

३३३

एक घाटिकौ न गिणि अपवर्तन कीपं ऐसा स ७।१२ - याकौ अंक संहष्टि अपेक्षा पि-

७।ख।१७।गु।ओप

३३

व्यासीका भाग देइ एक करि गुणें प्रथम निषेक, व्यारि सोलहकरि गुणें मध्य निषेक, चौस-
ठिकरि गुणें अंत निषेक हो है। बहुरि अवशेष रखा एक भाग ऐसा स ७ १२ -

७।ख।१७।गु।ओपप

३३३

सो उदयावलीविषै देना सो याकौ आवली अर एक घाटि आवलीका आधाकरि हीन दोगुण-

१-

हानि ऐसा ४।१६ - ४ ताका भाग दीपं चय होइ। याकौ दोगुणहानि करि गुणें प्रथम
निषेक अर इस गुणकारविषै एक एक घटापं मध्य निषेक होइ। एक घाटि आवली घटापं
अंत निषेक होइ असै दीया द्रव्य जानना। इनकी संहष्टि ऐसी-

	पूर्वसप्त द्रव्य	वीया द्रव्य
उपवित्तनस्थिति	<p>स ३ १२-१६-४८- ७ ख १७ गु १२ १६</p> <p>० ० ०</p>	<p>१८ स ३ १२-१६-४८- ७ ख १७ गु ओ १२ १६</p> <p>० ० ०</p>
	<p>स ३ १२-१६-२७ ७ ख १७ गु १२ १६</p> <p>० ० ०</p>	<p>१६ स ३ १२-१६- ७ ख १७ गु ओ १२ १६</p> <p>० ० ०</p>
गुणश्रेणि	<p>१८ स ३ १२-१६-२७ ७ ख १७ गु १२ १६</p> <p>० ० ०</p>	<p>१८ स ३ १२-६४ ७ ख १७ गु ओ ५ ८५</p> <p>० ० ०</p>
	<p>स ३ १२-१६-४ ७ ख १७ गु १२ १६</p> <p>० ० ०</p>	<p>१८ स ३ १२-१ ७ ख १७ गु ओ ५ ८५</p> <p>० ० ०</p>
उदयावली	<p>१८ स ३ १२-१६-४ ७ ख १७ गु १२ १६</p> <p>० ० ०</p>	<p>१८ स ३ १२-१६-४ ७ ख १७ गु ओ ५ ४ १६-४</p> <p>० ० ०</p>
	<p>स ३ १२-१६ ७ ख १७ गु १२ १६</p> <p>० ० ०</p>	<p>१८ स ३ १२-१६ ७ ख १७ गु ओ ५ ४ १६-४</p> <p>० ० ०</p>

बहुरि इन दोऊनिका मिलापं दृश्यमान द्रव्य हो है । तहां उदयावलीका तो सत्त्व द्रव्य बहुत है अर दीया द्रव्य स्लोक है । तातें तहां सत्त्व द्रव्यका संहष्टिके ऊपरि औसी (१) संहष्टि कीपं दृश्यमान द्रव्यकी संहष्टि हो है । बहुरि गुणश्रेणिविषै दीया द्रव्य बहुत है । सत्त्व द्रव्य स्लोक है तातें दीया द्रव्यकी संहष्टि ऊपरि अधिककी औसी (१) संहष्टि कीपं दृश्यमान द्रव्यकी संहष्टि हो है । बहुरि उपरितन स्थितिका प्रथम निषेकविषै दोगुण हानिमात्र गुणकारविषै अंतर्मुहूर्त घटाया था सो अंतर्मुहूर्तमात्र घटाएं जे चय तिनिरूप ऋण औसा स ८ १२ - २ ७ अर इस प्रथम निषेकविषै दीया द्रव्यरूप घन औसा-

७।ख।१७।गु।१२।१६

स ८।१२ - १६ सो इस घनविषै ऋण घटावनेके अर्थि अन्य भागहार समान जानि ७।ख।१७।गु।नो।१२।१६

अपकर्षण भाग हारका असंख्यातर्वा भागरूप भागहारकरि समच्छेद कीएं ऋण द्रव्य औसा स ८।१२ - २ ७ ओ अव हहां अन्य गुणकार भागहार समान जानि औसा २ ७ ओ। ७

७।ख।१७।गु।नो।१२।१६

७

गुणकारको परस्पर गुणें जो असंख्यात भया ताको घन द्रव्यका दोगुणहानिविषै घटाएं घन द्रव्य औसा भया स ८ १२ - १६ - ७ अव हहां उपरितन स्थितिका प्रथम निषेकविषै ७।ख।१७।गु।नो।१२।१६

स

जो अंतर्मुहूर्तमात्र चय घटाए थे ते तो जुदे काढि घन द्रव्यविषै घटाए दीएं तब दो गुणहानि

यामविषै वा उपरितन स्थितिविषै दीया द्रव्यका संदृष्टि पूर्वै कहि आए ही हैं। बहुरि ताके अनंतरि अष्ट वर्ष स्थिति करणका द्वितीय समय ता विषै सर्व मोहनीके द्रव्यकों अपकर्षण भाग हारका भाग दीएं एक भाग औसा स ३।१२ - १ अपकर्षणकरि ताकों पल्यका असंख्यात ७।ख।१७।गु।ओ

वां भागका भाग देह एक भाग गुणश्रेणि आयामविषै असंख्यात गुणा क्रमकरि अर बहु-भाग उपरितन स्थितिविषै हीन क्रमकरि पूर्वोक्त प्रकार देना। इहां उदयादि अवास्थितगुण श्रेणि आयाम है। तातैं पूर्वै गुणश्रेणि आयामविषै एक समय उपरितन स्थितिका मिलावना तहां उपरितन स्थितिविषै दीया द्रव्यका गुणकारविषै एक घाटिकों न गिणि अपवर्तन कीएं औसा स।३।१२ - ताकों किंचिद्न आठवर्षमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका ७।ख।१७।गु।ओ

आधाकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय धन होइ। ताकों दोगुणहानिकरि गुणै प्रथम निषेक अर दोगुणहानिका गुणकारविषै एक एक घटाएं अंत विषै एक घाटि किंचिद्न आठ वर्ष घटाएं द्वितीयादि निषेक हो है। बहुरि गुणश्रेणिविषै दीया द्रव्यकों अंक संदृष्टि अपेक्षा पिब्यासीका भाग देह एक करि गुणै प्रथम निषेक, ब्यारि सोलहकरि गुणै मध्य निषेक, चौसाठकरि गुणै अंत निषेक ताकी रचना औसी-

बहुरि इसही समयविषै सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्यकौ संख्यातका भाग दीए प्रथम कांडक द्र-
व्य होइ । ताकौ पत्यके अर्धच्छेदकौ दोयवार असंख्यातका भाग दीए अधः प्रवृत्त भाग
हार औसा छे ताका भाग दीए प्रथम फालिका द्रव्य औसा स । ४ । १२ - सो अप-
७ । ख । १७ । ७५ छे
४ ३

कर्षण कीया द्रव्यकै असंख्यातवे भागमात्र है अर देनेका विधान तैसे ही है । तातैं अपक-
र्षणद्रव्यविषै याके मिलावनेकौ अधिककी संहति करि देनी । बहुरि औसैही द्वितीयादि

समयनिविषै रचना करनी । बहुरि प्रथमकांडककी अंत फालिका द्रव्य औसा स । ४ । १२ - ४
७ । ख । १७ । ७५

कैसे ? सो कहिए है—

अंत फालिनिना अन्य फालिनिना द्रव्य कांडक द्रव्यके असंख्यातवै भागमात्र है ।
ताकौ घटाए असंख्यात बहुभागमात्र अंत फालिका द्रव्य हो है । इहां गुणकारविषै एकही-
नकौ न गिणि अपवर्तनकरि बहुरि ताकौ पत्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग
उदयादि अवस्थिति गुणश्रोणि आयामविषै असंख्यात गुणां क्रमकरि बहुभाग उपरितन
स्थितिविषै हीन क्रमकरि देना ताकी पूर्वोक्त प्रकार संहति औसी—

इहां कांडक द्रव्य बहुत है । तातैं याविषैं अपकृष्ट द्रव्यका साधिकपना जानना ।
बहुरि औसैं ही अन्य कांडकनिविषैं रचना जाननी । बहुरि मिश्रद्विककी चरम फालिका
द्रव्य औसा स ७ । १२ - सो यह द्रव्य इसके पतन समयतैं पूर्वसमयविषैं जो गुण संक्रमण

७।स।१७

द्रव्य सहित सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्य औसा स ७ । १२ - ७ तातैं असंख्यात गुणा है बहुरि

७।स।१७

अष्टवर्ष स्थिति करण समयविषैं जो सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्य है तातैं अष्ट वर्ष करणका
द्वितीयादि प्रथम कांडककी द्विचरमफालि पतनसमय पर्यंत तौ अपकर्षण कीया वा फालिका
द्रव्य असंख्यातवै भागमात्र है अर चरम फालि पतन समयविषैं संख्यातवै भागमात्र है
सो पूर्वोक्त भागहारतैं यह संभवै है । बहुरि अष्टवर्ष करण समयविषैं जो उपरितन स्थिति
के प्रथम निषेकका दृश्य द्रव्य औसा स ७ । १२ - १६ - १८ इहां यह गुणश्रेणी शीर्ष

७।स।१७।व ८ - १६ व ८ -

कहिए ताका जो यह द्रव्य सो यातैं पूर्व समयविषैं जो गुणश्रेणि शीर्षका दृश्य द्रव्य औसा
स ७ । १२ - ६४ तातैं असंख्यात गुणा है । बहुरि अष्टवर्ष करणका प्रथम समयके गुण-

७।स।१७।प ८

श्रेणी शीर्ष द्रव्यतैं द्वितीय समयके गुणश्रेणी शीर्षका द्रव्य विशेष अधिक हो है गुणकार
रूप है नाही कैसे ! सो कहिए है -

अष्टवर्ष स्थिति करणका प्रथम समयविषैं गुणश्रेणी शीर्षका दृश्य द्रव्य औसा -

स ७ । १२ - १६ १८ याके द्वितीय समयविषैं आया धन औसा स ७ । १२ - ६४

७।स।१७।व ८ - १६ - व ८ -

७।स।१७।जो।प।८

४

बहुरि अष्टवर्षकी उपरितन स्थितिके द्वितीय निषेकका दृश्य द्रव्य औसास । १२- । १६-१
७ । ख । १७ । व ८- । १६- । व ८-^१

यामें गुणकारमें एक घटाया है सो एक चयमात्र ऋण औसास । ७ । १२-१
७ । ख । १७ । व ८- । १६-व ८-^२

सो जुदा स्यापैं प्रथम समयका गुणश्रेणी शीर्षे द्रव्य अर यहु समान भया । बहुरि द्वितीय
समयविषे जो याविषे द्रव्य दीया सो गुणश्रेणि शीर्षका घन औसास । १२-१६
७ । ख । १७ । व ८- । १६-व ८-^३

यातैं पूर्वोक्त ऋण सो असंख्यात गुणा घाटि है । जातैं तहां दोगुणहानिका गुणकार नाही
है । बहुरि द्वितीय समयका गुणश्रेणिके अंत निषेकका द्रव्य औसास । ७ । १२-१४
७ । ख । १७ । व ८- । १६-व ८-^४

जातैं तहां एक घाटि पत्यका असंख्यातवां भागका गुणकार था अर एक हीनकों न गिणि
अपवर्तन कीया था सो इहां नाही है । औसैं ऋण द्रव्य अर गुण श्रेणिका चरम निषेक द्रव्य
घटावनेकों तिस घन द्रव्यमें किंचित् ऊनकरि बहुरि तहां दोगुणहानिका गुणकार था अर
अपकर्षण भागहारका भाग था तिनका अपवर्तन कीए असंख्यातका गुणकार ही रहया
भागहार दूरि भया तव औसास । ७ । १२-२
७ । ख । १७ । व ८- । १६-व ८-^५ याकों अष्टवर्ष करणका

प्रथम समयका गुणश्रेणी शीर्षे समान जो ताके अनंतरि उपरितन स्थितिका निषेक तामें

अधिक करना । जैसे प्रथम समयका गुणश्रेणि शीर्षत द्वितीय समयका गुणश्रेणि शीर्षका

आवक करणार पणत नवना
दृश्य द्रव्य साधिक ही हे—स। ७। १२-१६ १-२
इहां एक साधिक पना

आगें था इतना यह और साधिक भया ताके जाननेके अर्थि उपरि दूसरी ऊभी लोक [।] करी। जैसे ही पूर्वतैं उचर गुणअणि शीर्ष साधिक ही है इहां ए संदृष्टि कहीं हैं तिनका स्वरूप पूर्व होय आया है तातैं इहां न कह्या है। वहुरि अवस्थित गुणअण्यायाम अंतमुहूर्तमात्र असा २७ ताकौ संख्यात असा (४, ताका भाग दीएं बहुभाग असा २१ ३ अर गलिताव-

शेष गुणश्रेणि आयामविषे गुणश्रेणि दीर्घे असा २ ७ ताका असंख्यातवां भाग असा २ ७

ताके ऊपरि द्विचरम फालि कांडकतै नीचें अवशेष रहे निषेक ते औसैं २७।४।४।४।४।४।४।४।
इनकौं मिलाएं चरम कांडक आयामका प्रमाण हो है। सो याकी प्रथम फालिका पतन स-
मयतै लगाय दिचरम फालिका पतन समय पर्यंत फालि द्रव्य वा अपकर्षण कीया द्रव्य
तीन पर्वनिविधें देना। तहां अंतकांडककी प्रथम फालिका पतन समयविधैं जो गलिताव-
शेष गुणश्रेणि आयाम आरंभ्या ताका शीर्ष पर्यंत प्रथम पर्व, ताके ऊपरि पूर्व जो अवस्थित
गुणश्रेणि आयाम था ताका शीर्षपर्यंत द्वितीयपर्व ताके उपरि उपरितन स्थितिका अंत
निषेक पर्यंत तृतीय पर्व तहां सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्यविधैं पूर्व गले निषेकनिका द्रव्य ताके
असंख्यातवै भागमात्र घटाएं किंचिदून द्रव्य गुणहानि गुणित समय प्रचदमात्र चरम कां-
डकका द्रव्य औसा स।४।१२ - याकौ असंख्यातकरि भाजित अपकर्षण भागहारका
७।४।१७

भाग दीएं एक भाग औसा स। ४। १२ — याकी पल्यके असंख्यातवां भागका भाग देइ
७। ख। १७। को

७। अ। १७। श्री

9
or

बहुभाग जैसे स ३। १२-प प्रथम पूर्वविषे असंख्यात गणा क्रमकरि देना । तहां

50

७।सु।१७।ओं।प

50
50

अंक संहारिकरि पिच्यसीका भाग देह एककरि गुणें प्रथम निषेक, च्यारि सोलह करि गुणें मध्य निषेक, बौंसठिकरि गुणें अंत निषेक हो द्वे । बहुरि ताका एक भाग औसास । ४। १२-

७।ख।१७।ओ।प

၄၁

तार्को पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देह बहु भाग असा स । ३ । १२-प द्वितीय पर्व विषे ३ ३

50

५।४।३।२।१

১০০

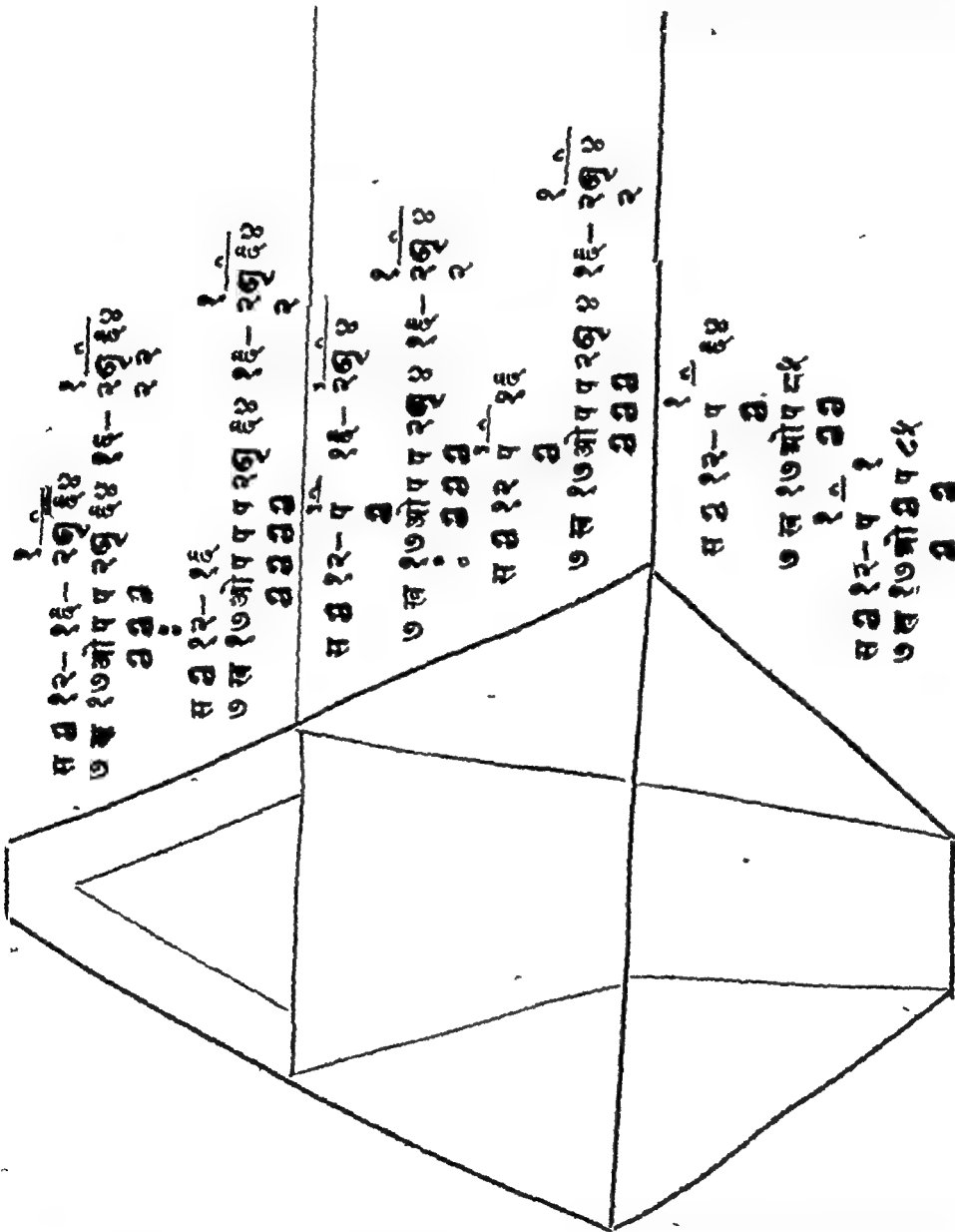
हीनक्रमकर देना । तहाँ याकों गच्छ संख्यातकी सहनानी न्यारिकरि गुणित अंतमुहूर्त मात्र ऐसा २७। ४ ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दो गुणहानि ऐसा—

१६ - २ ७१ ताका भाग दीएं चय होह । याकों दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम निषेक अर
गुणकारविषै एक एक घटाएं द्वितीयादि निषेक होह । एक घाटि गच्छ घटाएं अंत नि-
षेक होह बहुरि अवशेष एक भाग असा स । ३ । १२ - तीसरा पर्वविषै हीन क्रम-
उ । ख । १७ । को । प । प

७।ख।१७।ओ।प।प

॥ ॥ ॥

करि देना । तहां भी तैसे ही विधान जानना । विशेष दतना—इहां गच्छका प्रमाण अंक
संहति अपेक्षा चौसठि गुणा अंतर्मुहूर्त ऐसा २७ । ६४ जानना इनकी रचना ऐसी—



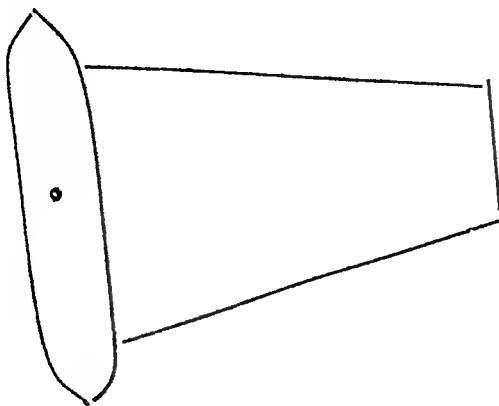
इहां पूर्वावस्थित गुणश्रेणि आयाम था ताके दिखावनेकों क्रम अधिकरूप सं-
दृष्टिकरि तहां अब जो गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम भया ताके दिखावनेकों तो क्रम
अधिकरूप अर ताके ऊपरि हीन क्रमरूप दीया द्रव्य ताके दिखावनेकों हीनरूप संहति
करी । बहुरि उपरितन स्थितिर्विषे पूर्व भी हीन क्रम था अब भी हीन क्रमरूप द्रव्य दीया
तातैं दोऊ हीनरूप लीककरि संहति करी है । बहुरि अनिवृत्तिकरणका अंतसमयविषे
चरमकांडककी चरम फालिका पतन हो है । तहां गले पीछे अवशेष रहया उदयादि गुण-
श्रेणि आयाम सो कृतकृत्य वेदक कालमात्र है । ताके प्रथमादि निषेक द्विचरम निषेक पर्यंत प्रथम
पर्व है । ताका अंतनिषेक द्वितीयपर्व है । सो गले निषेक अर कृतकृत्य कालके निषेक विना
अवशेष चरम फालिका द्रव्य ऐसा— स ३ । १२— ताकों असंख्यातगुणा पत्यके वर्गमूलका

७। ५। १७

भाग देह एक भाग प्रथम पर्वविषे असंख्यातगुणा क्रमकरि देना । तहां पिचयासीका भाग
देह एकादिकरि गुणै प्रथमादि निषेकानिकी संहति हो है । बहुरि बहुभाग द्वितीयपर्वविषे
देना ताकी संहति ऐसी—

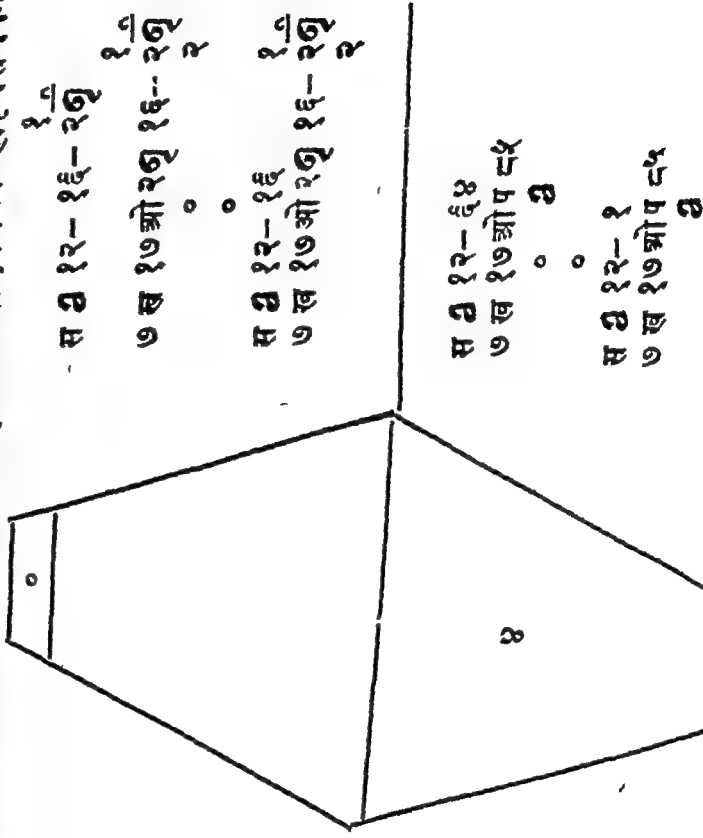
१-
स। ३। १२-। मू। ३
७। ख। १७। मू। ३
स। ३। १२-। दे३
७। ख। १७। मू। ३। ८५

०
०
म। ३। १२-। १
७। ख। १७। मू। ३। ८५



इहां गुणश्रेणिका द्विचरम समय पर्यंत अधिक क्रमरूप लोककरि ऊपरि अंत निषेककी
जुही रचनाकरि संहति करी है। ताके आगे दीया द्रव्य लिख्या है। बहुरि कृतकृत्य वेदक
काल गुणश्रेणि शीर्षके संख्यात बहुभागमात्र औसा २७। ३ तहां सम्यक्त्व मोहका सत्व
औसा स। ३। १२- ताकौ अपकर्षण भागहारका भाग देइ एकभाग उदयावलीविषे वाह्य
निषेकनिर्ते ग्रहि ताकौ पत्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग उदयावलीविषे
असंख्यातगुणा क्रमकरि देना। तहां पिन्व्यासीका भाग देइ एकादिकरि गुणै प्रथमादि

निषेक हो हैं । बहुरि बहुभाग उपरित्तन स्थितिविषे अतिस्थापनावली छोडि द्रव्य देना ।
तहां ताके द्रव्यका गुणकारविषे एक हीनकों न गणि अपवर्तन कीएं द्रव्य औसा स ३ १२-
ताकों गच्छ अंतर्मुहूर्तभांत्र औसा २ १ ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहा-
निका भाग दीएं चय धन होइ । ताकों दोगुणहानिकरि गुणै प्रथम निषेक अर गुणकारविषे एक
एक क्रमतैं घटाएं अन्तविषे गच्छमात्र घटाएं द्वितीयादि निषेक होइ तिनकी रचना औसी-



इहां नीचें उदयावलीकी अधिक क्रमरूप उपरितन स्थितिकी हीन क्रमरूप संहति जाननी।
 ताके आगें दीया द्रव्य लिख्या है। बहुरि कृतकृत्य वेदक कालविषे एक समय अधिक
 आवली अवशेष रहैं उदयावलीतैं उपरितन स्थितिविषे निषेकका अपकर्षणकरि ताकौ
 आवलीविषे एक घाटि आवलीका दोय त्रिभाग अतिस्थापनरूप राखि एक अधिक आव-
 लीका त्रिभागविषे दीजिए है। तहां तिस द्रव्यकौ पत्यका असंख्यातवां भाग प का भाग ^३
 देह एक भाग उदयादि असंख्यात समय पर्यंत असंख्यातगुणा क्रमकरि दीजिए है इहां
 भाग ताके उपरिवती अतिस्थापनाके नीचें निषेक तिनविषे हीनक्रमकरि दिजिये है इनके
 गच्छका प्रमाण यथासंभव असंख्यात असा ३ इहां संहति औसी-

अतिस्थापना	
स ३ १२-१६-३	१ ^५
७ ख १७ ओ ३ १६-३	१ ^५
स ३ १२-१६	१ ^५
७ ख १७ ओ ३ १६-३	२
स ३ १२-६४	
७ ख १७ ओ ५ ८५	३
स ३ १२-	
७ ख १७ ओ ५ ८५	३

बहुरि उदयावली अवशेष रहैं एक एक निषेक क्रमतैं गालि, क्षायिक सम्यग्दृष्टी हो हे ।
बहुरि इहां कालका अल्पबहुत्वकी संदृष्टि सुगम है । सो उपशम सम्यक्त्वविषैं अल्पबहुत्व
कह्या तिस प्रकार वा अन्य यथासंभव प्रकारकरि कथनके अनुसारि तेतीस अल्पबहुत्वके
पदानिविधैं ऐसी संदृष्टि हो हे—

三

100

करि गुणें अनेक्यान संख्यात भाग वृद्धि हो हे। अर ताहीकों संख्यात असंख्यात करि गुणें संख्यात अनेक्यान संख्यात गुणवृद्धि हो हे। अर ताहीकों असंख्यात संख्यातका भाग देह अर एक आदि अनेक्यान संख्यातकरि गुणें असंख्यात संख्यात भाग हानि हो हे। अर ताहीकों संख्यात अनेक्यानका भाग कीए संख्यात गुणहानि हो हे। तिनकी संहष्टि जैसी—

१- स। १२। १२- ७। ओ। ३	१- स। १२। १२- ७। ओ। ७	१- स। १२। १२- ७। ओ। ७	१- स। १२। १२- ७। ओ। ७
१- स। १२। १२- ७। ओ। ३	१- स। १२। १२- ७। ओ। ७	१- स। १२। १२- ७। ओ। ७	१- स। १२। १२- ७। ओ। ७

बहुरि तहां कालके अल्पबहुत्वकी संदृष्टि पूर्वोक्त प्रकारकरि वा अन्य यथा संभव प्रकार करि कथनके अनुसारि अठारह पदनिविधैं ऐसी जाननी-

२ ७	२ ७। ४	२ ७। ५। ४	२ ७। ५। ४। ४	२ ७। ५। ४। ४। ४	२ ७। ५। ४। ४। ४। ४
२ ७ ७। ४। ४	२ ७ ७। ४। ४। ४	२ ७ ७। ४। ४। ४	२ ७ ७। ४। ४। ४	२ ७ ७। ४। ४। ४	२ ७ ७। ४। ४। ४
प	सा। ७	सा अं को २	सा अं को २	सा अं को २	सा अं को २

बहुरि तहां जघन्य स्थानके अविभाग प्रतिच्छेद अनंत गुणी जीव राशिमात्र औसैं १६। ख। यातैं अनंत जीव राशिगुणा उत्कृष्ट स्थानके औसैं १६। ख। सर्व स्थान असंख्यात लोकमात्र औसैं ३ इनविधैं एक अधिक आवलीका असंख्यातवां भागकौ पांचवार मादि १- १- १- १- १- १- २ २ २ २ २ २ परस्पर गुणें जेता होह तिनविधैं एकवार षट्स्थानपतिन ३ ३ ३ ३ ३ ३

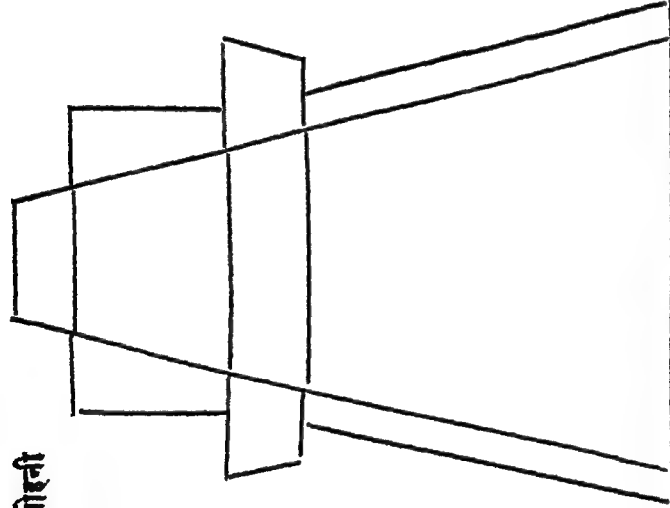
नवका सहनानी लोककी सहनानी तादीका
बहुति सर्वस्थान असे ३ इनको छोटा असंख्यात
अंक ताका भाग देह बहुभागमात्र अनुभव स्थान असे ३१८ बहुति एकभागमात्र प्रतिपात
भाग दीप बहुभागमात्र प्रति पद्यमान स्थान असे ३१८ बहुति जाननी ।
स्थान असे जानने ३ असे सकलसंयमाधिकारविषे संहति जो द्वितीयोपश-
मसम्यक्त्व सहित श्रेणी बढे ताके द्वितीयोपशम सम्यक्त्व सम्बन्धी अपूर्वकरणका प्रथम
स्थान असे जानने ३१८ अथ चारित्र्यमोहका उपशमन अधिकारविषे संहति कहिए है- तहां जो द्वितीयोपश-

मसम्यक्त्व सहित श्रेणी बढे ताके द्वितीयोपशम सम्यक्त्व सम्बन्धी अपूर्वकरणका प्रथम
स्थान असे जानने ३१८ अथ चारित्र्यमोहका उपशमन अधिकारविषे संहति कहिए है- तहां जो द्वितीयोपश-

सम्यक्त्व	विश्र	सम्यक्त्व	उपपत्तिवद्भव्य
स ३१२-५ ७ ख १७ गु जो प ३	स ३१२-३ ७ ख १७ गु	स ३१२-३ ७ ख १७ गु	स ३१२-३ ७ ख १७ गु जो प ३
स ३१२-३ ७ ख १७ गु	स ३१२-३ ७ ख १७ गु	स ३१२-३ ७ ख १७ गु	स ३१२-३ ७ ख १७ गु जो प ३
स ३१२-३ ७ ख १७ गु	स ३१२-३ ७ ख १७ गु	स ३१२-३ ७ ख १७ गु	स ३१२-३ ७ ख १७ गु जो प ३

इहां तीनों दर्शन मोहके निषेकनिका क्रमरूप आकार लिख ताके नीचे तिन तीनोंके द्रव्यकी संदृष्टि लिखी । द्वयर्ध गुणहानि गुणित समयप्रवदकों सात अनंत सतरहका भाग दीएं दर्शन मोहका द्रव्य होइ ताविषे किंचिदून कीएं मिथ्यात्वका अर ताहीकों गुणसंक्रमणका भाग देह असंख्यातकरि गुणें मिश्रका अर ताहीकों गुणसंक्रमका भाग दीएं सम्यक्त्व प्रकृतिका द्रव्य हो है । बहुरि तिन तीनोंके निषेक रचनाविषे उदयावली गुणश्रेणि उपरितन स्थिति दिखावनेकों क्रमहीन क्रम अधिक क्रम हीनरूप संदृष्टि करी । बहुरि तिनके आगे सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्यकों अपकर्षण भागहार औसा (ओ) ताका भाग देह ताकों पत्यका असंख्यातवां भाग ऐसा प ताका भाग देह बहुभाग उपरितन स्थिति विषे दीया अवशेष एक

भागकों असंख्यात लोक औसा $\equiv 3$ ताका भाग देह बहुभाग गुणश्रेणि आयामविषे एकभाग उदयावलीविषे दीया । तिनकी संदृष्टि लिखी । बहुरि अनिवृत्ति करण कालका संख्यातवां भाग रहैं सम्यक्त्व मोहनीका जो द्रव्य अपकर्षण कीया तिसविषे जहां असंख्यातलोकका भाग था तहां पत्यका असंख्यातवां भाग संभवे है । ताकी रचना औसी-

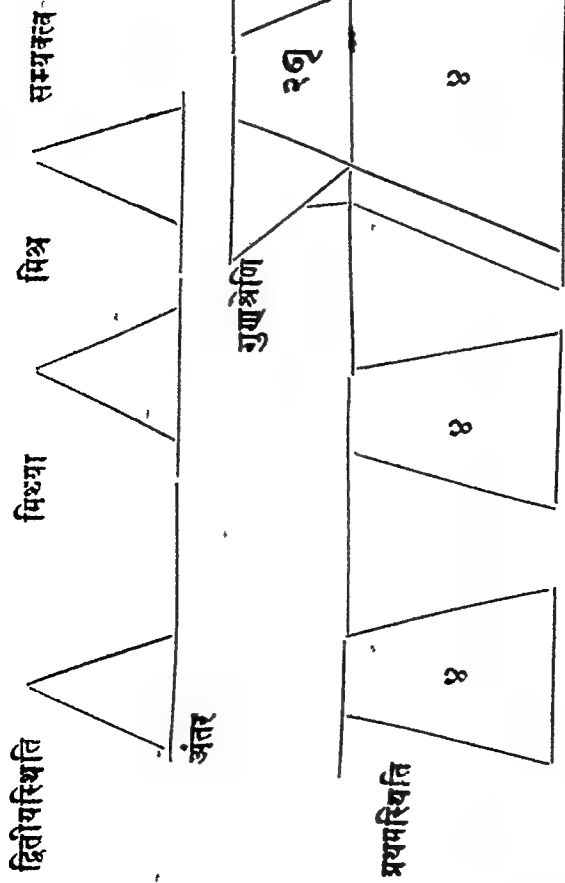


१-
स ३ १२-प
३
स ख १७ गु ओ प प
३ ३

१-
स ३ १२-प
३
७ ख १७ गु ओ प प
३ ३

१-
स ३ १२-
७ ख १७ गु ओ प प
३ ३

बहुरि अंतमुहूर्त काल गणं अंतर करै है। तहां मिथ्यात्व मिश्रमोहनीकी आवली ४। मात्र सम्य-
क्त्व मोहनीकी अंतमुहूर्तमात्र २७। नीचै प्रथम स्थिति छोडि वीचिके निषेकनिका अभाव
करि उपरि तीनोंकी द्वितीय स्थितिकी रचना समान हो है। तिनकी रचनाविषे नीचै
तीनोंकी उदयावली लिखी। ताके उपरि मिथ्यात्व मिश्रकें तो अभावरूप निषेकनिकी
संहाष्टि अर सम्यक्त्व मोहनीके गुणश्रेणिरूप निषेक लिखि ताके उपरि अभावरूप निषेक-
निकी संहाष्टि करनी। बहुरि तिन तीनोंके अभावरूप निषेकनिके उपरि द्वितीय स्थितिकी
क्रम हीन संहाष्टि बरोबरि करनी। जैसे कीएं औसी रचना हो है—



बहुरि अंतर निषेकनिका द्रव्य निक्षेपण कीया ताकी वा संक्रमण द्रव्यादिककी संक्षिप्ति यथासंभव जानि लेनी । बहुरि अन्य क्रिया होइ द्वितीयोपशम सम्यक्त्वी हो हे । अब चारित्रमोहका उपशम विधानविषे संक्षिप्ति कहिए है—

बहुरि नपुंसक वेदादिकका सत्त्व द्रव्य इहांतें लगाय गहु कथन तौ पाछें लिखना । अर पुरुष वेदादिकका बंध द्रव्यकी रचना औसी—

इहाँ नपुंसक वेदादिक मतें उपशमाइए है-तिनकी रचनाकरि आगैं अवशेष कर्म लिखे।
बहुरि तिनके निषेकनिकी क्रम हीन संहि करि वीचिमें गुणश्रेणिआयामकी क्रम अधिक रूप
संहि करी है। बहुरि इहाँ पुरुषवेदादिकका सत्व द्रव्यके आगैं बंध द्रव्यकी औसी ^५ संहि
जाननी। इहाँ नीचै आबाधा उपरि निषेकनिकी रचना जाननी। बहुरि मोहका द्रव्य औसा
स। ४१२ - तांमें सर्वाती द्रव्य किंचित् घट्या ताकों न गिणि ताकों कषाय नोकषायका
भाग दोएँ दोयका भाग होइ। अर नोकषायविषै वेद हास्यद्विक रतिद्विक भय जुगुप्साका
भागके अर्थ पांचका भाग होइ। दोयकों पांचकरि गुणें दशका भाग होइ औसैं वेदादिक
का द्रव्य औसा-

वेद ३	हास्य २	रति २	भय १	जुगुप्सा १
४।१२- ७।१०	स। ४।१२- ७।१०	स ४।१२- ७।१०	स। ४।१२- ७।१०	स। ४।१२- ७।१०

बहुरि अंक संहिष्ट अपेक्षा तीनों वेदनिविषै तिनके द्रव्यकों अठतालीसका भाग देह वि-
यालीस व्यारि दोयकरि क्रममें गुणें नपुंसकवेद स्त्रीवेद पुरुषवेदका द्रव्य हो है। बहुरि हास्य-
द्विकके द्रव्यकों तैसैं ही भाग देह सोलह वचीसकरि गुणें हास्य शोकका द्रव्य हो है। बहुरि
रति द्विकके द्रव्यकों तैसैं ही भाग देह सोलह वचीसकरि गुणें रति अरतिका द्रव्य हो है। इहाँ
पुरुषवेदका काल अंतर्मुहूर्तमात्र है तातैं स्त्री अर हास्य अर अरति शोकका काल क्रममें
संख्यात गुणा है अर नपुंसक वेदादिकका विशेष अधिक है। तिस अपेक्षा औसैं द्रव्य कहया है।
बहुरि मोहके द्रव्यकों अनंत अर सतरहका भाग दीएँ आठकरि गुणें अपत्याख्यान प्रत्या-

स्यान कषाय आठका द्रव्य हो है। इहां यह सर्वधाती द्रव्य है। बहुरि मोहके द्रव्यको आठका भाग देह च्यारिकरि गुणें संज्वलनकषायचतुष्कका द्रव्य हो है। इहां मोहका आधा द्रव्य जानना औसैं इनकी संदृष्टि औसी—

नपुं	स्त्री	हास्य	रति	अरति	शोक
स ३ १२-४२ ७ १० ४८	३ १२-४ ७ १० ४८	स ३ १२-१६ ७ १० ४८	स ३ १२-१६ ७ १० ४८	स ३ १२-३२ ७ १० ४८	स ३ १२-३२ ७ १० ४८
मय	जुगुप्सा	पुरुष	अष्टकषाय		संज्वलनचतुष्क
स ३ १२- ७ १०	स ३ १२- ७ १०	स ३ १२-२ ७ १० ४८	स ३ १२-८ ७ १० ४८	स ३ १२-८ ७ १० ४८	स ३ १२-४ ७ १० ४८

इनिका औसा सत्त्व द्रव्य है। ताको अपकर्षणकरि गुणश्रेणि करे है। तहां अनुभाग कांडकविषै एक कर्मका द्रव्य औसा— स ३ १२-याको साधिक ड्योढ गुणहानि औसा-
(१२) ताका भाग दीएं प्रथम निषेकका द्रव्य औसा स ३ १२-याको अनुभाग संबंधी

अनंत प्रमाण लीएं गुणहानि है सो इस साधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं प्रथम वर्गणा का द्रव्य औसा स ३ १२-याको आधा अन्योन्याभ्यस्त राशिका भाग दीएं अंत गु-
७ १२। ३ २

णहानिका प्रथम वर्गणाका द्रव्य औसा स ३ १२-याको दो गुणहानिका भाग देह एक
७ १२। ३ २

अधिक गुणहानि आयामकरि गुणै अंत गुणहानिकी अंतवर्गणाका द्रव्य ऐसा स। ३। १२-गु

७। १२। अ। ३। अ। गु २

बहुरि ऐसैं ही द्वितीयादि निषेकनिविषै रचना करनी। तहां प्रथम गुणहानिका प्रथम निषेकका द्रव्यकौ अपनी वर्गशलाकाकरि भाजित पत्यप्रमाण अन्योन्याभ्यस्त राशि ताका आधा ऐसा प ताका भाग दीएं अंतगुणहानिका प्रथम निषेकका द्रव्य ऐसा स। ३। १२ -

अ २

७। १२ प २

याकौ दोगुणहानिका भाग दीएं एक अधिक गुणहानिकरि गुणै अंत निषेकका द्रव्य ऐसा स। ३। १२ - गु

७। १२। प। गु २

१२

णाका द्रव्य ऐसा स। ३। १२ - गु

७। १२। प। गु। अ। ३

गहार था ताकौ दो गुणहानिकें दोयका गुणकार था ताकरि अपवर्तन कीया इहां एक अधिक पना न गिणि गुणहानिका भी अपवर्तन कीएं ऐसा स। ३। १२ - याकौ अनुभाग

७। १२ - प। अ ३

संबंधी आधा अन्योन्याभ्यस्त राशिका भाग दीएं अनुभाग संबंधी अनंतगुणहानिकी प्रथम

वर्गणाका द्रव्य औसा- स । ७ । १२ - याकों दोगुणहानिका भाग दीएं एक अधिक गु-

७ । १२ प ख । ३ । अ
ख २ २ २

णहानिकरि गुणें अंत निषेककी अंत गुणहानिकी अंत वर्गणाका द्रव्य औसा स । ७ । १२ - गु

७ । १२ । प । ख । ३ । अ । गु २
ख २ २ २

इहां भी पूर्ववत् अपवर्तन कीएं औसा स । ७ । १२ - औसैं सर्व निषेकनिविषैं अनुभाग

७ । १२ प ख ३ अ
ख २ २ २

रचना जाननी । तहां एक गुणहानिविषैं स्पर्धकनिका प्रमाणकी संहृष्टि औसी (१) ताकों ना-
नागुणहानिकरि गुणें सर्व अनुभाग औसा ९ । ना ताकों अनंतका भाग दीएं बहु भाग
मात्र खंडकरि नष्ट कीया अनुभाग ऐसा १-८ अवशेष एक भागकों अनंतका भाग दीएं

६ ना ख
ख

१-८

एक भागमात्र अतिस्थापन औसा १ । ना । ख बहुभागमात्र निक्षेपरूप अनुभाग औसा-

१-८ १-८ ख । ख

१ ना । ख ख जानना ।

बहुरि अनिवृत्ति करणविषैं स्थितिबंध क्रमतैं हो हे । तिनकी संहृष्टि आदि अक्षरादिरूप सुगम
है बहुरि इहां इकईस प्रकृतिनिका अंतर करण हो हे । तहां संहृष्टि दर्शनमोहका अंतरवत्
जाननी । विशेष है सो विशेष जानि लेना । बहुरि नपुंमक वेदका उपशमनविषैं नपुंमकका

सत्त्व द्रव्य पूर्वोक्त प्रकार ऐसा स । ३ । १२ — ४२ ताकौ गुणसंक्रमका असंख्यातवां भाग
७ । १० । ४८

का भाग दीपं प्रथम फालि अर दोय आदि एक एक अधिकवार असंख्यातकरि भाजित
गुण संक्रमका भाग दीपं द्वितीयादि फालि होह तिनकी संहति औसी—

स । ३ । १२ — ४२	७ । १० । ४८ । गु
स । ३ । १२ — ४२	७ । १० । ४८ । गु
स । ३ । १२ — ४२	७ । १० । ४८ । गु

बहुरि इहां अल्प बहुत्वविषै पुरुष वेदका पूर्वोक्त प्रकार सत्त्व द्रव्य ऐसा स । १२—२
७ । १० । ४८

ताकौ अपकर्षण भागद्वारका असंख्यातवां भाग अर दोयवार पत्यका असंख्यातवां भाग
दीपं उदयावलीविषै दीया उदीरणा द्रव्य से ऐसा स । ३ । १२ — २ बहुरि तिसहीकौ
७ । १० । ४८ । ३ । ५ । ५

अपकर्षण भागद्वारके असंख्यातवां भागका अर पत्यका असंख्यातवां भागका भाग दीपं
गुणश्रीणि द्रव्य ताकौ पिच्यसीका भाग दीपं ताका प्रथम निषेकरूप उदय द्रव्य ऐसा—

इहां नीचें एक दोय आदि व्यतीत भए समयनिकी संहष्टि विंदी लिखि उपरि वसीस वर्षे मात्र स्थितिके निषेकनिकी क्रम हीन संहष्टि करी । औसैं अंतर्मुहूर्त काल गएं पीछैं अंतर्मुहूर्त घाटि वर्चास वर्षमात्र स्थिति बंध हो है । ताकी अंतर्विषे संहष्टि करी है

बहुरि अन्य विधान होइ पुरुषवेदके उपशम कालविषे नवक समय प्रवद्ध एक घाटि दोय आवलीमात्र उपशम नाही तिनकी संहष्टि औसी-

उच्छिष्टावली	० ० १ ० १ २ ० १ २ ३ ० १ २ ३ ४ ० १ २ ३ ४ ५ ० १ २ ३ ४ ५ ६
उपशमना वली	० १ २ ३ ४ ५ ६ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
बंज्ञावली	४ ५ ६ ७ ४ ५ ६ ७ ४ ५ ६ ७ ४

इहां समय प्रवद्धकी च्यारि उपशम फालि कलि च्यारिका अंककी संहष्टि करी अर आवलीका प्रमाण च्यारि समय कल्पना कीएं तहां बंधावली विषे प्रथमादि समयविषे एक

एक समय प्रवृद्ध बंध्या ते तिननिविषे क्रमतेँ एक दोय तीन व्यारि समय प्रवृद्ध अनुपशमरूप भए । बहुरि ता पीछेँ उपशमनावलीका प्रथम समयविषेँ जो बंधावलीका प्रथम समयविषेँ समय प्रवृद्ध बंध्या था ताकी एक फालि उपशमाई तीन अवशेष रहीँ अर बंधावलीके द्वितीय यादि समय विषेँ बंधे तीन समय प्रवृद्ध अर उपशमनावलीका प्रथम समयविषेँ बंध्या एक समय प्रवृद्ध संपूर्ण अनुपशमरूप रहे । बहुरि उपशमनावलीका द्वितीय समयविषेँ बंधावलीका प्रथम समयविषेँ बंध्या समयकी दूसरी फालि अर द्वितीय समय बंध्याकी प्रथम फालि उपशमाई तातेँ तिनिकी दोय अर तीन फालि अनुपशमरूप रहीँ अर बंधावलीका द्वितीय तृतीय समय विषेँ बंधे अर उपशमनावलीका प्रथम द्वितीय समयविषेँ बंधे संपूर्ण दोय समय प्रवृद्ध अनुपशमरूप रहे । अैसेँ ही क्रमतेँ उपशमनावलीका अंत समयविषेँ बंधावलीका प्रथम समयविषेँ बंध्या समय प्रवृद्ध सर्व उपशमा ताकी संक्षिप्त विंदि लिखि ताके द्वितीयादि समयनिविषेँ बंध समय प्रवृद्धनिकी एक दोय तीन फालि अर उपशमनावलीके प्रथमादि समयनिविषेँ बंध व्यारि समय प्रवृद्धतेँ अनुपशमरूप रहे । ए नवीन समय प्रवृद्ध है तातेँ फालि-निकौं भी समयप्रवृद्ध कल्पेँ एक घाटि दोय आवलीमात्र नवक समय प्रवृद्ध अनुपशमरूप हैं । तिनिका उच्छिष्टावली मात्र सस्व रहेँ पूर्वोक्त प्रकार एक एक फालिका उपशमन हो है । तहां प्रथम समयविषेँ बंधावलीके द्वितीय समयविषेँ बंध्या समयप्रवृद्ध तौ सर्व उपशमा तृतीयादि समयनिविषेँ बंधकी एक दोय फालि अनुपशमरूप रहीँ उपशमनावलीका प्रथम समय विषेँ बंध्याकी एक फालि उपशमा तातेँ तीन फालि रहीँ ताहीके द्वितीयादि समयनिविषेँ बंधे संपूर्ण समय प्रवृद्ध अनुपशमरूप रहे । अैसेँ ही क्रमतेँ एक घाटि दोय आवलीमात्र काल

विषे तिन सर्वनिके उपशमति है । बहुरि इहां अपने अपने समय प्रवद्ध की फालि आदिकी रचना उपरि उपरि अपनी अपनी सूधिविषे करी है । बहुरि पुरुषवेदके नवकसमय प्रवद्धकी संदृष्टि औसी स ३ । ४ । २ इहां समयप्रवद्धकों सातका भाग दीएं मोहका बंध द्रव्य होइ ताकों कषाय नौकषाय भागके अर्थि दोयका भाग दीएं इहां अन्योन्य कषायनिका बंध नाही है तातें पुरुषवेदका बंध द्रव्य औसा स ३ १२- ताकों दोय आवली एकसमय घाटि औसा ४ २ ७ । २ ताका गुणकार जानना । बहुरि इहां जाकी बंधावली व्यतीत भई औसा पुरुष वेदका एक समय प्रवद्ध औसा स ३ ताकों गुण संक्रमणका भाग दीएं अपगत वेदका प्रथम समयविषे उपशमन द्रव्य हो है । बहुरि एक दोय आदिवार असंख्यातकरि भाजित गुणसंक्रम ता- हीको भाग दीएं द्वितीयादि समयनिविषे उपशम द्रव्य हो है अंतविषे एक घाटि आवलीकी संदृष्टि औसी ४ सो इतनी वार असंख्यातकरि भाजित गुण संक्रमणका भाग हार जा- नना । ताकी संदृष्टि रचना औसी-

प्रथमफालि	द्वितीयफालि	तृतीयफालि	अंतफालि
स ३ ७ । २ । गु	स ३ ७ । २ । गु	स ३ ७ । २ । गु	स ३ ७ । २ । गु
	३	३	३
			१ ५
			३ ४

इहां क्रमहीन रूप निषेकनिकी संहटिकरि ताके वीचि एक फालिविषैं सर्व निषेकनिका केता इक द्रव्य उपशमाइए है तातैं ऊभी लीककी संहटिकरी अर नीचैं फालिनिका द्रव्यकी संहटि लिखी । बहुरि पुरुष वेदके नवक समय प्रवद्धनिविषैं एक एक समय प्रवद्ध औसा स ३^{७।२} याकों अधः प्रवृत्त भागहारका भाग दीएं एक भागका अपगत वेदके प्रथम समयविषैं क्रोधरूप संक्रमण हो है अवशेष बहुभागकों ताहीका भाग दीएं एक भागका द्वितीय समय विषैं संक्रमण हो है । अवशेष बहुभागकों ताहीका भाग दीएं एक भागका तृतीय समय विषैं संक्रमण हो है । औसैं समय घाटि दोय आवली पर्यंत अनुक्रम जानना । तिनकी संहटि औसी—

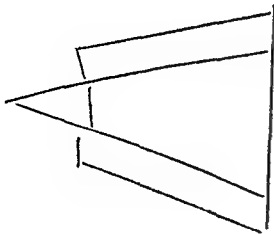
नाम	प्रथम समय	द्वितीय समय	तृतीय समय
अवशेष बहुभा- गमात्र द्रव्य	१— स। ३। अ ७। २। अ	१— १— स। ३। अ अ ७। २। अ अ	१— १— १— स। ३। अ अ अ ७। २। अ अ अ
संक्रमण रूप	१— स। ३	१— स। ३। अ	१— स। ३। अ
भया द्रव्य	७। २। अ	२। २। अ। अ	७। २। अ। अ अ

इहां अधः प्रवृत्तकी सहनानी अकार ताका भाग देइ बहुभागविषैं एक घाटि तिसहा का गुणकार जानना । बहुरि पुरुषवेद अर क्रोधकों उपशमाइ मानकों उपशमावै है तहां मानकी द्वितीय स्थितिका द्रव्य औसा स। ३। १२ — इहां सर्व कर्मका सत्व द्रव्यकों सात ७।८

का भाग दीएं मोहका होइ, ताकौं कषायनिका होइ, ताकौं न्यारिका
 भाग दीएं मानका होइ । सो दोयकौं न्यारिकरि गुणैं इहां आठका भागहार मोहके द्रव्य
 भाग दीएं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भागकौं पल्यके असंख्यातवां
 कौं दीया है । याकौं अकर्मण्य भागहारका भाग देइ एक भागकौं पल्यके असंख्यातवां
 भागका भाग देइ एक भाग प्रथम स्थितिविषैं असंख्यात गुणा कूमकरि देना । तहां ताकौं
 अंक संहारिकरि पिन्यासीका भाग देइ एक आदिकरि गुणैं प्रथमादि निषेक हो हैं । बहुरि
 बहुभाग द्वितीय स्थितिविषैं हीन कूमकरि देना । तहां तिस द्रव्यकौं साधिक ज्योड गुणहा-

भाग १२ ताका भाग दोएँ प्रथम निषेक ताकाँ दोगुणहानि असा (१६) ताका भाग
 अंक संहष्टिकरि पिण्यासीका भाग १२ ताका भाग दोएँ प्रथम निषेक ताकाँ दोगुणहानि असा (१६) ताका भाग
 बहुभाग द्वितीय स्थिति विषे हीन क्रमकरि देना । तहा तिस भाग १२ ताका भाग दोएँ प्रथम निषेक ताकाँ दोगुणहानि असा (१६) ताका भाग
 नि असा १२ ताका भाग दोएँ प्रथम निषेक ताकाँ दोगुणहानि असा (१६) ताका भाग दोएँ प्रथम निषेक ताकाँ दोगुणहानि असा (१६) ताका भाग
 दीएँ चय होइ । ताकाँ दोगुणहानिकरि गुणै प्रथम गुणहानिका प्रथम निषेक होइ । असेँ क्रमै गुणहानि गुणहानि प्रति
 घाटि दोगुणहानिकरि गुणै द्वितीयादि निषेक होइ । वर्गशलाकाकरि भाजित पत्य प्रमाण
 आधा आधा होइ । गुणहानिका प्रथम निषेक ताकाँ दोगुणहानि असा (१६) ताका भाग दोएँ प्रथम निषेक ताकाँ दोगुणहानि असा (१६) ताका भाग
 आधा आधा होइ । गुणहानिका प्रथम निषेक ताकाँ दोगुणहानि असा (१६) ताका भाग दोएँ प्रथम निषेक ताकाँ दोगुणहानि असा (१६) ताका भाग

१-२
घाटि दोगुणहानकार प्रथम निषेककाल ताका भाग दिए अतः ३
आधा आधा होइ । गुणहानिका प्रथम निषेककाल ताका भाग दिए अतः ३
जो अन्योन्याभ्यस्तराशि ताका आधा अतः ३
निषेक होइ । तहां दोगुणहानिमात्र गुणकारविषै एक घाटि गुणहान्यायाम असा गु वटाए
अंत निषेककी संदष्टि हो है । असें इनकी रचनाविषै द्रव्य देनेकी अपेक्षा नीचै प्रथम स्थिति
की क्रम अधिकरूप संदष्टिकारि ताके ऊपर अंतरायामविषै अभावरूप निषेकनिही विदीकी
संदष्टिकारि ताके ऊपर द्वितीय स्थितिकी क्रम हीन रूप संदष्टि अर अंतविषै अतिस्थापना-
वलीकी संदष्टिकारि रचना जाननी । तिनिके आगे आदि अंत निषेकविषै दीए द्रव्यकी सं-
दष्टि जाननी-



ਸ ੧੨-੭੨੬-੧੧

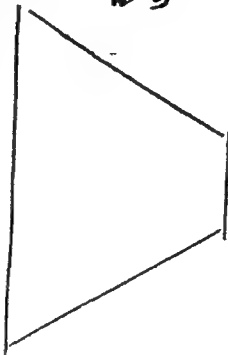
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५२५
०२१

७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

स ३३-६४
७८ प ५५



बहुरि अैसे ही माया वेदकविषे मायाके द्रव्य देने की संदृष्टि जाननी किछू विशेष नाही बहुरि लोभ वेदक काल संख्यात आवलीमात्र असा २७ ताकौं संख्यातका भाग देइ बहु-
भागके तीन भागकरि तीन जायगा स्थापने । बहुरि अवशेष एक भागका संख्यात बहु-
भाग द्वितीय स्थानविषे एक भाग तृतीय स्थानविषे मिलावना । तहां प्रथम स्थानरूप स्लोभ

वेदकका आधा काल है। दूसरा स्थानरूप कृष्टिकरण काल है। तीसरा स्थानरूप कृष्टिवेदक काल है। ते औसे संहारिरूप जानने-

०	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
बहुभाग	२। १। १ १। ३	स १। १ १। ३	१- २ १। १ २ १। ३
विशेष	१- २। १। १ १। १	१- स १। १ १। १। १	१- २ १। १ २ १। १। १

१-
इहां प्रथमद्वितीय स्थानके मिलाए हुए बहु भाग औसे २ १। १। इहां एक घाटि १। ३

रूप ऋण औसा २ १-२ जुदा राखि अवशेष विषे संख्यातका अपवर्तन कीएं औसा २ १। १

१-
बहुरि दूसरा स्थानका विशेष घन औसा २ १। १ इहां एक घाटिका ऋण औसा २ १। १

१-
जुदा राखि अवशेषविषे संख्यातका अपवर्तन कीएं औसा २ १ सो एतावन्मात्र ही है। तातैं प्रथ-

१-
घन औसा २ १। १ विषे एक घाटिका ऋण औसा २ १। १

मस्थानका विशेष विषे याकों मिलाएं प्रथम स्थानका विशेष धन^१ असा २ ७ भया याकों
तीनकरि समच्छेद कीएं असा २ ७। ३ या विषे प्रथम ऋण असा २ ७। २ अर^१ द्वितीय
ऋण असा २ ७। घटाएं जो अवशेष रहा ताका अधिकका प्रथम द्वितीय बहु भाग असा-
२ ७। २ के उपरि असा (।) संहति कीएं असा ३ ७। २ यामें आवली मिलाएं वादरलो-
भकी प्रथम स्थितिका काल हो है। बहुरि इहां प्रथम स्थानविषे बहुभाग असा २ ७। ७^१
इहां ऋण असा २ ७। ७ जुदा कीएं अर संख्यातका अपवर्तन कीएं असा २ ७ बहुरि तहां
विशेष धन असा २ ७। ७ इहां ऋण असा २ ७ जुदा कीएं संख्यातका अपवर्तन कीएं
असा २ ७ याकों तीनकरि समच्छेद कीएं असा २ ७। ३ याविषे द्वितीय ऋणकरि अधिक
प्रथम ऋण असा २ ७। ७ घटाएं असा २ ७। २- तिस बहुभागका धन असा २ ७ विषे
अधिक कीएं वादर लोभ कालका प्रथम अर्ध साधिक लोभ वेदक कालका तृतीय भागमात्र
असा २ ७ हो है। बहुरि कृष्टिकरण कालविषे विधानकी संहति कहिए है-

जघन्यस्पर्धककी प्रथम वर्गणाकी एक परमाणूविषे अनुभागके प्रतिच्छेद जीवराशितें अनंत गुणें जैसे १६। स्व तिनके समूहका नाम वर्ग है। ताकी संहति ऐसी (व) बहुरि संज्वलन लोभका सत्त्व द्रव्य ऐसा स। ७। ११-याकौ अनुभाग संबंधी गुणहानि अनंत गुणित अनंत

७। ८

प्रमाण सो ऐसी (स्व) साधिक च्योड गुणहानिका भाग दीएं प्रथम वर्गणा ऐसी स। ७। १२

७। ८ क। ख। ३

२

याकौ दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष ऐसा स। ७। १२ - इस विशेषकरि वर्गकौ

७। ८। क। ख। ३। क। ख। २

३

गुणें लघु संहति ऐसी (व वि) याकौ दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम वर्गणा ऐसी व वि स्व स्व २ इहां अंकसंहतिकरि एक गुणहानिका प्रमाण आठ कल्पि दोगुणहानिका प्रमाण सोलह स्थापै ऐसी व। वि। २६ संहति हो है। याकी लघु संहति ऐसी (व) यह वर्गणाका आदि अक्षर रूप जाननी। बहुरि याकौ अनुभाग संबंधी साधिक च्योड गुणहानिकरि गुणें लोभ

का सत्त्व द्रव्य ऐसा व १२ याकौ अपकर्षण भागहारका भाग देह एक भाग ग्रहया सो ऐसा

७। ८

व १२ याकौ पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभाग ऐसा व १२। प जुदा

ओ

ओ प

७

स्यापि एक भाग औसा ३ १२ ताकौं इहां एक स्पर्धकविषै वर्गणा शलाकाकी संहति औसी
ओ प ३

(४) ताकौं अनंतका भाग दीएं प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ औसा ४
ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानि औसा १६-४ ताका भाग दीएं
ख २

चय होह । ताकौं दोगुणहानिकरि गुणै प्रथम कृष्टिका द्रव्य औसा व १२ १६ याका अ-
१-२

ओ । प । ४ । १६-४

नुभाग पूर्व स्पर्धक वर्गकौं कृष्टिनिका प्रमाणमात्र वार अनंतका भाग दीएं हो हो सो औसा-
व ४ बहुरि प्रथम कृष्टिविषै एक चय घटावनेकौं दोगुणहानिका गुणकारविषै एक घटाएं द्वितीय
ख ३

कृष्टिका द्रव्य औसा भया संहति व । १२ । १६-१ १-२ याका अनुभाग तिस अनुभागतै
ओ । प । ४ । १६-४

अनंतगुणा औसा व । ख १ औसै ही क्रमतै दो गुणहानिका गुणकारविषै एक घाटि कृष्टि-
ख ३

निका प्रमाणकौं घटाएं अंत कृष्टिका द्रव्य औसा व । १२ । १६-४ १-२ बहुरि प्रथम
ख ३

ओ । प । ४ । १६-४
ख ३

कृष्टिका अनुभागकों एक घाटि कृष्टि प्रमाणमात्र बार अनंतकरि गुणें अंत कृष्टिका अनु-
 भाग ऐसा व। ख। १५ अपवर्तन कीएं वर्गणाके अनंतवै भागमात्र याका अनुभाग ऐसा
 व जानना बहुरि जुदे स्यापें बहुभाग ऐसा व। १२। प साधिक ज्योढ गुणहानिनिका अर
 दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ ताकों दोगुणहानिकरि गुणें स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषे
 दीया द्रव्य ऐसा व। १२। प १६ बहुरि द्वितीयादि वर्गणाविषे दोगुणहानिका गुणकार-

को प। १२ १६
 ३

विषे क्रमतैं एक एक घटाएं अंतविषे एक घाटि गुणहानिमात्र घटाएं प्रथम गुणहानिकी अंत
 वर्गणा होइ। बहुरि गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा होइ। प्रथम गुणहानिके निषेकानि
 कों एक घाटि नानागुणहानिका प्रमाणमात्र हूवा परस्पर गुणें ऐसे (२ ना) तिनिका भाग
 दीएं अंतगुणहानिके प्रथमादि निषेक हो हैं। अतैं अंत वर्गणा औसी होहै व। १२। प। १६। गु
 को प। १२। १६। २। ना
 ३

अतैं कृष्टिनिकी वा पूर्व स्पर्धकनिविषे दीया द्रव्यकी संहति औसी-

व ख ४ ख	व ख
व १२ १६ ००००० व १२ १६-४ ओ प ४ १६-४ ओ प ४ १६-४ ४ ख ख ४ ख ख	व १२ १६ ००००० व १२ १६-४ ओ प ४ १६-४ ओ प ४ १६-४ ४ ख ख ४ ख ख

इहां ऐसा जानना—निषेक तो ऊपरि ऊपरि समयविषे उदय आवने योग्य हे तातें निषेकनिकी तो रचना वा ऊर्ध्वविषे क्रमरूप कीजै थी अर इहां युगवत् उदय आवने योग्य एक निषेकके परमाणुनिविषे अधिक हीन अनुभागकी रचना हे तातें आडी रचना करी हे तहां ऊपरि तो समपट्टिकाकी संहति करी हे । नीचें चय घटता क्रमकी क्रम हीन रूप संहति करी हे । तहां छष्टि वा वर्गणानिविषे छष्टिनिविषे आदि अंत छष्टिनिके द्रव्यका अर स्पर्धकनिविषे आदि अंत वर्गणानिविषे दीया द्रव्यका प्रमाण लिख्या हे । मध्यभेदनिके अर्थे वीचिमें विंदी लिखी हे । बहुरि छष्टि करण कालका द्वितीय समयविषे अपकर्षण कीया हुवा द्रव्य प्रथम समय वालेतें असंख्यात गुणा ऐसा हे व । १२ । ३ याकों पत्यका असं-

ख्यातवां भागका भाग देह बहुभाग औसैं व । १२ । ३ । प जुदे राखि अवशेष एक भागमात्र
मो । प । ३

कृष्टि द्रव्य औसा व । १२ । ४ । ताके विभाग करिए हे—

मो । प । ३

तहां प्रथम समयका कृष्टि द्रव्यविषैं एक विशेषका प्रमाण कया सौ औसा—

व १२ १-इहां इसहीकौ आदि उत्तर स्यापि एक घाटि प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनि
मो । प । ४ । १६ — ४

३ । ख । १-४

का प्रमाण गन्छ औसा ४ स्यापि पदमेगेन विहीणं इत्यादि सूत्रकरि गन्छुतैं एक घटाइ

मो । १-४

दोयका भाग दीएं औसा ४ याकरि तिस विशेषकौ गुणैं औसा— व १२ । ४ । यामैं आदिका
मो । २ । १-४

मो । प । ४ । १६ — ४

३ । ख । २

प्रमाण तिस विशेषमात्र ताके मिलावनेके अर्थि आगिला गुणकारविषैं दोयकरि भाजित
दोय ऋण था ताका एक भगा । अर इहां इस गुणकारविषैं एक ही मिलावना तातैं तिस
घाटिकौ दूर कीएं औसा व । १२ । ४ । यामैं तिस गन्छकरि गुणैं औसा व १२ । ४ । ४

मो । २ । १-४

मो । प । ४ । १६ — ४

३ । ख । २

मो । प । ४ । १६ — ४

३ । ख । २

वय धन भया सो यह अथस्तन शीर्ष द्रव्य है । बहुरि प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनिविषै
आदि कृष्टिमात्र एक कृष्टि औसो व । १२ । १६ याकौ प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनि

को । प । ४ । १६ — ४
३ त ल २

का प्रमाणकौ असंख्यात गुण! अपकर्षण भागहारका भाग दीएं द्वितीय समयविषै कीनी
कृष्टिनिका प्रमाण औसा ४ ताकरि गुणै अवस्तन कृष्टि द्रव्य औसा व । १२ । १६ । ४
ल । ओ । ३

को प । ४ । १६ — ४
३ ल १-४ त

बहुरि द्वितीय समय कृष्टिका द्रव्य औसो व । १२ ३ या विषै प्रथमसमयका कृष्टिद्रव्य
को । प । ३

औसा- व १२ मिलानेकौ आगिला असंख्यातकौ गुणकारविषै एक अधि-
को प ३ १-२

क कीएं औसा- व । १२ । ३ याकौ प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनि
को । प ३

का प्रमाणके ऊपरि द्वितीय समयविषै कीनी कृष्टिनिका प्रमाण मिलानेके अर्थ

20

पूर्वोक्त तीन द्रव्य घटावनेकी औसा ॥ संदष्टि कीएं औसा-व । १२ । ३ ॥ हो है । यकीं

उभय कृष्टिमात्र गच्छ औसा ४ ताका भाग दीएं एक खण्डका द्रव्य औसा हो है—

व । १२ । ३ ॥ याकीं तिस गच्छहीकरि गुणें मध्यघन खंडका द्रव्य औसा हो है—

व । १२ । ३ ॥ ४ बहुरि इहां अघस्तन शीर्षादिककका द्रव्यविधे गुणकार भागहारका

यथासंभव अपवर्तन कीएं ते न्यायो द्रव्य औसे हो हैं—

अधस्तन शीर्ष	। व १२ ओ प । ख । ख । ४ ३
उभय विशेष	। १— व । १२ । ३ ओ । प । ख । ख । ४ ३
अधस्तन कृष्टि	। व १२ ओ । प । ओ । ३ ३
मध्यम खंड	। व १२ ३ ≡ ओ प ३

इहां अधस्तन शीर्ष द्रव्यविषे औसा ४ तौ गुणकार भागहारविषे समान जानि अप-
वर्तन कीया अर भागहारविषे दोगुणहानि अंक संहतिअपेक्षा औसा १६ लिख्या था तहां
अर्थ संहति अपेक्षा औसा ख । ख २ करि गुणकारका औसा ४ याकौ दोयका भागहार था

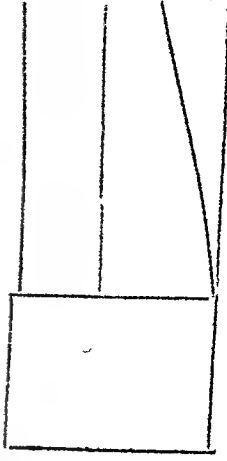
ताकरि गुणें ऐसा ख । ख । ४ भागहार भया । ऐसा गुणकार वा । दोगुणहानिविषे
घटाया ऋण तिनको किंचित् जानि न गिणि अपवर्तन कीया है । जैसे ही यथासंभव
औरनिविषे अपवर्तन जानना । जैसे इनिकों जानि जिन कृष्टिनिविषे जो जो द्रव्य
दीया तिनकी संदष्टि जाननी । तहां समपट्टिकाको वयसंयुक्त कीएं पूर्वकृष्टि कम हीन
द्रव्य लीएं ऐसी—



थी तिनविषे अधस्तन शीर्ष द्रव्य दीएं समान प्रमाण लीएं सर्वकृष्टिनिका प्रमाण समपट्टि-
कारूप ऐसा हो है—



बहुरि याके नीचें अधस्तन कृष्टि द्रव्यकरि नवीन करी कृष्टि याहीके समान प्रमाण
लीएं स्थापि ऐसी कृष्टि हो है—



इहाँ एक समय उदय आवने योग्य परमाणुनिकी अनुभाग अपेक्षा रचना हे तातें आडी
लीककरि सहनानी करी हे । तहां प्रथम कृष्टिविधें एक अवलन कृष्टिका द्रव्य औसा—
व । १२ । १६ १७ एक मध्यम खंडका द्रव्य औसा व । १२ । ४ ३ पूर्व अपूर्व कृष्टिका
को । ५ । ४ । १६—४

प्रमाणकरि गुणित उभय द्रव्य विशेष अैसे व । १२ । ३ ४ इन तीन द्रव्यको दीजिए । हे ।

को । प । ४ । १६ — ४

३ ल ख २

द्वितीयादि कृष्टिनिविषे एक एक उभय विशेष घटता द्रव्य नवीन करी कृष्टिनिका अंत पर्यंत दीजिए है । बहुरि पूर्व कृष्टिनिकी आदि कृष्टिनिविषे एक मध्यम खंड अर पूर्व कृष्टि गुणित उभय विशेष द्रव्य दीजिए है । बहुरि द्वितीय कृष्टिनिविषे एक अधस्तन शीर्ष विशेष

ऐसा व १२ १ २ एक मध्यम खंड एक घाटि पूर्व कृष्टि प्रमाण गुणित उभय द्रव्य

को । प । ४ । १६ — ४

३ ल ख

विशेष अैसे-व । १२ । ३ ४ दीजिए है । तृतीयादि कृष्टिनिविषे एक एक अधस्तन शीर्ष

को । प । १६ — ४

३ ल ख २

बंधता एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता दीजिए है । अैसे दीएं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिका एक गोपुच्छ हो है । तहां प्रथम समयविषे कीनी कृष्टिनिका द्रव्यविषे अधस्तन शीर्ष विशेष का द्रव्य अर अधस्तन कृष्टिका द्रव्य दीएं पूर्व अपूर्व कृष्टिनिका ममगट्टिका द्रव्य पूर्व जय-

न्य कृष्टिको पूर्व अपूर्व प्रमाणकरि गुणे ऐसा व १२ । १६ । ४ बहुरि उभय द्रव्य विशेषका द्रव्य

को । प । ४ । १६ — ४

३ ल ख

उभी लीकरूप औसी (॥) सद्विषय कीएं औसा भया व । १२ । १ याकौ पूर्व अपूर्व कृष्टिमात्रे अर
ओ प ३

एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय औसा व । १२ । १ २ ५

याकौ दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम कृष्टिका द्रव्य भयो अर इसगुणकारविषे क्रमते एक एक
घटाइ अंतविषे एक घाटि गच्छमात्र घटाएं द्वितीयादि कृष्टिका द्रव्य हे तहां रचना औसी -

अपूर्वकृष्टि द्रव्य	पूर्वकृष्टि द्रव्य
उभयविशेष द्रव्य	अच्युतन शक्ति

मथपकृष्टि अन्तकृष्टि १ ५
। ॥ ॥ ॥ ॥
व १२ १ १६ ०००० व १२ १ १६-४
ओ प ४ १६-४ १ ५
३ स्व ३ स्व
ओ प ४ १६-४ ३ स्व ३ स्व

22

प्रथमकृष्टि

मध्यमखंड	उभयविशेष
----------	----------

। व १२ ३ = १६ । ।
 । व १२ ३ = १६-४ ।
 ०००० ओ प ४ १६-४ ।
 । व १२ ३ = १६ । ।
 । व १२ ३ = १६-४ ।

इहां मध्यम खंडकी समपट्टिका रूप अर नीचें उभय विशेषकी क्रमहीन रूप संह्राष्टि करी है औसैं यह गोपुच्छ भया । याकी पूर्व गोपुच्छके ऊपरि स्थापै क्रमहीन रूप सर्व कृष्टिनिका एक गोपुच्छ हो है । ताकी रचना औसी-

असंख्यात गुणकारका उभयविशेष द्रव्य	
मध्यमखंड द्रव्य	
अधस्तनकृष्टि द्रव्य	पूर्वकृष्टि सम्पट्टिका द्रव्य
	पूर्वचय
एक गुणकारका उभयविशेष द्रव्य	
अधस्तनशीर्ष	

प्रथमकृष्टि	अंतकृष्टि
। १- व १२ ३ १६ ०००००००० व १२ ३ १६- ४	। १- व १२ ३ १६- ४
ओ ५४ १६- ४	ओ ५ ४ १६- ४
३ ख ख २	३ ख २

इहां पहली रचनाके उपरि पाछिली रचना लिखि क्रम हीन रूप एक गोपुच्छ कीया है। तहां द्वितीय समय संबंधी कृष्टि द्रव्यका असंख्यातका गुणकारके ऊपरि पाहिला समय संबंधी द्रव्य मिलावनेको एक अधिककरि ताको पूर्वापूर्वकृष्टिमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधारिहीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ। ताको दोगुणहानिकरि गुणै प्रथमकृष्टि का अर इस गुणकारविषै एक एक क्रमते घाटि होइ एक घाटि गच्छमात्र घाटि भए अंत कृष्टिका द्रव्य हो है ताकी संदृष्टि नीचे लिखी है। बहुरि जैसे ही कृष्टि करण कालका तृती-

यादि समयानिविषे यथासंभव संहति जाननी । बहुरि अन्य क्रिया होइ अनिवृत्ति करण
का काल पूर्ण भए सुक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषे कृष्टिनिका द्रव्य असा-

१८

स ३। १२ - ३ । २ १ इहां लोभके द्रव्यको अपकर्षण भागहारका अर पल्यका असं-
७। ८। ओ । प

३

ख्यातवां भागका भाग दीएं कृष्टि करण कालका प्रथम समयका द्रव्य होइ । ताको एक घाटि
अंतर्मुहूर्तके समयमात्र वार असंख्यातकरि गुणें ताका अति समयका द्रव्य होइ । ताविषे पूर्व
समयनिका द्रव्य मिलावनेको उपरि अधिककी संहति कीएं यहु संहति भई है । याको अपक-
र्षण भागहारका भाग देइ एक भागको पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग असा

१ । १८

स । ३ । १२ - ३ । २ १ ताको प्रथमस्थिति विषे असंख्यात गुणा क्रमकरि देना । तहां याको
७ । ८। ओ । प । ओ । प

३

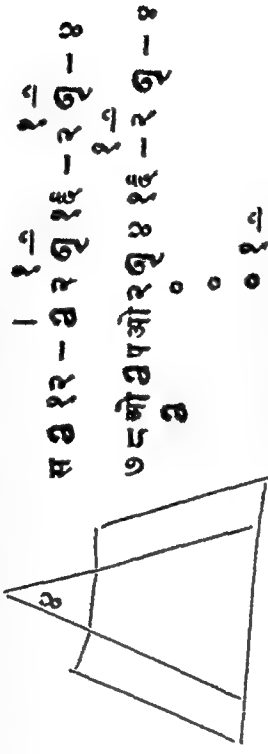
पिच्यसीका भाग देइ एक ब्यारि आदि करि गुणें प्रथमादिनिषेक होइ हैं । बहुरि बहुभाग
१८ १८

असैं स । ३ । १२ - ३ । २ १ । प याको द्वितीय स्थिति विषे हीन क्रमकरि देना । तहां
७ । ८। ओ । प । ओ । प

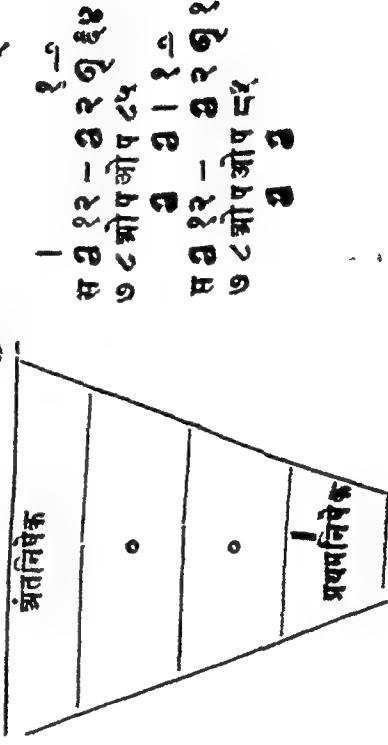
३

याकी स्थिति अंतर्मुहूर्तमात्र तामें अतिस्थापनावली घटाएं गच्छ असा २ ७ - ४ सो तिस
द्रव्यविषे एक हीनको न गिणि पल्यके असंख्यातवां भागका अपवर्तनकरि ताको गच्छका अर
एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहीनिका भाग दीएं चय होइ । ताको दोगुणहा-

निकरि गुणै प्रथम निषेक अर गुणकारविषै क्रमतै एक आदि घटाए अंतविषै एक घाटि गच्छमात्र घटाए अन्य निषेकनिविषै दीया द्रव्य हो हे । तहां संहष्टिविषै नीवै अधिक क्रम लीए प्रथम स्थितिकी रचनाकारि ताके उपरि अंतरायामकी शून्यरूप संहष्टिकरि ताके उपरि द्वितीय स्थितिकी वा तहां अंतस्थापनावलीकी संहष्टि करी है । बहुरि आगे प्रथम द्वितीय स्थितिके निषेकनिविषै दीया द्रव्यकी संहष्टि जाननी ।



स ३ १२ - ३ २ ७ १६ १ - २
७ ८ ओ प ओ २ ७ - ४ १६ - २ ७ - ४



बहुरि कृष्टि करणका प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनिका प्रमाणविषै अन्य समयनिविषै
कीनी कृष्टिनिका प्रमाण मिलावनके अर्थि उपरि अधिककी औसी (।) संदृष्टि कीएं स-
र्वकृष्टिनिका प्रमाण औसा ४ याकौ पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभाग औसा

। १८

४ प उदयरूप कृष्टिनिका प्रमाण है । अवशेष एक भाग औसा ४ याकौ पल्यका असंख्या-

ख ३

प

३

१८

तवां भागका भाग देइ बहु भाग औसे ४ प तिनिके आधे प्रमाण लीएं तो कृष्टि करण

३

ख ५ प

३३

कालका अंत समयविषै कीनी जे आदिकी जघन्यादि कष्टि ते अनुदय रूप हैं । बहुरि

। १८

आधे औसे ४ प याविषै रखा एक भाग औसा ४ मिलावनेकौ अगिला गुणकारविषै

३

ख ५ प २

३३

ख ५ प

३३

दोयकरि भाजित एक घाटि या तहां दोयकरि भाजित एक अधिक कीएं औसा ४ प

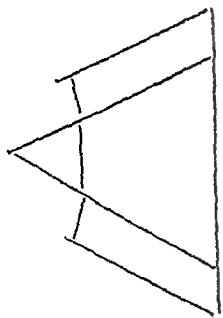
३
अ प प २
३ ३

प्रमाण लीएं कृष्टि करण कालका प्रथम समयविषैं कीनी अंतकी उत्कृष्ट पर्यंत कृष्टितैं अ-
नुदयरूप हो है । इहां पल्यका असंख्यातवां भागकी सहनानी पांचका अंक कीएं जो एक

भाग औसा ४ । या ताकौ पांचका भाग देइ बहुभागके आधे औसे ४ । २ अर इनिविषैं
स्व प ५

एक अवशेष भाग मिलाएं औसैं हो है ४ । ३ औसैं सुक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषैं उदय
स्व प ५ ३

अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण जानना । इहां रचना औसी-



अन्यनिषेक	अनुदय	उदय	अनुदय
प्रथमनिषेक	१ ४ २ ख प ५ ३	१ २ ४ प ख ३	१ ४ ३ ख प ५ ३

प ३

इहां प्रथम स्थिति अंतरायाम द्वितीय स्थितिका पूर्ववत् रचनाकरि प्रथम स्थितिका प्रथम समय संबंधी निषेकानिकी कृष्टिनिविषै आदिकी जघन्यादि अनुदय कृष्टिका अर उभय आवने योग्य वीचिकी कृष्टिनिका अर अंतकी उत्कृष्ट पर्यंत अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण लिखा है । बहुरि सूक्ष्मसांपरायका द्वितीय समयविषै पूर्वोक्त अंतकी अनुदय कृष्टिनिकों पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र कृष्टि ऐसी ४ । ३ नवीन अनुदयरूप हो है । ते ए कृष्टि प्रथम समयकी उदय कृष्टिनिविषै अंतकी कृष्टि जानना । ब-

ख। प। ५। प
३ ३

दुरि पूर्वोक्त आदिकी अनुदय कृष्टिनिका पत्यका असंख्यातवां भागमात्र कृष्टि ऐसी-
 ४।२ नवीन उदयरूप कृष्टि हो हैं। ते ए कृष्टि प्रथम समयकी अनुदय कृष्टिनिविषे अंत
 का।प।५।५ ३ ३
 की कृष्टि जाननी। बहुरि इहां नवीन अनुदय कृष्टिनिविषे नवीन उदय कृष्टिनिका प्र-
 माण घटाएं ऐसा ४।१ विशेषकरि घटता द्वितीय समयविषे उदय कृष्टिनिका प्रमाण
 का।प।५।५ ३ ३
 हो है। अंसैं ही तृतीयादि समयनिविषे विधान जानना, तिनकी रचना कथन अनुसार ऐसी-

क्र. सं.	केंद्रनाम	स्थिति	प्रकार	अनुसंधान	अनुसंधान	अनुसंधान	अनुसंधान
०							
	द्वितीयसमय						
	प्रथमसमय						

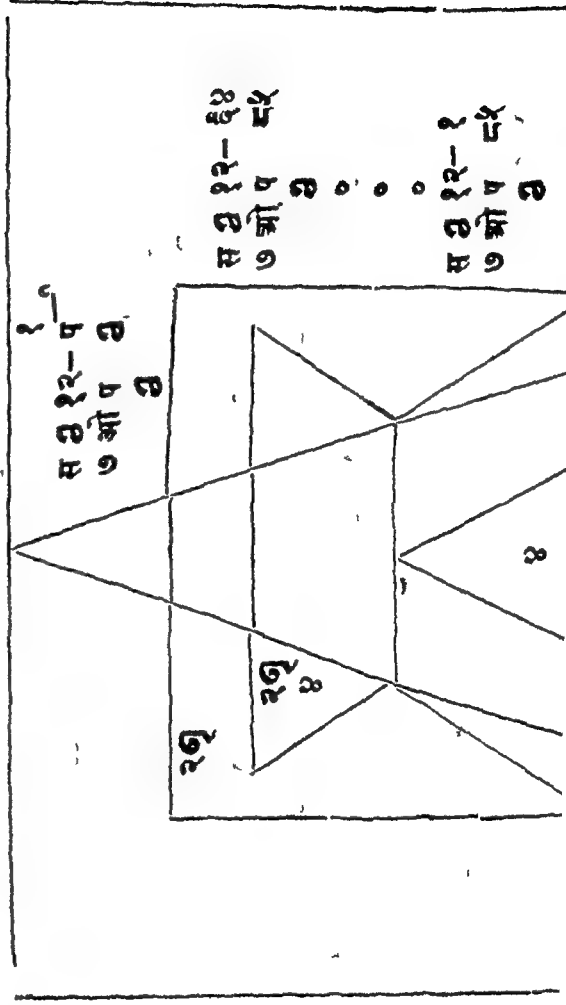
इहाँ पूर्वोक्त प्रकार प्रथम स्थित्यादिककी सहायिकादि तन्मा मध्यम समग्र कमसे आदिक अनुसंधान छुटि घटती बीचकी उदय छुटि विशेष हीन अंतकी अनुसंधान छुटि संबंधी अंतर्गत.

द्वारका भाग देह एक भागको पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीपं एक भाग औसा-
स । ३ । १२ - ताको गुणस्थान काल अंतर्मुहुर्ते ताका संख्यातवां भाग औसा २ १ ताविषे
७ । ओ । प ३

१-२

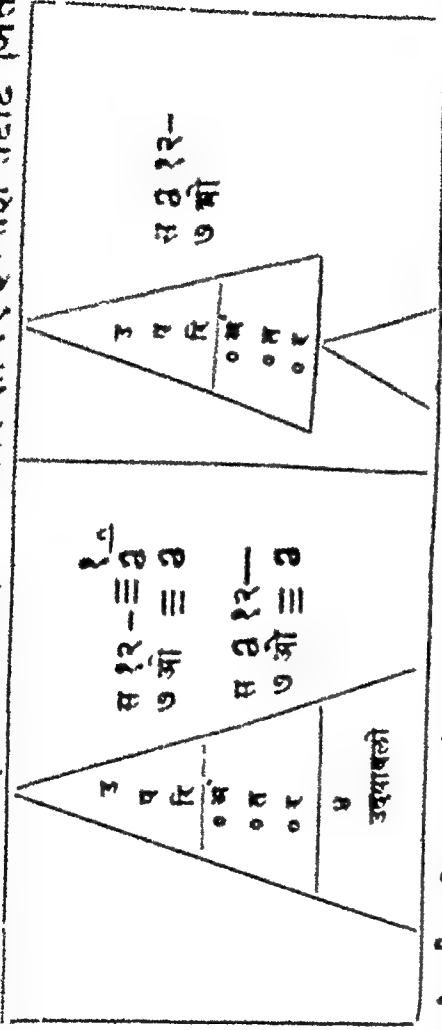
गुणश्रौणि विधानकरि द्रव्य देना । बहुरि बहुभाग औसे स । ३ । १२ - प उपरितन स्थिति
७ । न । ओ । प ३

विषे विशेष घटता क्रमकरि देने तहां संहति औसी-



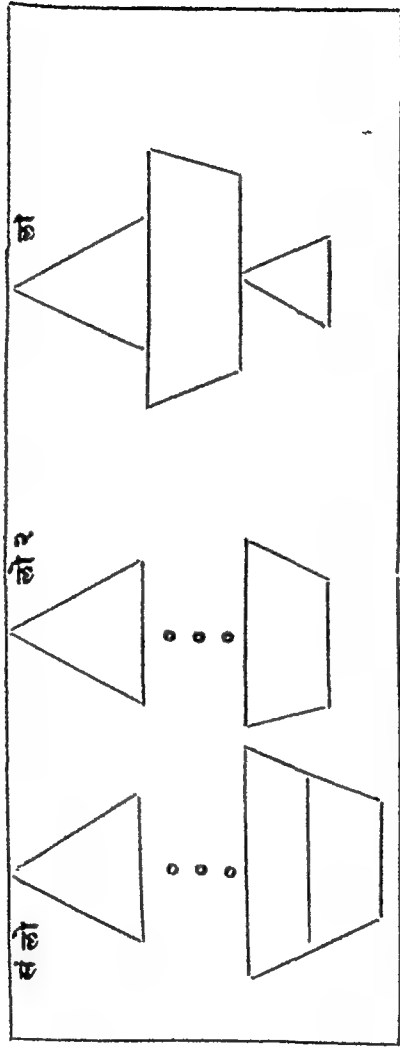
लोकका भाग देह एक भागको उदयावलीविषे देह बहुभाग उदयावलीतें बाह्य जो अंतरा-
साम अर द्वितीय स्थिति विषे हीन क्रमकरि दीजिए हे । बहुरि उदय रहित मोह प्रकृतिका

द्रव्य औसा स १ ३ १ २ - ताकों अपकर्षण करि उदयावलीतें बाह्य निषेक अर अंतरायाम
अर द्वितीय स्थिति विषे पूर्वोक्त प्रकार हीन कम करि दीजिए हे । तहां संहति औसी—



इहां सर्वत्र हीन कम करि द्रव्य दिया हे । तातें हीन कमरूप संहति करी । तहां उद-
यावली आदिका विभागके अर्थि वीचिमें लीककी संहति करी हे । बहुरि अद्वाक्ष्य नि-
मित्ततें उपशांत कषायस्यो पडि सूक्ष्मसांपरायविषे आवै तहां प्रथम समयविषे उदयवान सं-
ज्वलन लोभका द्रव्यको अपकर्षण करि ताका पत्यको अमंख्यातवा भागका भाग देइ एक
भागको उदयादि गुणश्रेणि आयामविषे गुणकार कम करि देइ ताके उपरि अंतरायामविषे
न देइ ताके उपरि तिनके बहुभागानिको द्वितीय स्थिति विषे विशेष हीन कम करि दीजिए
हे । बहुरि उदय रहित अप्रत्याख्यान अत्याख्यान लोभका द्रव्य अपकर्षण करि पूर्वोक्त प्रकार
उदयावली बाह्य गुणश्रेणि आयामविषे देना । अंतरायाम विषे न देना । उपरितन स्थिति विषे

देना । बहुरि ज्ञानावरणादि छह कर्मनिका द्रव्य अपकर्षण करि उदयावलीविषे हीन क्रमक-
रि गुणश्रेणि आयामविषे गुणकार क्रमकरि उपरतिन स्थितिविषे हीन क्रमकरि देना । ता-
की संछष्टि रचना ऐसी-



इहां दीया द्रव्यकी संछष्टि यथा संभव जानि लेनी । बहुरि सूक्ष्मसांपरायका प्रथम
ममयविषे सर्व छष्टि ऐसी ४ ताकौ पल्यका असख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभागमात्र
ऐसी ४ प उदयछष्टि है । बहुरि एक भागकौ अंक संछष्टि अपेक्षा पांचका भाग देहदोय

१२

३

ख प

३

भागमात्र आदि छष्टिविषे अनुदयरूप है । तीन भागमात्र अंत छष्टिविषे अनुदयरूप हैं ते ऐसी

१।२ ४।३ बहुरि द्वितीय समयविषे आदि कृष्टिनिर्को पल्यका असंख्यातवां भागका भाग
क।प।५ क।प।५ ३

दीएं एक भागमात्र उदय कृष्टिनिविषे आदि की नवीन कृष्टि अनुदय कृष्टिरूप हो है। बहुरि अंत-
की अनुदय कृष्टिनिर्को तैसैं ही भाग दीएं एक भागमात्र अंतकी अनुदय कृष्टिनिविषे नवीन
कृष्टि उदयरूप हो हैं। इहां पूर्व उदय कृष्टिनिविषे घटी कृष्टि औसी ४।२ अर बंधी कृष्टि
क।प।५।५ ३ ३

औसी ४।३ बंधीमें घटाएं इतनी ४।१ इहां पूर्व उदय कृष्टितै अधिक इहां
क।प।५।५ ३ ३

उदय कृष्टि जाननी। औसैं ही तृतीयादि समयनिविषे कम जानना। तहां संहृष्टि रचना औसी-

आधिको अनुदयकृष्टि	मध्यको उदयकृष्टि	अन्तको अनुदयकृष्टि

इहां आदि अनुदयकृष्टि अधिक क्रमरूप मध्य उदयकृष्टि विशेष अधिक रूप अंत

अनुदयकृष्टिहीन क्रम रूप जाननी । बहुरि अनिवृत्ति करण लोभ वेदक कालादिविषे गुणश्रेणि
आदिकी सुगमसेदृष्टि हे । बहुरि क्रोधवेदक कालका प्रथमसमयविषे क्रोधका द्रव्य असा स ७।१२-

ताको अपकर्षण भागहारका भाग दीएं असा स ७।१२ - याको पत्यका असंख्यातवां
७।८।को

भागका भाग दीएं एक भाग असा स ७।१२- उदयादि गुणश्रेणि आयामविषे गुणकार
७।८।को

क्रमकरि देना । तहां याको अंक संदृष्टिकरि पिच्यसीका भाग देह एक आदिकरि गुणें प्रथ-
मादि निषेक हो हैं । बहुरि बहुभागनिविषे केता इक द्रव्य देह अंतरायामको पूरे है । तहां
क्रोध द्रव्यको साधिक ब्योढ गुणहानिका भाग दीएं द्वितीयादि स्थितिके प्रथम निषेकका
द्रव्य असा स ७।१२ - याको अंतरायामका गच्छ असा २ ७ करि गुणें समपट्टिका
७।८।१२

घन असा स ७।१२ - । २ ७ बहुरि तिस प्रथम निषेकका द्रव्यको दोगुणहानिका भाग
७।८।१२

दीएं चय होइ ताको दोगुणहानि कीएं तिसतें नीचली गुणहानिका चय असा स ७।१२-२
७।८।१२

याको एक अधिक गच्छकरि अर गच्छका आधाकरि गुणें उत्तर घन असा-

स ७।१२ - २ । २ ७ । १ ७ मिलावनेको समपट्टिका घन उपरि साधिककी संदृष्टि असी
७।८।१२।१२

(१) कीएं अंतरायामविषं दीया द्रव्य ऐसा स । ३ । १२ - २ १ याकौ गच्छ ऐसा २ १

७।८।१२

ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ ताकौ दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम निषेक अर तिस गुणकारविषं एक एक क्रमत्तें घटाइ अंतविषं एक घाटि गच्छकौ घटाए अन्य निषेक हो है । बहुरि तिन बहुभागनिविषं इतना द्रव्य घटावनेकौ आगैं ऐसी (—) संक्षिप्त कीएं अवशेष उपरितन स्थितिविषं दीया द्रव्य ऐसा—

स । ३ । १२ - ५ - इहां गुणकारका हीनपनाकौ न गिणि पत्यका असंख्यातवां भागका
७ । ८ । ओ । ५ ३

अपवर्तन कीएं ऐसा स । ३ । १२ - याकौ साधिक ब्योढ गुणहानिका अर दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ ताकौ दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम गुणहानिका प्रथम निषेक अर याकौ आधा अन्योन्याभ्यस्तराशि ऐसा ५ का भाग दीएं अर तिस दोगुणहानिका गुणकार-

३ २

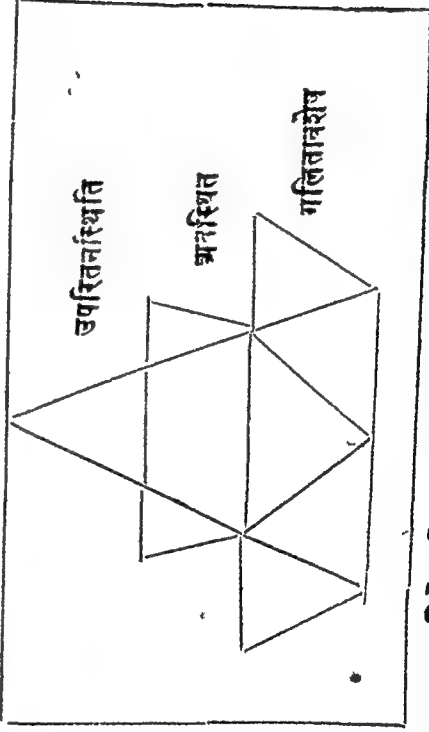
१८

विषं एक घाटि गुणहानि आयाम ऐसा— ८ घटाएं अंत निषेकका द्रव्य हो है तहां संक्षिप्त रचना ऐसी—

४	स ३ १२-१६-८ ७ ८ ओ १६ प १६ ० ० ३ २
०	स ३ १२-१६ ७ ८ ओ १२ १६
०	स ३ १२-२७ १६ ७ ८ २७ १६-२७ ० ० १ १ स ३ १२-२७ १६-२७ ७ ८ २७ १६-२७
०	स ३ १२-६४ ७ ८ ओ प ८५ ० ० ३ स ३ १२-१ ७ ८ ओ प ८५

इहां नीचै गुणश्रेणिके वीचि अंतरायामका उपरितन स्थितिकी अंतविषं अतिस्वाप-

नावलीकी संहष्टिकरि आगे दीए द्रव्यनिकी संहष्टि करी है । बहुरि संज्वलन मानादिक
तीनका द्रव्य असा-स । ७ । १२ - ३ याविषै अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यानका द्रव्य असा-
स । ७ । १२ - ८ मिलावनेकी साधिककी संहष्टि कीएँ असा, स । ७ । १२ - ३ याकी
७ । १२ । १७
अपकर्षणकरि उदयावली बाह्य गुणश्रेणि आयामविषै अर अंतरायामविषै अर उपरितन
स्थितिविषै दीया द्रव्य पूर्वोक्त विधान जानि संहष्टि जाननी । बहुरि स्थिति बंधादिकी
संहष्टि सुगम है । तहां संख्यातकी सहनानी पांचका अंक इत्यादि यथासंभव जानि लेना
बहुरि उतरनेवाले सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषै प्रारंभी गलितावशेष गुणश्रेणिका
आयामतैं अधःकरणका प्रथम समयविषै आरंभी अवस्थित गुणश्रेणि आयाम संख्यात
गुणी है तहां संहष्टि असा-



इहां क्रम हीन रूप निषेकनिकी संहष्टिकरि तहां स्तोक प्रमाण लीएँ गलितावशेष अर

बहुत प्रमाण लीएं अवस्थित गुणश्रेणि आयामकी संहति अधिक क्रूररूप करी है । असे उपशम श्रेणिके उतरनेका विधानकी संहति कही ।

बहुरि उपशम श्रेणि चढनेवालोंके क्रमते नपुंसकवेद स्त्रीवेद सप्त नोकषाय तीन क्रोध तीन मान तीन माया तीन लोभ एक सुक्ष्म लोभका उपशमावना क्रमते हो है । विशेष इतना — नपुंसक वेद सहित चढनेवालेके स्त्रीवेदका उपशमन कालविषे नपुंसक वेदका भी उपशमावना हो है । तहां क्रोध सहित श्रेणि चढ्याके क्रोध पर्यंतकी प्रथम स्थिति पहलें होइ । उपरि मानादिककी जुदी जुदी प्रथम स्थिति हो है । बहुरि मान माया लोभ सहित चढनेवालोंके क्रमते मान माया लोभ पर्यंतनिकी प्रथम स्थिति पहलें होइ । उपरि अवशेषनिकी जुदी जुदी प्रथम स्थिति हो है । तहां प्रथम स्थितिविषे अधिक क्रम लीएं द्रव्य दीजि ए है । ताते तिनकी अधिक क्रम लीएं ऐसी संहति रचना हो है—

लो १	लो १	लो १	लो १	लो १		
लो ३	लो ३	लो ३	लो ३	लो ३		
या ३	या ३	या ३	या ३	या ३		
मा ३	मा ३	मा ३	मा ३	मा ३		
को ३	को ३	को ३	को ३	को ३		
नो ७	नो ७	नो ७	नो ७	नो ७		
खो	खो	खो	खो	खो		
न	न	न	न	न		
न	को	पुं	कोषोष्य	मानोष्य	प्रायोष्य	लोमोष्य

बहुरि उपशम श्रेणिका चढनो वा पडनोका कालका अल्प बहुत्वविषे संहति पूर्वोक्त प्रकार वा एकवार आदि अधिककी उपरि एक दोय आदिवार ऊभी लीकने आदि देकरि कथनके अनुसारि औसी संहति जाननी-

औसैं उपशम चारित्राधिकारविषे संहति जाननी ।

इति श्री लक्ष्मिभारतीका अनुसारि उपशम श्रेणिसहित
व्याख्यानकी संहति संपूर्ण भई ।

पृष्ठ १०२ (क) में देखो

अथ क्षपणासारका अनुसारि लीपं क्षपक श्रेणिका व्याख्यानरूप लब्धिसारके सूत्र-
निका अर्थकी संहति लिखिए है तहां अपूर्व करणविषै गुणश्रेणि गुणसंक्रमण स्थितिकांडक
अनुभाग कांडककी संहति उपशम श्रेणिवत् इहां अर विशेष है तिनकी यथा संभव संहति
जाननी । इहां सत्वद्रव्य विषै गुणश्रेणि आदि वा बंध द्रव्यकी संहति औसी—

शब्द १०३ (क) में देलो

इहां प्रकृति अष्ट आदि क्रमतै जैसे क्षये है तैसे क्रमतै तिनके सत्व रूप निषेकानिकी क्रम
हीन संहतिकरि तिनविषै नीचै उदयावलीकाँ हीन क्रमरूप वीचि गुणश्रेणि आयामकी अधिक
क्रमरूप उपरि उपरितन स्थितिकी हीनक्रमरूप रचना जाननी । बहुरि पुरुषवेद अर क्रोध
की प्रथमस्थिति स्थापी ताकी जुदी हीन क्रमरूप संहति दिखाइए है । बहुरि इस रचनाके
वीचि वीचि पुरुषवेद अर क्रोधादिकका बंध द्रव्यकी जुदी संहति औसी ^१ दिखाई है । इहां नीचै
आवाधा उपरि निषेकानिकी संहति जाननी । बहुरि ताके आगे अवशेष कर्मनिकी क्रमहीन
रूप सत्व निषेक रचनाविषै नीचै उदयावली वीचि गुणश्रेणि उपरि उपरितन स्थितिकी रचना
जाननी । बहुरि ताके आगे अवशेष कर्मनिका बंध द्रव्यकी संहति है । तहां नीचै आवाधा
ऊपरि निषेकानिकी रचना जाननी । बहुरि अनिवृत्ति करणविषै स्थिति बंधापसरणादिककी
संहति सुगम है । बहुरि अष्ट कषाय सोलह प्रकृतिकी क्षपणा अंश देशघाति करण अंतर करण
विषै संहति पूर्वोक्त प्रकार वा विशेष है । ताकी संभवती संहति जाननी । बहुरि नपुंसक
वेदका संक्रमण कालविषै पूर्वोक्त प्रकार नपुंसक वेदका सत्व द्रव्य औसास । ३ । १२ — ४२
ताकाँ गुण संक्रमका भाग दीपं पुरुषवेदविषै संक्रमणरूप भया द्रव्यका प्रमाण हो है । अर

पूर्वोक्त प्रकार पुरुषवेदका सत्व द्रव्य ऐसा स ३।१२ - २ ताकौ अपकर्षण भागहार अर
७।१०।४८
पत्यका असंख्यातवां भाग अर अंक संहृष्टि अपेक्षा पिच्यसीका भाग दीएं गुणश्रोणिका
प्रथम निभेक होह । तिसविषे पूर्व सत्व निषेक साधिक कीएं पुरुषवेदका उदय द्रव्य हो है ।
बहुरि समय प्रवद्ध ऐसा स ३ ताकौ सातका भाग दीएं मोहका अर ताकौ दोयका भाग
दीएं पुरुषवेदका बंध द्रव्य हो है । इनकी संहृष्टि औसी-

सक्रमण नपुसक	स ३।१२ - १४२
द्रव्य	७।१०।४८।गु
उदयपुषेव द्रव्य	स ३।१२ - १२ ७।१०।४८।ओ।५८५
बधपुषेव द्रव्य	स ३ ७।२

बहुरि अश्वकर्ण विषे अंक संहृष्टिकरि जैसैं व्याख्यानविषे कथन कीया तैसैं इहां अर्थ संहृष्टि-
करि पूर्व अनुभाग सत्व एक गुणहानि संबंधी स्पर्धक शलाका (९) कौ नानागुणहानिकरि गुणे
मानके स्पर्धक औसे (९।ना) याकौ अनंतका भाग देहक्रमतैं एक दोय तीन अधिक अनंत
करि गुणे क्रोध माया लोभके औसे ९।ना।स्व।९।ना।स्व।९।ना।स्व।बहुरि इहां क्रो-
धादिकका गुणकार उपरि एक दोय तीन अधिक थे तिनकौ जुदे कीएं ते औसे-
९।ना।९।ना।२।९।ना।३।मानकौ गुणकार विषे अधिक हे नहीं तहां अन्य लिखनी

बहुरि क्रोधका जुदा कीया अधिकका प्रमाण अर अधिक जुदेकरि अपवर्तन कीएं क्रोधके
 जैसे १। ना स्पर्धकानिकों अनंतका भाग देह बहुभाग जैसे १। ना। स्व इनिकों मिलाएं
 क्रोध कांडकका प्रमाण हो है। अवशेष एक भागमात्र ऐसा १। ना अवशेष सत्व क्रोधका रहे
 है। बहुरि तिस क्रोध संबंधी बहुभागनिका प्रमाण अर अवशेष एक भागका अनंत बहुभा-
 ग ऐसा १। ना। स्व स्व मिलाएं मान कांडकका प्रमाण हो है। अवशेष एक भागमात्र ऐसा-
 १। ना अवशेष सत्व रहे है। बहुरि जुदा कीया मायाके अधिकका प्रमाण अर क्रोध संबंधी
 मान संबंधी कहे थे बहुभाग तिनिका प्रमाण अर मान संबंधी अवशेष सत्व एक भाग मात्र
 ताका अनंत बहु भागनिका प्रमाण ऐसा १ ना स्व। मिलाएं मायाकांडकका प्रमाण हो है
 अर अवशेष एक भाग ऐसा १। ना अवशेष सत्व रहे है। बहुरि जुदा कीया लोभका
 अधिकका प्रमाण अर क्रोध मान माया संबंधी कहे थे बहुभाग तिनका प्रमाण अर तिस
 मायाका अवशेष सत्व एक भागमात्र ताका अनंत बहुभागनिका प्रमाण ऐसा १। ना। स्व

इति सवर्निकौ मिलाएँ लोभ कांडकका प्रमाण हो है । अवशेष एक भागमात्र औसा १ । ना
अवशेष सत्व रहे है । औसै इहां उपरि जुदे कीएं अधिकनिका प्रमाण लिखि नीचै अन्य मिलाएँ
तिनका प्रमाण लिखना । तिनको जौडे कांडक प्रमाण हो है औसै समझना । बहुरि इस
कांडकघात भएँ पीछे अश्वकरणविषे अनंत गुणहानि लिएँ क्रोधादिकके स्पर्धक क्रमरूप हो
है । तिनका प्रमाण नीचै ही नीचै लिखना । औसै कीएं औसी संहि हो है-

क्रो	मा	धा	लो
९ । ना । १ ख	० ०	९ । ना । २ ख	९ । ना । ३ ख
९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख
९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख
९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख
९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख
९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख
९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख
९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख
९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख	९ । ना । १ ख

बहुविह इस अपकर्षण सहित अपूर्व स्पर्धक क्रिया हो है । तहाँ एक परमाणुविषै अविभाग प्रतिच्छेदका समूह वर्ग ताकी संहति ऐसी (व) याकों वर्गणा प्रति जो चय ताका नाम विशेष है ताकारि गुणै ऐसा (व । वि) बहुविह एक स्पर्धकविषै जेती वर्गणा पाइए तिनका नाम वर्गणा शलाका है । ताकी संहति ऐसी (४) बहुविह एक गुणहानिविषै स्पर्धकनिका प्रमाण ताका नाम स्पर्धक शलाका ताकी संहति ऐसी (९) हनि दोऊनिकों परस्पर गुण गुणहानि आयाम होइ ताकी अंक संहति ऐसी (८) याकों दोयकारि गुणै दोगुणहानि की संहति ऐसी १६ याकारि तिस विशेषकों गुणै प्रथम स्पर्धककी ऐसी व वि १६ याकों दुणा कीए द्वितीय स्पर्धककी आदि वर्गणाकी ऐसी व वि १६ २ बहुविह तिसहीकों तिगुणा कीए तृतीय स्पर्धककी आदि वर्गणाकी संहति ऐसी व वि १६ ३ ऐसीही क्रमतै प्रथम समय विषै कीए अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण स्पर्धक शलाकाकों असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीए हो है सो ऐसा ९ याकारि गुणै अंत स्पर्धककी आदि वर्गणाकी संहति ऐसी

नो ३

व वि । १६ । ९ हो है । ऐसी ही जानि अन्य कथनकी संहति यथा संभव जानि लेनी । व नो ३

हुविह क्रोधके अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण पूर्वोक्त ऐसी ९ याकों अनंतका भाग देइ क्रमतै

एक दोय तीन अधिक करि गुणै मान माया लोभके अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण हो है ते ऐसी

१-	२-	३-
९ । ख नो ३ ख	१ । ख नो ३ ख	६ । ख नो ३ ख

बहुरि क्रोध कांडक अनंत प्रमाण औसा (स्व) यातें एक दोय तीन अधिक मानादिकका कांडक औसा १।२।३ बहुरि पूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदनिकी अनंतका भाग दीएं अपूर्व स्पर्धककी अंत वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद व्याख्यो कषायनिके समान है। तिनकी डहाछि औसी व याकी अपने अपने अपूर्व स्पर्धकनिके प्रमाणका भाग दीएं आदि वर्गणा हो है। यादीकी जघन्य वर्गणा कहिए। बहुरि याकी दोय तीन आदि क्रमतें एक एक बंधता गुणकार करि गुणें जहां अपने अपने कांडक प्रमाणका गुणकार होइ तहां व्याख्यो कषायनिकी वर्गणानिके समान अविभाग प्रतिच्छेद हो हैं। बहुरि ताके उपरि तैसे ही एक एक बंधता गुणकार रूप क्रमतें तिन समान वर्गणानिके अविभाग प्रतिच्छेदनितें दूणा प्रमाण भए समान वर्गणा हो है। औसैं ही तिनतें तिगुणा चौगुणा आदि एक घाटि अनंत गुणा पर्यंत प्रमाण होइ। ताके उपरि अंत स्पर्धकविषे पूर्वोक्त औसा व व्याख्यो कषायनिकी आदि वर्गणानिविषे समान अविभाग प्रतिच्छेद हो है। तिनकी सहाछि औसी—

को व ख ० ०	या व ख ० ०	भाया व ख ० ०	लो व ख ० ०
ज। ख। २ ० ० ०	१-१५ ज। ख। ० ० ०	२-१५ ज। ख। ० ० ०	३-१५ ज। ख। ० ० ०
ज। ख। २ ० ० ०	१-२ ज। ख। ० ० ०	२-२ ज। ख। ० ० ०	३-२ ज। ख। ० ० ०
ज। ० ख ० ० ०	१- ज। ख। ० ० ०	२- ज। ख। ० ० ०	३- ज। ख। ० ० ०
घ ख। १। ० ० ०	ख। ६। ख ० ० ०	घ० २- ख। ६। ख ० ० ०	घ० २- ख। ६। ख ० ० ०
ओ ३	ओ ३ ख	ओ ३ ख	ओ ३ ख

तहां मध्य भेदनिकी संहृष्टि विंदी जाननी ।

बहुरि प्रथम वर्गणाकौ अनुभाग संबंधी व्योढ गुणहानिकरि गुणै मोहका सत्त्व द्रव्य
 असाव । १२ याकौ आवलीका असंख्यातवां भागकी सहनानी नवका अंक ताका भाग
 देइ एक भाग जुदा राखि बहुभागनिके दोय भाग करने । तहां एक भागविषै जुदा राख्या
 भाग मिलाएं साधिक आधा द्रव्य कषायनिका असाव १२ किंचिदून आधा द्रव्य नोकषाय

निका औसा-व । १२ - हो है । बहुरि कथायनिके द्रव्यविषै साधिक चौथा भागमात्र लाभ का द्रव्य है । किंविदून चौथा भागमात्र मायाका तातैं किंविदून क्रोधका तातैं किंविदून मानका द्रव्य है । इहां इस व्यारिका भागहारकों पूर्व दोयका भागहारकरि गुणै आठका भाग हार हो है । बहुरि क्रोधका द्रव्यविषै नोकथायनिका द्रव्य समच्छेदकरि मिलाणं क्रोधका द्रव्य पांच गुणा हो है । तिनकी संहष्टि औसी-लो माया मा को. बहुरि

$$\frac{व १२}{८} = \frac{व १२ - ८}{८} = \frac{४}{८} = \frac{१}{२}$$

इहां लोभके द्रव्यकों अपकर्षण भागहारका भाग दीणं अपकृष्ट द्रव्य औसा व १२ तहां लो-
भकी पूर्व स्पर्धककी वर्गणाकों अपकर्षण भागहारका भाग दीणं औसा व औसैं ही दोय घाटि
अपकर्षण भागमात्र पूर्व स्पर्धककी वर्गणानिका अपकर्षण कीया द्रव्य औसा व औ-२ यामें
आदि वर्गणाका अपकृष्ट द्रव्य मिलावनेकीं दोय घाटिकी जायगा एक घाटि कीणं औसा
व । औ - १ इतना द्रव्य ग्रहि अपूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणा निपजाइए है । सो यहू पूर्व
स्पर्धककी आदि वर्गणाके समान है । जातैं तहां भी तिस वर्गणाकों अपकर्षण भागहारका
भाग देह एक भाग ग्रहें बहुभागमात्र द्रव्य अवशेष रहे है । सो इतना ही यहू है । बहुरि
अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण औसा ९ अर एक स्पर्धकविषै वर्गणानिका प्रमाण औसा [४]
औ । २

इनकों परस्पर गुणें सर्व अपूर्व स्पर्धकनिकी वर्गणाका प्रमाण औसा १। ४ भया । इहां स्प-
ओ । ३

र्धक शलाकाकी सहनानी नवका अंक अर वर्गणा शलाकाकी न्यारिका अंक तिनकों पर-
स्पर गुणें गुणहानि होइ ताकी सहनानी आठका अंक कीएं औसी ८ संहष्टि हो है ।

याकरि तिस आदि वर्गणाकों गुणें समपट्टिका घन औसा व ओ - १ । ८ हो है । बहुरि पूर्व
ओ । ओ । ३

स्पर्धककी आदि वर्गणाकों दोगुणहानिका भाग दीएं ताका चय होइ । तातैं दूना अपूर्व
स्पर्धकनिकी वर्गणानिविधें चयका प्रमाण है । तातैं तिस आदि वर्गणाकों एक गुणहानिकी
सहनानी आठका अंक ताका भाग दीएं इहां चय औसा व । ओ - १ याकों आदि उत्तर
ओ । ८

स्थापि अपूर्व स्पर्धक वर्गणा प्रमाणकों गच्छ स्थापि जोड़ें जो चय घन भया ताकों मिला-
वनेके अर्थि तिस समपट्टिका घनकी संहष्टि उपरि साधिककी संहष्टि कीएं औसा -

व । ओ - १ । ८ बहुरि याके गुणकार भागहारकों ल्योडकरि गुणें औसा व । १२ । ओ - १
ओ । ओ । ३

द्रव्यतौ अपूर्व स्पर्धकनिहीविधें दना बहुरि लोभका अपकर्षण कीया द्रव्य औसा व । १२
८ । ओ

इहां मोहका सर्व द्रव्यकी अपेक्षा आठका भागहार था अर लोभहीकी वर्गणाकों ल्योड
गुणहानिकरि गुणें लोभका द्रव्य होइ । ताकों अपकर्षण भागहारका भाग दीएं औसी व १२
ओ

संहृष्टि हो है । याविषं पूर्वोक्त द्रव्य औसा व । १२ । ओ — १ घटावनेकों औसा ओ । ३ । ३
ओ । ओ । ३ । ३

करि समच्छेद कीएँ यहु औसा व । १२ । ओ । ३ ३ भया । बहुरि यकें अर तिस घटावने
को । ओ । ३ ३ ३

योग्य द्रव्यकें अन्य समान जानि औसा ओ । ३ । ३ गुणकारविषं औसा ओ — १ घटावनेकी
आगें संहृष्टि कीएँ घटाएँ पीछे अवशेष द्रव्यकी संहृष्टि औसी व । १२ । ओ । ३ ओ — १ संहृष्टि
ओ । ओ । ३ । ३ । ३

हो है । बहुरि अपूर्व स्पर्धक वर्गणा संबंधी एक शलाका अर याका भाग पूर्व स्पर्धक वर्गणा शला-
काकी देना । तहां गुणहानिकी संहृष्टि आठका अंक ताकों ड्योढकरि गुणें पूर्व स्पर्धक वर्गणा
शलाका औसी ८ । ३ याकों अपूर्व स्पर्धक वर्गणा शलाका औसी ८ का भाग दीएँ औसा
८ । ३ इहां गुणहानिका अपवर्तन कीएँ अर भागहारका भागहार औसा ओ ताकों राशिका
८ । ३ ३

गुणा कीएँ औसी ओ । ३ । ३ अपूर्व स्पर्धक संबंधी शलाका भई । यामें अपूर्व स्पर्धक शलाका
एक अधिक कीएँ उभय शलाका औसी ओ । ३ । ३ याका भाग तिस अवशेष द्रव्यकों देह
को । ३ ३ ३

अपनी अपनी शलाका करि गुणें पूर्व स्पर्धक संबंधी द्रव्य ऐसा-
व । १२ । ओ । १ । ३-ओ-१ ओ १ ३ याविधैं ऐसा ओ । १ । ३ का अपवर्तन कीएं ऐसा-

ओ । ओ । १ । ३ । ओ । १ । ३ । ३

व । १२ । ओ । १ । ३-ओ-१ ओ १ ३ हो हे । बहुरि अपूर्व स्पर्धक संबंधी द्रव्य ऐसा-

ओ । ओ । १ । ३ । ओ । १ । ३ । ३

व । १२ । ओ । १ । ३-ओ-१ याकों पूर्वोक्त अपूर्व स्पर्धकविधैं देने योग्य द्रव्यविधैं

ओ । ओ । १ । ३ । ओ । १ । ३ । ३

मिलावना सो पूर्व द्रव्य ऐसा व । १२ । ओ-१ सो याविधैं गुणकाररूप अपकर्षण भागहारकें

ओ । ओ । १ । ३ । ३

आगैं एक घाटि या सो दूरिकरि भागहाररूप जो अपकर्षण भागहार या ताका गुणकार

ऐसा १ । ३ विधैं एक अधिक कीएं ऐसा व । १२ । ओ । याविधैं पीछैं मिलावने योग्य द्रव्यका

ओ । ओ । १ । ३ । ३

साधिकपना जानना । बहुरि याकों अपूर्व स्पर्धक वर्गणा प्रमाण ऐसा ८ ताका भाग देना

ओ १

तहां गुणकारविधैं ओढ गुणहानि ऐसा १२ या ताका गुणहानि ऐसा ८ का भागहारकरि

१५

अपवर्तन् कीं गुणकारविषं ब्योढ रह्या अर भागहारका भागहार औसा-ओ। ३ या ताकौ राशिका गुणकार करना। औसैं कीं मध्य धन औसा व। ओ। ओ। ३ भया। याकौ

१-
ओ। ओ। ३। ३

एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीं चय होइ सो औसा-व। ओ। ओ। ३ याकौ दोगुणहानि औसा १६ करि गुणें। प्रथम वर्गणाविषं दीया द्रव्य ओ। ओ। ३। ३। १६-८ ओ। ३। ३

होइ अर इस गुणकारविषं क्रमतैं एक एक घाटि गच्छ औसा ८ अंत वर्गणाविषं दीया द्रव्य हो है। औसैं तौ अपूर्व स्पर्धक संबंधी दीया द्रव्यकी सद्दष्टि हो है।

बहुरि पूर्व स्पर्धक संबंधी दीया द्रव्य औसा व। १२। ओ। ३-ओ-१ याकौ

१-
ओ। ओ। ३। ३

ब्योढ गुणहानि औसा १२ का भाग देइ याहीका अपवर्तन कीं आदि वर्गणाविषं दीया द्रव्य हो है। बहुरि याकौ दोगुणहानिका भाग दीं विशेष होइ ताकी लघु सद्दष्टि औसी (वि) ताकौ दोगुणहानिकरि गुणि तामैं एक एक घाटि प्रथम गुणहानि पर्यंत अर गुणहानि गुणहानि प्राति आधा आधा क्रम कीं अंत वर्गणाविषं दीया द्रव्यका प्रमाण विशेषकौ एक घाटि गुणहानिकरि हीन दोगुणहानि करि गुणें अर एक घाटि नाना गुणहानि प्रमाण दूबा निका भाग दीं हो है। इनकी सद्दष्टि औसी-

[illegible]

इहां नीचें अपूर्वस्पर्धक उपरि अपूर्व स्पर्धक की रचना करि ताके आगे तिनकी वर्गणाविषे दीया द्रव्यके प्रमाण की संहति जाननी । अैसे तौ दीया द्रव्यकी संहति है । अर पूर्व स्पर्धक की वर्गणा निकाँ अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां बहुभागमात्र पुरातन द्रव्य है सो औसा-
व । ओ - १ इस पुरातन द्रव्य अर दीया द्रव्यकोँ मिलाएं पूर्व अपूर्व स्पर्धकानिका चय घ-
को

दता क्रम लिए एक गोपुच्छ हो है ऐसा जानना । बहुरि इहां क्षेत्र रचना करि इस अर्थ
 कौ दिखाया है सो टीका विधे लिखा ही है । तहां संहृष्टि सुगम है । बहुरि पूर्व स्पर्धक ह्योढ
 गुणहानिमात्र औसे (१२) तिनकी नीचें प्रथम समयविधे कीएं अपूर्व स्पर्धक गुणहानिके असं-
 ख्यातवे भागमात्र औसे ८ तिनके नीचें तिनके असंख्यातवे भागमात्र द्वितीय समयविधे
 कीएं अपूर्व स्पर्धक औसे ८ इनकी रचना औसी-
 ३ ३

୧୨		୧୨		୧୨	
୧୩		୧୩		୧୩	
୧୪		୧୪		୧୪	

ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କର ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ରକ୍ଷା ପାଇବ ବୋଲି ଆଶା କରୁଛୁ ।

इहां स्पर्धकनिकी रचनाकरि वीचिमें पूर्व स्पर्धकादिकका विभाग करनेके अर्थि लीक करी है। औसँ ही तृतीयादि समयनिविषैं नीवैं नौवैं असंख्यात गुणा घटता क्रम लीएँ अपूर्व स्पर्धकनिकी रचना करनी। बहुरि प्रथम अनुभाग कांडक घात भएँ अनुभागका अल्प बहुत्वविषैं क्रोध मान माया लोभके अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाणकी प्रथम समयविषैं कीएँ अपूर्व स्पर्धकनिकी संहष्टिके उपरि अन्य समयनिविषैं कीएँ मिलावनेके अर्थि अधिक की संहष्टि कीएँ संहष्टि हो है। अर एक गुणहानिविषैं स्पर्धक शलाकाकी अर एक स्पर्धक

विषैं वर्गणां शलाकाकी तौ पूर्वोक्त संदृष्टि जाननी अर क्रोधादिके के अपूर्व स्पर्शकनिके के आगैं वर्गणा शलाकाकी संदृष्टि कीएं तिनकी वर्गणाकी संदृष्टि हो हे। अर नानागुगहानि गुणित स्पर्शक शलाकाको कमतैं न्यारि तीन दोय एकवार अनंतका भाग दीएं लोभमाया मान क्रोधके पूर्व स्पर्शकनिका प्रमाण हो हे। तिनको वर्गणा शलाकाकरि गुणें अपना अपना वर्गणानिका प्रमाण हो हे। अैसे ए कहे तिनकी संदृष्टि औसी हे। —

क्रो अ पू	मा अ पू	या अ	लो अ	गु स्व	स्व व	क्रो व	मा व	या व
१	१- ९ स्व ओ उ	१- ९ स्व ओ उ	३- ९ स्व ओ उ	९	४	९ उ ओ उ	१- ९ स्व ओ उ	१- ९ स्व ओ उ
क्रो व	लो पू	लो पू व	या पू	या पू व	मा पू	मा पू व	को पू	को पू व
३- ९ स्व ओ उ	९ ना ९ स्व ओ उ	९ ना उ ९ स्व ओ उ	९ ना ९ स्व ओ उ	९ ना उ ९ स्व ओ उ	९ ना ९ स्व ओ उ	९ ना उ ९ स्व ओ उ	९ ना ९ स्व ओ उ	९ ना उ ९ स्व ओ उ

बहुरि इहां कोधादिकानिके पूर्वस्पर्धकनिका प्रमाणकों अनंतका भाग दीएं बहुभाग मात्र तो द्वितीय कांडक करि घात कीजिए है । एक भागमात्र अवशेष रहै है । तिनकी संदृष्टि ऐसी —

नाम	को	मा	या	लो
घातकीण स्पर्धक	१-५ ६। ना। ख ख। ख। ख	१-५ ६। ना। ख ख। ख। ख	१-५ ६। ना। ख ख। ख। ख	१-५ ६। ना। ख ख। ख। ख
अवशेष स्पर्धक	६। ना। ख। ख	६। ना। ख। ख। ख	९। ना। ख। ख। ख। ख	६। ना। ख। ख। ख। ख

असैं ही तृतीयादि कांडकविषैं क्रम जानना । बहुरि तहां अनुभागकी यथा संभव संहति जाननी
असैं अपूर्व स्पर्धक क्रिया विधानविषैं संहति कही । अब वादर कृष्टि करण विधानविषैं संह-
ति कहिए हैं—

तहां अंतर्मुहूर्तमात्र कालकों संख्यातका भाग देह बहुभागानिके तीन समान भागकरि
अवशेष एक भागका संख्यात बहुभाग प्रथम समान भागविषैं मिलाएं अवकरण काल है ।
अवशेष एक भागका संख्यात बहुभाग द्वितीय समान भागविषैं मिलाएं कृष्टि करण काल
है । अवशेष एक भाग तृतीय समान भागविषैं मिलाएं कृष्टि वेदक काल है तिनकी संहति
रचना ऐसी—

नाम	अवकरण	कृष्टिकरण	कृष्टिवेदक
समभाग	१— २ । ७ । ७ ७ । ३	१— २ । ७ । ७ ७ । ३	१— २ । ७ । ७ ७ । ३
देयभाग	१— २ । ७ । ७ ७ । ७	१— २ । ७ । ७ ७ । ७	२ । ७ ७ । ७ । ७

बहुरि व्याख्यो कषायनिकी वारह संहति हो हैं । तिनका अनुभाग जाननेको अंक संहति
अपेक्षा पूर्वे टीकामें कथन किया है । बहुरि मोहका द्रव्य औसा व १२ याकों अपकर्षण
भागहारका भाग दीएं अपकृष्ट द्रव्य औसा व १२ बहुरि वर्गणा शलाकाके अनंतवै

भागमात्र प्रथम समयविषे कीनी कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ तहां इनकी आठका भाग देह एक भाग व्याख्यो कषायनिका द्रव्य वा कृष्टिका प्रमाण हो है। तहां लोभविषे साधिक मायाविषे किंचिदून तातैं भी क्रोधविषे किंचिदून तातैं मानविषे किंचिदूनपना जानना। बहुरि व्यारिभागमात्र नोकषाय संबंधी कृष्टि क्रोधविषे मिलाएं तहां पांच भाग हो हैं। तिनकी संहृष्टि ऐसी-

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
द्रव्य	१ व। १२ ८। ओ	१ व। १२- ८। ओ	१ व। १२ = ८। ओ	१ व। १२ = ५ ८। ओ
कृष्टि	४ ख। ८	४- ख। ८	४ = ख। ८	४ = ५ ख। ८

बहुरि अपना अपना द्रव्यका चा कृष्टि प्रमाणकी पत्यका असंख्यातवां भाग का भाग देह तहां बहुभागे तीन समान भाग करने। बहुरि अवशेष एक भागकी पत्यका असंख्यातवां भागका भाग देह बहुभाग प्रथम समान भागविषे मिलाएं प्रथम संग्रहकृष्टिविषे द्रव्यका वा कृष्टिका प्रमाण हो है अर अवशेष एक भागकी तैसैं ही भाग देह बहुभाग द्वितीय समान भागविषे मिलाएं द्वितीय संग्रहविषे तिनिका प्रमाण हो है। अवशेष एक भाग तृतीय समान भागविषे मिलाएं तृतीय संग्रहविषे तिनका प्रमाण हो है। सो लोभ का इस विधानकी ऐसी संहृष्टि हो है-

लोपका	प्रथमसंग्रह	द्वितीयसंग्रह	तृतीयसंग्रह
समानभाग द्रव्य	॥ १२२॥ प-१ २४ओ॥ ३ प ३	॥ १२२॥ प-१ २४ओ॥ ३ प ३	॥ १२२॥ प-१ २४ओ॥ ३ प ३
देयभाग द्रव्य	॥ १२२॥ प-१ २४ओ॥ ३ प ३	॥ १२२॥ प-१ २४ओ॥ ३ प ३	॥ १२२॥ प-१ २४ओ॥ ३ प ३
समानभाग कृष्टि	॥ १२२॥ प-१ २४ओ॥ ३ प ३	॥ १२२॥ प-१ २४ओ॥ ३ प ३	॥ १२२॥ प-१ २४ओ॥ ३ प ३
देयभाग कृष्टि	॥ १२२॥ प-१ २४ओ॥ ३ प ३	॥ १२२॥ प-१ २४ओ॥ ३ प ३	॥ १२२॥ प-१ २४ओ॥ ३ प ३

इहां बहुभागनिविषै आठका अर तीनका भागहारकों गुणि चौईसका भागहार लि-
ख्या है। औसै ही अन्य कषायनिकी जाननी। बहुरि तहां किंचित् हीन अधिक न गिणि
अपना अपना सर्व द्रव्यका वा सर्व कृष्टिका प्रमाणकों तीनका भाग देह आठका भाग
आगै था ताकरि गुणै चौईसका भाग हो है। तहां ग्यारह संग्रहविषै तो एक एक भागमात्र
प्रमाण हो है। अर क्रोधकी तृतीय संग्रहविषै नोकषाय संबंधी द्रव्यका संक्रमण भया है तातै
ताविषै तेरह भागमात्र तिनिका प्रमाण हो है तिनकी सदृष्टि औसी-

नाम	लोम			माया			मान			क्रोध		
	प्र	वि	तृ	प्र	वि	तृ	प्र	वि	तृ	प्र	वि	तृ
समग्र	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ
द्रव्य	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ
कृष्टि	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ

बहुरि प्रथम समयविषे अपकर्षण कीया द्रव्य असा व । १२ ताकी कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छका अर
एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीए विशेष होइ । सो असा-
व । १२ याको दोगुणहानिकरि गुणै प्रथम कृष्टिविषे दीया द्रव्य होइ । बहुरि विशेष

ओ । १२ । १२-४
४ । १२-४

का जो दो गुणहानिका गुणकार ताविषे कमतै एक एक घटाइ एक घाटि गच्छमात्र घटै
अंत कृष्टिविषे दीया द्रव्य होइ । तिनकी संक्षिप्त असी-

लोभ				माया			
नाम	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	
संग्रह							
कृष्टि	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	
द्रव्य	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	
माया				क्रोध			
नाम	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	
संग्रह							
कृष्टि	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	
द्रव्य	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	

बहुरि द्वितीय समयविषे अपकर्षण कीया द्रव्यविषे अधस्तन शीर्ष अधस्तन कृष्टि उ-
भय द्रव्य विशेष मध्यम खंड रूप न्यारि विभाग हो हें । तहां प्रथम समय संबंधी पूर्वोक्त
विशेष औसा हे व १२ याकी आदि अक्षर रूप औसी (वि) लघु संश्लिष्टकरि याकी

१८
को । ४ । १६ - ५
क २

आदि उत्तर स्थापना अर एक घाटि लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिनिका प्रमाण औसा ४
ताकी गच्छ स्थापना । तहां एक घाटि गच्छका आघाकी उत्तरकरि गुणि ताभे आदि मि-
लाय ताकी गच्छकरि गुणे लोभका प्रथम संग्रहविषे अधस्तन शीर्ष द्रव्य हो हें । बहुरि लो-
भकी प्रथम संग्रह कृष्टिमात्र विशेष आदि स्थापि एक विशेष उत्तर स्थापि अपनी कृष्टिनि
का प्रमाण गच्छ स्थापि पूर्वोक्त विधान कीएं लोभका द्वितीय संग्रहविषे अधस्तन शीर्ष
द्रव्य हो हें । औसे ही क्रोधका तृतीय संग्रह पर्यंत विधान जानना । विशेष इतना— जो आ-
यतें नीचें जे कृष्टि पाहए तिनका प्रमाण विशेष आदि स्थापने । अन्य विधान पूर्ववत्
जानना । तिनकी संहाष्टि औसी—

२४

१८

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीय संग्रह	१- ४ वि ४५ ख २४ ख २४ २	१- ४ वि ४ ११ ख २४ ख २४ २	१- ४ वि ४ १७ ख २४ ख २४ २	१- ४ वि ४ ४ ५५ ख २४ ख २४ २
द्वितीय संग्रह	१- ४ वि ४३ ख २४ ख २४ २	१- ४ वि ४९ ख २४ ख २४ २	१- ४ वि ४ १५ ख २४ ख २४ २	१- ४ वि ४ २१ ख २४ ख २४ २
प्रथम संग्रह	१- ४ वि ४१ ख २४ ख २४ २	१- ४ वि ४७ ख २४ ख २४ २	१- ४ वि ४ १३ ख २४ ख २४ २	१- ४ वि ४ १९ ख २४ ख २४ २

इहां लोभका प्रथम संग्रहविषे एक घाटि गच्छ असा ४ ताकों आधा कीएं असा-
 ४ ताकों उत्तर जो विशेष ताकरि गुणें असा ४ वि। यामें एक विशेषमात्र आदि मिला-
 वनेके अर्थि विशेषका गुण्यविषे दोयकरि भाजित दोय घाटिथे तिनकों दूरि कीएं असा-
 ४। २। वि। बहुरि याकों गच्छ असा ४ करि गुणना सो इस गुणकारकों गुण्य कीएं संक-
 लनधन असा हो है। ४ वि। ४ बहुरि लोभका द्वितीय संग्रहविषे एक घाटि गच्छका आधाकों
 उत्तर जो विशेष ताकरि गुणें असा ४ वि। यामें प्रथम संग्रहका गच्छमात्र विशेष असा
 ४ वि। मिलावना सो याकों दोयकरि समच्छेद कीये यह असा - ४ वि २ भया। याकों अर
 ख २४

वाकौ अन्य सर्व समान जानि दोय का गुणकारविषै एक गुणकाररूप वाकौ स्थापि मिलाएँ
^{१८} असा ४ । वि । ३ याकौ गच्छ असा ^{१८} स । २४
 द्वितीय संग्रहविषै संकलन धन असा ४ । वि । ४ । ३ बहुरि लोभका तृतीय संग्रह विषै एक घाटि
^{१८} स । २४ । २ । ख । २४ । २ । ख । २४ । २

गच्छका आधा उत्तर करि गुणित असा ४ । वि । याविषै प्रथम द्वितीय संग्रहका गच्छमात्र विशेष
^{१८} रूप आदि मिलावना सो असा ४ । २ याकौ दोय करि समच्छेद कीएँ असा ४ । ४ याका
^{१८} स । २४ । २ । ख । २४ । २

च्यारिका गुणकारविषै वाका एक गुणकार मिलाएँ तृतीय संग्रहविषै संकलन धन असा—
^{१८} ४ । वि । ४ । ५ । याही प्रकार मायाकी प्रथमादि संग्रहनिविषै विधान कीएँ भाज्य
^{१८} स । २४ । ख । २४ । २

राशिका गुणकारविषै दोय दोय अधिकका अनुक्रम हो है । बहुरि क्रोधकी तृतीय संग्रह
 विषै गच्छ असा ४ । १३ गर्भे एक बटाह ताका आधाकौ विशेष करि गुणै असा—
^{१८} स । २४

४ । १३ । वि । याविषै पूर्वे ग्यारह संग्रह तातें एक संग्रहका गच्छकौ ग्यारहकरि गुणै अर
^{१८} स । २४ । २

ताकौ विशेषकरि गुणि तिनिका गच्छमात्र विशेष असा ४ । ११ । वि । याकौ दोयकरि सम-
^{१८} स । २४

१-

च्छेद कीएं औसा ४। २२। वि। इनिके मिलावनेकों अन्य समान जानि तेरह अर वाईसका
 ख। २४। २। १२-
 गुणकारकों मिलाएं औसा ४। ३५। वि। बहुरि याकों गच्छ औसा ४। १३ करि गुणें औसा
 १-
 ४। ३५। वि। ४। १३ इहां पैतीस अर तेरहका गुणकारकों परस्पर गुणें कोधकी तृतीय
 ख। २४। २। ख। २४
 संग्रहविषैं न्यारिसैं पचावनका गुणकार हो है। सो औसा ४। वि। ४। ४५५ इहां गुण्य गु-
 णकारादिविषैं एक हीन वा अधिककों न गिणि संहति स्थापी है। औसा जानना । बहुरि
 १-
 इस सककों मिलाएं एक घाटि सर्वं कृष्टिमात्र गच्छ औसा ४ ताका आधाकों विशेषकरि गुणें
 ख
 तामैं एक विशेष मिलाय गच्छकरि गुणें सर्व अधस्तन शीर्ष द्रव्य औसा वि। ४। ४ इहां गुण्य
 गुणकार पीछैं आगैं लिखे हैं। बहुरि लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिका पूर्वोक्त प्रकार द्रव्य औसा
 व। १२। १६ इहां भागहारविषैं दोगुणहानिका ऋणकों न गिणि अपवर्तन कीएं औसा व
 १-
 ओ। ४। १६-४
 ख। २४। ख। २४। २
 याकों अपनी अपनी द्वितीय समयविषैं कीनी नवीन कृष्टिनिका प्रमाणकरि गुणें अपना अ-
 पना अधस्तन कृष्टि द्रव्य हो है। ताकी संहति औसी-

ओ ४
ख २४

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीयसंग्रह	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ १२ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४
द्वितीयसंग्रह	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४
प्रथमसंग्रह	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४

बहुरि तिसही लोभकी प्रथम कृष्टिकों सर्व नवीन कृष्टिका प्रमाणकरि गुणें सर्व अधस्तन
कृष्टि द्रव्य औसा व । १२ । ४ बहुरि प्रथम समयविषे अपकर्षण कीया औसा व १२
ओ । ४ । ख ओ । ४

यातें असंख्यात गुणा द्वितीय समयविषे द्रव्य अपकर्षण कीया सो औसा व । १२ । ४ याका
असंख्यातका गुणकार उपरि एक अधिककी संदृष्टि कीएं उभय द्रव्य औसा व । १२ । ४ ।
याकों प्रथम समयविषे कीनी कृष्टि औसी ४ याके उपरि द्वितीय समयविषे कीनी कृष्टिनिका
प्रमाण मिलावनेकों अधिककी औसी (१) संदृष्टि कीएं उभयमात्र द्रव्य औसा ४ ताका अर
एक घाटि गच्छका आघाकरि न्युन दोगुणहानिका भाग दीएं उभय द्रव्यका विशेष औसा

व । १२ । ३ याकी लघु संहति ऐसी (वि) याकी आदि उत्तर स्थापना अर क्रोधकी तृतीय
को । ४ । १६ - ४
ख । ख २
संग्रहकी उभयद्रव्य कृष्टिमात्र गच्छ स्थापना तहां पूर्वोक्त प्रकार एक घाटि गच्छका आधाको
विशेषकरि गुणि तार्ने आदि मिलाय गच्छकरि गुणें क्रोधकी तृतीय कृष्टिविषैं उभय द्रव्य
विशेष द्रव्य हो हें । बहुरि क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिमात्र विशेष आदि अर एक विशेष
उत्तर अर एक घाटि अपनी उभय कृष्टिमात्र गच्छ स्थापैं संकलन धनमात्र क्रोधकी द्वितीय
कृष्टिविषैं उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो हें । ऐसैं ही लोभका प्रथम संग्रह पर्यंत कम जानना ।
विशेष इतना—

अपनी अपनी एक अधिक पहिली कृष्टिका प्रमाणमात्र विशेष आदि स्थापन करना
तिनकी संहति ऐसी—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीयसंग्रह	वि ४ ४ ४३ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ ३७ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ ३१ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ १६९ ख २४ ख २४ २
द्वितीयसंग्रह	वि ४ ४ ४५ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ ३९ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ ३३ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ २७ ख २४ ख २४ २
प्रथमसंग्रह	वि ४ ४ ४७ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ ४१ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ ३५ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ २९ ख २४ ख २४ २

इहां क्रोधकी तृतीय संग्रहविषे गच्छ असा- ४ । १३ यामें एक घटाय ताका आधाकों
 उत्तर जो विशेष ताकरि गुणें असा ४ । १३ वि। यामें आदि एक विशेष मिलावनेकों दोय
 करि भाजित एक हीनकी जायगा एक अधिक चाहिण सो न गिणें असा ४ । १३ । वि ।
 याकों गच्छकरि गुणें असा ४ । १३ । वि । ४ । १३ इहां भाज्यविषे तेरह तेरहके दोय गुण-
 कारनिकों परस्पर गुणें अर गुण्य गुणकारनिकों आगें पीछें लिखें क्रोधकी तृतीय संग्रह
 विषे असी ४ । ४ । १६१ बहुरि क्रोधकी द्वितीय संग्रहविषे गच्छ असा ४ । १३
 एक घटाह ताका आधाकों विशेषकरि गुणें असा ४ । वि। यामें एक अधिक क्रोधकी तृतीय
 संग्रहका गच्छमात्र विशेष आदि मिलावना सो असा ४ । १३ । वि । याकों दोयकरि सम-
 च्छेद कीएं असा ४ । २६ । वि । बहुरि यार्कें अर वार्कें एक अधिक हीनकों न गिणि अन्य
 समानता जानि याका छवीसका गुणकारविषे एक गुणकार वाका मिलाएं क्रोधकी द्वितीय सं

विषैँँसा वि । ४ । ४ । २० बहुरि क्रोधकी प्रथम संग्रहविषैँँ एक घाटि गच्छका आधा विशेष
स । २४ । स । २४ । २

करि गुणित औसा ४ । वि । याविषैँँ एक अधिक क्रोधकी प्रथम द्वितीयका मिलाया हूवा
स । २४

गच्छमात्र विशेष आदि सो औसा- ४ । ४ याकौँ दोयकरि समच्छेदकरि पूर्वोक्त प्रकार
स । २४

मिलाएँँ संकलन घन औसा वि ४ । ४ २९ औसैँँ ही विधान कीएँँ मानकी प्रथम संग्रह आदि
स । २४ । स । २४ । २

लोभकी तृतीय संग्रह पर्यंत भाज्यराशिका गुणकारविषैँँ दोय दोय अधिकका क्रम हो है । बहुरि
तिस विशेष प्रमाण आदि उत्तर स्थापि सर्व उभय कृष्टिमात्र गच्छ स्थापैँँ सर्व उभय द्रव्य औसा-
१ ।

वि । ४ । ४ बहुरि अपना अपना द्वितीय समयविषैँँ अपकर्षण कीया द्रव्यका भागहार अ-
स । स

संख्यात ताके आगैँँ पूर्वोक्त तीन द्रव्य घटावनेके आर्थ तीनवार किंचिदूनकी औसी-(३)
संहति कीएँँ अर अपनी अपनी उभय कृष्टिका गुणकार ताहीका भागहार कीएँँ अपना
अपना मध्य खंड द्रव्यकी संहति औसी हो है-


नाम	लोभ	माया	मान	कोष
कुली- संग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ १३ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४
द्वितीय संग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४
प्रथम संग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४


बहु- अपकृष्ट द्रव्यविषे तैसै ही संक्षिप्त कीएं सर्व मध्यम खंड द्रव्यकी औसी-

व १२ ४ हो है । बहु- इस व्या- प्रकार द्रव्य देनेका विधान जानि तहां तथा संभव संक्षि-

प्त जाननी । बहु- यह द्रव्य पूर्व कृष्टि- अपूर्वकृष्टि- असंख्यात भाग शुद्ध रूप दीजिए है । सो अ- ग्यारह स्थान हैं । बहु- अपूर्व कृष्टि- पूर्व कृष्टि- असंख्यात भाग हानि लीं द्रव्य दीजिए है सो अ- नारह स्थान हैं । अवशेष स्थाननिविषे अनंत-

भाग हानि लीएँ द्रव्य दीजिए है सो इनकी तेबीस ऊंट कूटनिके समान रचना हो है ।
सो यथा संभव जाननी । बहुरि इहां अपूर्व कृष्टिनिकी रचना औसी है । —

इहां नीचें लोभकी प्रथम कृष्टि ताविषैं नीचें अपूर्व कृष्टिनिविषैं अथस्तन कृष्टि दीया
ताकी संहति औसी (८) बहुरि तिनके उपरि पूर्वकृष्टि तिनविषैं समपाट्टिकारूप द्रव्य विशेष
सहित था ताकी संहति औसी  ताविषैं अथस्तन शीर्ष विषैं द्रव्य दीया ताकी संहति

 औसैं भएँ पूर्व अपूर्व कृष्टिनिकी समपाट्टिका भई औसैं ही लोभकी द्वितीयादि क्रोध-
की तृतीय पर्यंत विधान जानने । बहुरि इन सवनिविषैं समानरूप मध्यम खंड द्रव्य दीया ताकी
समलकीररूप सहनानी जाननी । बहुरि इन सवनिविषैं एक एक विशेष घटता उभय द्रव्य
विषैं विशेष द्रव्य दीया था ताकी कमहीन लकीररूप सहनानी जाननी । औसैंही कृष्टि करण
कालका तृतीयादि अंत समय पर्यंत विधान जानना । बहुरि कृष्टि करण काल समाप्त भएँ
कृष्टि वेदक कालका प्रथम समयविषैं जो सर्व द्रव्य कृष्टिरूप परिनामि । तेन कृष्टिनिविषैं
गोपुच्छाकार भया ताकी संहति कृष्टि कारक विधानविषैं कही थी तैसैं औसी जाननी—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
द्रव्य	१ व १२ ७।८	१ व १२ ७।८	व १२=५ ७।८	व १२=५ ७।८

बहुरि सर्व द्रव्य औसा व १२ याकों चौदसका भाग देह अन्य संग्रह विषैं एक एक भाग, क्रो-

१ ४। १३ याकौ पत्यका असंख्यातवां भागका भाग देह बहुभाग औसैं ४। १३। प कृष्टि
ख। २४

संहति
अधिकार

वेदकका प्रथम समयविषैं बंध उदय रूप जे वीचिकी उभय कृष्टि तिनका प्रमाण है। बहुरि
एक भाग औसा ४। १३ ताकौ अंक संहति अपेक्षा शलाकानिका जोड सोलहका अंक
ख। २४। प

ताका भाग देह दोय शलाकाकरि गुणें तो नीचैकी बंध उदय रहित अनुभय कृष्टिनिका अर
तीन शलाकानिकरि गुणें तिनके उपरि जे नीचैकी उदय कृष्टि तिनिका च्यारि शलाका-
निकरि गुणें उपरिका अनुभय कृष्टिनिका सात शलाकानिकरि गुणें तिनके नीचैं जे उप-
रिकी उदय कृष्टि तिनका प्रमाण है। तिनकी संहति औसी-

अनुभय	उदय	उभय	उदय	अनुभय
१	१	१	१	१
४। १३। २	४। १३। ३	४। १३। ५	४। १३। ७	४। १३। ९
ख। २४। प। १६	ख। २४। प। १६	ख। २४। प। १६	ख। २४। प। १६	ख। २४। प। १६
३	३	३	३	३

इहां गुगपत् उदय आवने योग्य एक निष्कविषैं औसा अनुभाग है। तातैं आडी रचना
करी है। तहां नीचैतैं प्रथमादि कृष्टिनिकी क्रमतैं रचना जाननी। तिनविषैं अनुभय उदय

उभय अनुभय कृष्टि क्रमते पाइए है तिनका प्रमाण लिख्या है। बहुरि द्वितीय समयविषे
नीचली उदय कृष्टि थी सो तो उदय रूप भई। अर नीचली अनुभय कृष्टि थी ताको प-
त्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग असा ४।१३।२ ताको अंक संहतिकरि
ख।२४।प।१६।प ३

पांचका भाग देइ तहां दोय भाग प्रमाण जघन्यादि कृष्टितो अनुभय रूप हो हैं। अर ताके
उपरि तीन भाग प्रमाण कृष्टि उदय रूप हो हैं। अर ताके उपरि बहुभागमात्र कृष्टि असी
४।१३।प^{१८} उभय रूप हो हैं। बहुरि जे उभय कृष्टि थी तिनिविषे पूर्वे जे उदय

ख।२४।प।१६।प ३

कृष्टि थी तिनको पत्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र कृष्टि इहां उदय
रूप अर अनुभ(द)य रूप भई असी-४।१३।७ ४।१३।४ इनिको मिलाएं
ख।२४।प।१६।प ख।२४।प।१६।प

याको पूर्वे उभय कृष्टिनिका प्रमाण असा ४।१३।प तामें घटा-
असा ४।१३।११ ख।२४।प।१६।प ३

वना सो अन्य भागहार समान जानि असा १६ प भागहारकरि समच्छेद कीएं असा-
३

भया सर्व द्रव्य औसा (व । १२) ताकौ सर्व कृष्टिमात्र गच्छ औसा ४ ताका अर एक घाटि
गच्छका आधाकरि न्यून दो गुणहानिका भाग दीएं पूर्व विशेष औसा व १२ याकी लघु

१८
४।१६-४
ख । ख २

संघट्टि औसी (वि) बहुरि इहां गच्छका प्रमाण सर्व कृष्टिमात्र स्थापि जैसैं कृष्टिकारकका
द्वितीय समयविषैं विधान कह्या है तैसैं अधस्तनशीर्षविशेषकी संघट्टि हो है । विशेष इतना-
तहां ताकौ प्रथम संग्रह कृष्टि कहीं थी ताकौ इहां तृतीय संग्रह कहनी । तृतीय कहीं
थी ताकौ प्रथम कहनी । बहुरि लोभकी तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टि औसी । व । १२ इहां

४
ख

सर्व द्रव्यकौ सर्व कृष्टिके प्रमाणका भाग दीएं मध्यम घन होइ । ताविषैं विशेषका अधिक-
पना कीएं जघन्य कृष्टि भई है । बहुरि याकौ दीयवार असंख्यातकरि गुणित अपकर्षण
भागहारका भाग दीएं एक मध्यम खंड औसा व । १२ याकौ अपनी अपनी संग्रहके कृष्टि

४।ओ। ३३
ख

का प्रमाणकरि गुणैं अपना अपना मध्यम खंड द्रव्य हो है । बहुरि लोभकी तृतीय संग्रहकी
जघन्य कृष्टिविषैं एक मध्यम खंड पिलावेनेकौ साधिककी संग्रह कृष्टि कीएं औसा व । १२

४
ख

बहुरि अपनी अपनी संग्रहके नीचे संक्रमण द्रव्यकरि करी जे नवीन कृष्टि तिनिका प्रमाण अपनी पूर्वे कृष्टिनिकों असंख्यात गुणों अपकर्षण भागहारका भाग दीएं औसा ४

भागहारका गुण्य गुणकारनिकों आगे पीछे लिखें औसा ४ ताकरि तिस लोभकी ख।ओ।३

जघन्य कृष्टि समान द्रव्यकों गुणें अपना अपना संग्रहके नीचे संक्रमण द्रव्यकरि भई नवीन कृष्टि संबंधी समान द्रव्य हो है। तहां क्रोधकी प्रथम कृष्टिविषे यह द्रव्य नार्ही संभवे है। तहां शून्य जाननी। बहुरि पूर्व उत्तर द्रव्यकों पुरातन नूतन कृष्टिमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणशानिका भाग दीएं एक उभय द्रव्य विशेष होइ ताकी लघु संहृष्टि औसी (वि) स्थापि जैसे कृष्टिकारकका द्वितीय समयविषे विधान कहया था तैसे इहां उभय द्रव्यविशेष कीएं संहृष्टि हो है। विशेष इहां मध्यम खंडवत् जानना। बहुरि एक मध्यम खंड सहित लोभकी तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टिका द्रव्य औसा व १२ ताकी ख

एक शलाका होइ तो लोभकी तृतीय संग्रहका आय द्रव्य विषे पूर्वोक्त च्यारि द्रव्य घटावने कीं आगे किंचिदूनकी संहृष्टि कीएं औसा व १२। २ - सो इतने द्रव्यकी केती शलाका होइ? अैसे त्रैशिक कीएं लब्धिराशि औसा व १२। २-इहां किंचित् हीन अधिकन गिणि

२४।ओ।३।१२

४

ख

होइ । तहां मानका स्तोक ताँतै क्रोध माया लोभका क्रम अधिक है तिनकी संहति रचना
 औसी—मान क्रोध माया लोभ बहुरि मध्यम खंड सहित लोभकी तृतीय संग्रहकी
 स ४ स ४ स ४ स ४
 जघन्य कृष्टिका द्रव्य ब्याह गुणहानि गुणित समय प्रवद्धकौ सर्व कृष्टिका भाग देइ साधिक कीएं
 औसी स १२ सो इतने द्रव्यकी एक कृष्टिरूप एक शलाका होइ तो पूर्वोक्त मानका द्रव्यकी
 स ४ स ४
 केती होइ ! औसैं त्रैराशिक कीए लब्धिराशि मानविषैं औसी स इहां समयप्रवद्धका अपवर्तन

कीएं अर भागहारका भाग औसा ४ ताकौं भाज्य कीएं अर भागहारविषैं न्यारि अर ड्योढ गुणहानि औसा (१२) इनिकौं परस्परगुणैं छह गुणहानि भई। तंहां गुणहानिकी संहष्टि आठ का अंक करि ताके आगैं छहका गुणकार कीएं संहष्टि हो है। बहुरि क्रोधादिक विषैं औसी ही अधिक क्रमरूप संहष्टि हो है। असैं बंधांतर कृष्टिनिका प्रमाणकी संहष्टि औसी-

मान क्रोध माया लोभ

"

बहुरिइनिबंधकृष्टिनिकेवीचिपाइएहैंजेअंतरकृष्टितिनकाप्रमाणगुणहानिकेबोथाभाग-
मात्रहै।तहांकोधविषैनोकषायद्रव्यसंबंधीकृष्टिमिलेनैतैतेरहकागुणकारजानना।तिन

की संहि ऐसी लो मा या क्रो एक एक कषायकी एक एक संग्रह बंधरूप होइ सो
इहां चारथो कषायनिकी पहली संग्रह बंधरूप हो हे । सो इहां नवीन बंधरूप भया समयप्रवद्ध
व्यारो कषायनिका औसा— स स स स । इनिकों अनंतका भाग देह एक भाग तौ जुदा
राखि अर बहुभागनिकरि नवीन बंधांतर कृष्टि निपजाइए है । तहां अंत कृष्टितैं लगाय
जेथवी अतका नवीन कृष्टि होइ तितने विशेष तौ आदि अर अपना अपना अंतरालरूप
कृष्टिनिका पूर्वोक्त प्रमाणमात्र विशेष उत्तर अर अपनी अपनी बंधांतर कृष्टिनिका पूर्वोक्त
प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि संकलनघन कीएं बंधांतर कृष्टि विशेष द्रव्य हो है । सो अन्य कृष्टि-
निविषैं तौ उभय द्रव्य विशेष द्रव्य देना जहां कहा था तहां बंध कृष्टिनिविषैं इस द्रव्यको
देना । सो इहां क्रोध मान माया लोभकी प्रथम संग्रहके बंधांतर विशेष विषैं आदि उत्तर
गच्छकी अर संकलन कीया घनकी औसी संहि हो हे—

नाम	क्रोध प्र०	मान प्र०	माया प्र०	लोभ प्र०
संकलित घन	वि । ४ । १३ । ४ ख । २४ । २ । ख । ८ । ६	वि । ४ । २१ । ४ ख । २४ । २ । ख । ८ । ६	वि । ४ । ४३ । ४ ख । २४ । २ । ख । ८ । ६	वि । ४ । ४३ । ४ ख । २४ । २ । ख । ८ । ६
गच्छ	ख । ८ । ६	ख । ८ । ६	ख । ८ । ६	ख । ८ । ६
उत्तर	वि । ८ । १३ ४	वि । ८ ४	वि । ८ ४	वि । ८ ४
आदि	वि । ४ । १३ ख । २४	वि । ४ । १५ ख । २४	वि । ४ । १८ ख । २४	वि । ४ । २१ ख । २४

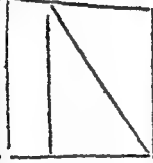
बहुरि बहुभागनिविषे इतना द्रव्य घटाए अवशेष द्रव्य जो रखा ताको अपना अपना बंधांतर कृष्टि प्रमाणका भाग दीए एकका कृष्टिका द्रव्य होइ । ताको तिसही प्रमाणकरि गुणें बंधांतर कृष्टि समान खंड द्रव्य होइ । याकरि लोभकी जघन्य कृष्टिके समान बंध कृष्टि निपजै है । बहुरि एक भाग जुदा राखया था तिसविषे दोय भाग करने । तहां तिस एक भागको सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि प्रमाण गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीए विशेष होइ सो एक विशेष आदि, एक विशेष उत्तर सर्व कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि संकलन घन कीए बंध विशेष द्रव्य हो है । सो याको सर्व बंध कृष्टिनिविषे जहां उभय द्रव्य विशेषविषे घटता द्रव्य देना कहा तहां याको देह पूर्ण करना । बहुरि तिस एक भागविषे याको घटाए जो अवशेष रखा ताको अपनी सर्वकृष्टि प्रमाण का भाग दीए एक खंड होइ ताको तिसहीकरि गुणें सर्व मध्यम खंड द्रव्य होइ । असे बंध द्रव्यविषे च्यारि प्रकार कहे । इनिकी संहतिनिका मोकोनीके ज्ञान न भया तातें इहां नाही लिखी है । बहुरि इनि द्रव्यनिके देनेका विधान पूर्वे व्याख्यानविषे कहि आए हैं । बहुरि इहां अनंती जायगा पहलें बहुत पीछें घाटि पीछें वाधि वाधि द्रव्य दीए हैं तातें अनंत उद्द्र कृत रचना हो है । बहुरि बारह संग्रहनिविषे नीचें नवीन भई कृष्टि अर पूर्व अर अपूर्व चोचि वीचि संग्रमण द्रव्यकरि निपजो नवीन कृष्टि अर च्यारि संग्रहनिविषे बंध

रचना औसी जाननी । -

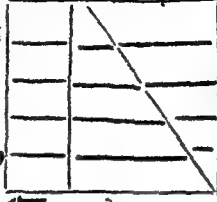
पृ० सं० १४६ (क) में देखो ।

अत्रभागकी रचना युगवत् कालविषे संभवे है तातें आडी रचना करी है । तहां नीचें निम्नविषे नीचें नवीन कृष्टिनिकी रचना औसी तिनके उपरि

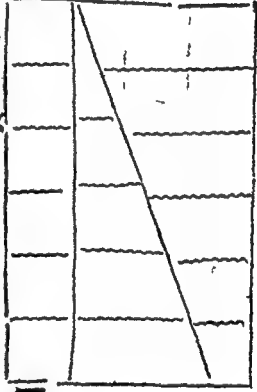
पूर्व कृष्टिनिकी रचना ऐसी [] याविषै समपट्टिकाकी समान लीक अर विशेष घटा क्रमकी क्रम हीन रूप लीक अर तिनविषै अधस्तन शीर्ष विशेषका द्रव्य दीया ताका क्रम अधिक रूप लीककी संहति कीणुं ऐसी



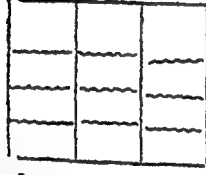
समपट्टिका भई। ऐसै ही लोभकी द्वितीयादिविषै संहति जाननी। तहां क्रोधकी तृतीय संग्रहविषै नीचै नवीन कृष्टि नाही भई तातैं तिनकी रचना नाही करी है। पूर्व कृष्टिनिही की रचना करी है। बहुरि इनि पूर्व कृष्टिनिके वीचि संक्रमण द्रव्यकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी सूधी ऊभी लीकरूप संहति अर बंध द्रव्यकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी बांकी ऊभी लीकरूप संहति जाननी। तहां लोभादिक व्याचो कषायनिकी तृतीय द्वितीय संग्रहविषै तौ संक्रमण द्रव्यहीकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी संहति ऐसी



अर लोभ माया मानकी प्रथम संग्रहविषै संक्रमण द्रव्यकरि अर बंध द्रव्यकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी संहति ऐसी।

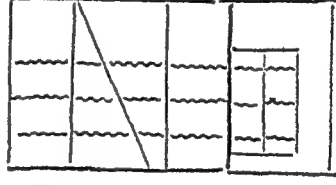


हीकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी संहति औसी



जाननी । बहुरि इन सर्व

पूर्व अपूर्व कृष्टिनिविषै मध्यम खंड द्रव्य दीया ताकी समानरूप लीककी संहति जाननी । बहुरि इन सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिविषै क्रम हीन रूप उभय द्रव्य विशेष द्रव्य दीया ताकी क्रम हीन रूप लीक संहति जाननी । बहुरि बंध होने योग्य पूर्व कृष्टिनिका उभय द्रव्य विशेष द्रव्यविषै वा बंध द्रव्यकरि निपजी नवीन कृष्टिका बंधांतर विशेष द्रव्यविषै घटता द्रव्य दीया तहां बंध विशेष द्रव्य दीया अर बंध द्रव्यका मध्यम खंड द्रव्य दीया ताकी उभय द्रव्य विशेष द्रव्यकी संहति औसी जाननी । औसै इहां रचना जाननी



बहुरि क्रोधकी प्रथम संग्रहका द्रव्य औसा-व १२ १३ । सो द्वितीय संग्रह रूप भया । अर द्वितीय संग्रहका द्रव्य पूर्व औसा व १२ । १ था ही सो मिलि द्वितीय संग्रहका द्रव्य औसा

व । १२ । १४ । भया । औसै ही अन्य संग्रहविषे लोभकी द्वितीय संग्रह पर्यंत पूर्व पूर्व संग्रहका
द्रव्य अपने द्रव्यविषे मिलनेतें अपना अपना द्रव्य हो है । सो जानना ताकी संहति रचना
औसी-

नाम	क्रीय			मान			माया			लोभ		
	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ
संग्रह	व १२ १३	व १२ १४	व १२ १५	व १२ १६	व १२ १७	व १२ १८	व १२ १९	व १२ २०	व १२ २१	व १२ २२	व १२ २३	व १२ २४
द्रव्य	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४

तहां अपने अपने द्रव्यका अपकर्षणकरि प्रथम स्थिति विषे गुणकार क्रमकरि द्वितीय स्थि-
ति विषे विशेष हीन क्रमकरि देनेका विधान पूर्ववत् जानना । बहुरि आयुद्रव्य आदि यथा-
संभव जानि तिनकी संहति पूर्ववत् जाननी । बहुरि तहां संक्रमण द्रव्य बंध द्रव्यका विधान
यथासंभव जानि तिनकी संहति पूर्ववत् जाननी । विशेष होइ सो विशेष जानि लेना ।
बहुरि क्रोध मान माया लोभ वेदककैं क्रमतैं च्यारि तीन दोय एक कषानिका बंध है । तहां
जिस कषायकी जिस संग्रहकौ वेदे है तिस कषायकी तौ तिसही संग्रहका बंध है । अन्यक-
षायकी प्रथम संग्रहका बंध है । तिस बंधांतर कृष्टि शलाकाविषे क्रोध वेदकके कृष्टि प्रमाण
कौ छह गुणहानिका भागहार कह्या था । मान माया लोभ वेदककैं क्रमतैं साढा च्यारि
तीन ब्योढ गुणहानिका भागहार जानना । तिनकी संहति औसी-

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
क्रोधवेदक	४ ख। ८। ६	४ ख। ८। ६	४ ख। ८। ६	४ ख। ८। ६
मानवेदक	४ ख। ८। ९	४ ख। ८। ९	४ ख। ८। ९	
मायावेदक	४ ख। ८। ३	४ ख। ८। ३		
लोभवेदक	४ ख। ८। ३			

बहुरि बर्धातर कृष्टिनिके वीचि जे अन्तर कृष्टि तिनिका प्रमाण क्रोधका प्रथमसंग्रहका वेदकविषे अन्यकषायनिका चौथा भागमात्र क्रोधका तातें तेरह गुणा कहा था। बहुरि ताकरि द्वितीय तृतीय कृष्टि वेदकविषे अन्य कषायनिका पूर्ववत् अर क्रोधका चौदह पंद्रह गुणा जानना। बहुरि मानकी प्रथमादि संग्रह वेदकके अन्यकषायनिका गुणहानिके तीन सोलहवां भागमात्र मानका तातें सोलह सतरह अठारह गुणा क्रमते जानना। बहुरि मायाकी प्रथमादि संग्रह वेदकके लोभका गुणहानिका दोय सोलहवां भागमात्र, मायाका तातें उगणीस वीस इकईस गुणा क्रमते जानना लोभकी प्रथमादि संग्रह वेदकके लोभका गुणहानिका सोलहवां भाग वाईस तेईस चौबीस गुणा जानना। तिनकी संहति औसी-

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
क्रोधवेदक	८ ४	८ ४	८ ४	८।१३।१४।१५
मानवेदक	८।३ १६	८।३ १६	८।३।१६ १६	१७।१८
मायावेदक	८।३ १६	८।१८ १६	२०।२१	
लोभवेदक	८।२२ १६	२३।२४		

बहुरि द्वितीय संग्रहका द्रव्य असा व । १२ । २३ याकों अपकर्षण भागहारका भाग देह पचो-
स भागमात्र संक्रमण द्रव्य असा व । १२ । ५७५ तिसविधै एक भागमात्र तृतीय संग्रहरूप
परिणया द्रव्य असा-व । १२ । २३ अर चौहिस भागमात्र सूक्ष्मकृष्टिरूप परिणया द्रव्य
असा व । १२ । ५५२ बहुरि तृतीय संग्रहका द्रव्यको अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक
भाग सूक्ष्मकृष्टिरूप परिणया असा व । १२ । १ इनिकों मिलाएँ सर्व सूक्ष्म कृष्टिरूप परि-
णया द्रव्य असा व । १२ । ५५३ इतने द्रव्यकरि सर्व सूक्ष्मकृष्टि करण कालका प्रथम समय
विधै वादरकृष्टिनिके नीचै सूक्ष्मकृष्टि करिए है । तिनिका प्रमाण कहिए है-
कोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि औसी ४ । १३ बहुरि पूर्व पूर्व संग्रह उत्तर उत्तर संग्रहरूप
ख । २४

होइ परिनिर्भै है तातैं पूर्व प्रमाणकों विवाक्षित संग्रहकृष्टिका प्रमाणविषै मिलिएं अपना अपना वेदक कालविषै कृष्टिनिका प्रमाण औसा—

नाम	क्रोध			मान			माया			लोभ		
	प्र	दि	तृ	प्र	दि	तृ	प्र	दि	तृ	प्र	दि	सूक्ष्मकृष्टि
संग्रह	४ १३	४ १४	४ १५	४ १६	४ १७	४ १८	४ १९	४ २०	४ २१	४ २२	४ २३	४ २४
कृष्टिप्रमाण	स २४	स २४	स २४	स २४	स २४	स २४	स २४	स २४	स २४	स २४	स २४	स २४

हो है । तहां सूक्ष्मकृष्टिनिका प्रमाण औसा ४ । २४ अपवर्तन कीएं औसा ४ हो है । बहुरि इहां लोभका द्वितीय संग्रहविषै आय द्रव्यका तीं अभाव है । तृतीय संग्रहरूप भया व्यय द्रव्य औसा हो है व । ४२ । २३ सोई तृतीय संग्रहका आय द्रव्य है । इसहीकानाम संक्रमण २४ । ओ

द्रव्य है । बहुरि लोभकी द्वितीय तृतीय संग्रहविषै अपनी अपनी कृष्टि प्रमाणकों अपकर्षण भागहारका असंख्यातवां भागका भाग दीएं अपना अपना घात कृष्टिका प्रमाण हो है । ताकरि अपनी अपनी अंत कृष्टिका द्रव्यकों गुणि किछू साधिक कीएं अपना अपना घात द्रव्य हो है । तहां घात द्रव्यकों यथा संभव दीएं स्वस्थान परस्थान गोपुच्छरूप होइ कृष्टि हो है । तिनविषै संक्रमण द्रव्य वा घात द्रव्यका विभाग कहिए है—

एक विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर एक घाटि घात कीएं पीछे रहीं अपनी कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापे संकलन धनमात्र द्रव्य तृतीय संग्रहविषै आय द्रव्यतै ग्रहि स्थापना । अर तृतीय संग्रह कृष्टिमात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर घात कीएं

पीछें रही अपनी कृष्टिमात्र गच्छ स्थाने संकलन घनमात्र द्वितीय संग्रहविषे घात द्रव्यतै ग्रहि
स्थापने । इसका नाम वादर कृष्टि संबंधी अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य है । इहां 'पदमेगेण वि-
हीणं' इत्यादि सूत्रकरि संकलन घन कहिए है-

तृतीय संग्रहविषे गच्छ औसा ४ ^{क। २५} इहां घात कृष्टिनिका वा एक घाटिका किंचिदूनपनाकौ

नाही गिण्या है । यामें एक घटाह दोयका भाग दीएं ताकरि औसा ४ ^{क। २४। २} याकरि उत्तर

जो विशेष ताकौ गुणें औसा वि ४ यामें आदि एक विशेष मिलावनेकौ एक घाटि या तहां

एक अधिककरि ताकौ गच्छ औसा ४ ^{क। २४} करि गुणि तहां गुण्य गुणकारनिकौ आगें

पीछें लिखें संकलन घन औसा वि । ४ । ४ ^{१-} हो है । बहुरि द्वितीय संग्रहविषे गच्छ औसा-

४ । २३ यामें एक घटाह दोयका भाग देह ताकरि उत्तर जो विशेष ताकौ गुणें औसा-

वि । ४ । २३ यामें आदि औसा वि ४ मिलावना सो याकौ दोयकरि समच्छेद कीएं औसा-

वि । ४ । २ अर याकें वाकें अन्य समान देखि तेईसका गुणकारविषे दोयका गुणकार मि-

लाएं औसा वि । ४ । २५ याकौ गच्छ औसा ४ । २३ करि गुणें औसा वि । ४ । २५ । ४२३

इहां पचीस अर तेईसकौ परस्पर गुणें पांचसै पिचहत्तरिका गुणकार कीएं अर गुण्य गुण-

कार आगे पीछे लिखें संकलन घन औसा । वि । ४ । ४ । ५७५ हो हे । इहां एक अधिक
हीनकों न गिणि संहति करी है औसा जानना । बहुरि तृतीय संग्रहकी जयन्य कृष्टि
औसी व १२ याकों असंख्यात गुणां अपकर्षण भागहार औसा (ओ ४) ताका भाग देइ ताकों

तृतीय संग्रहविषे कृष्टि प्रमाण औसा ४ अर द्वितीय संग्रहविषे कृष्टि प्रमाण औसा ४ । २३
सो इनकरि गुणें अपना अपना वादर कृष्टि संबंधी मध्यम खंड द्रव्य हो हे । बहुरि एक
विशेष आदि एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी पूर्व कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां जेना
संकलन घन भया ताविषे एक विशेषका अनंतवां भाग घटाए जो होइ सो द्वितीय संग्रह
का घात द्रव्यतै ग्रहि स्थापना । इहा एक विशेषका अनंतवां भाग घटाया है । तहां बंध
द्रव्य देइ पूर्ण करिए है औसा जानना । बहुरि एक अधिक द्वितीय संग्रहकी कृष्टिनिका
प्रमाणमात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर संकमण द्रव्यकरि निपजी कृष्टि सहित
अपनी पुरातन कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन घनमात्र तृतीय संग्रहका आय
द्रव्यतै ग्रहि स्थापना इसका नाम उभय द्रव्य विशेष द्रव्य है । इहां 'पदमेगेण विहीण'
इत्यादि सूत्रकरि द्वितीय संग्रहविषे गच्छ औसा ४ । २३ तामें एक घटाइ ताकों दोयका भाग

देइ ताकरि उत्तर जो विशेष ताकों गुणें औसा वि । ४ । २३ बहुरि आदि एक विशेष मिलावेनक

एक हीनकी जायगा एक अधिककरि ताको गच्छकरि गुणें असा वि ४२११ बहुरि इहां ते
ईसकरि तेइसको गुणि पांचसे गुणतीसका गुणकार कीएं अर गुण्य गुणकारनिकों आगे पछे
लिखैं संकलन घन असा वि ४। ४। ५२१ हो हे । बहुरि तृतीय संग्रहविषैं गच्छ असा-
क। २४। २

४ यामैं एक घटाइ दोयका भाग देह ताकरि उत्तर जो विशेष ताको गुणें असा वि ४। ४
क। २४। २

यामैं आदि असा वि ४। २३ मिलावना सो याको दोयकरि समच्छेद कीएं यह असा-
क। २४। २

वि ४। ४६ अर याकैं वाकैं अन्य समान देखि याका छयालीसका गुणकारविषैं
क। २३। २

वाका एक गुणकार मिलाएं असा वि ४। ४७ बहुरि याको गच्छ असा ४ करि गुणें गुण्य
क। २४। २

गुणकारनिकों आगे पीछें लिखैं संकलन घन असा वि ४। ४। ४७ इहां घात कृष्टि-
क। २४। २

निका हीनपना वा संक्रमण कृष्टिनिका अधिकपना वा एकका अधिक हीनपनाको न गिणि
संहति करी है । असा जानना । बहुरि इस तीन प्रकार द्रव्यकरि हीन तृतीय संग्रहका
आय द्रव्य असा व १२। २३ तहां किंचिदूनको न गिणि ताका मध्यम खंड सहित तृतीय
२४। ओ

संग्रहकी जघन्य कृष्टि असी व १२ ताका भाग देह अपकर्षण कीएं वा भागहारका भागहारको
४ क

राशि कीएं संक्रमण द्रव्यकरि वीचिवीचिमें भई नई कृष्टिनिका प्रमाण असा ४। २३ बहुरि
इसका भाग अपनी सर्व कृष्टिनिका प्रमाणकों दीएं संक्रमणांतर कृष्टिनिके वीचि जे कृष्टि
पाइए तिनिका प्रमाण असा ४ इहां अपवर्तन कीएं वा भागहारका भागहारको
ख। २४। ४। २३ ख। २४। ४। २३ ओ

राशि कीएं असा ओ बहुरि पूर्वोक्त संक्रमणांतर कृष्टिनिका प्रमाण असा ४। २३ ताका
भाग अवशेष आय द्रव्यको दीएं एक खंड होइ ताको तिसहीकरि गुणें अपने अवशेष
आय द्रव्यमात्र संक्रमणांतर कृष्टि समान खंड द्रव्य हो है। द्वितीय संग्रहविषे आय द्रव्यके
अभावतैं असा द्रव्य नाही है। तहां शून्य जाननी। इनकी संहति असी-

नाम	लोभकी तृतीय संग्रह	लोभकी द्वितीय संग्रह
अद्यस्तन शीर्ष पूर्वविशेष द्रव्य	१— वि। ४। ४ ख। २४। ख। २४। २ व। १२४ ४। ओ। ४। ख। २४	१— वि। ४। ४। ५७५ ख। २४। ख। २४। २ व। १२। ४। २३ ४। ओ। ४। ख। २४
मध्यम खंड	ख वि। ४। ४। ४७ ख। २४। ख। २४। २	१— वि। ४। ४। ५२६ ख। २४। ख। २४। २
उभय द्रव्य विशेष द्रव्य	व १२। २३ २४। ओ।	०

बहुरि बंध द्रव्यविषै विभाग कहिए है—

अंतकी बंधांतर कृष्टि सहित याके ऊपरि पूर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष आदि
ऐसा— वि । ४ । २३ । १ अर एक अधिक गुणहानिका सोलह्वां भागकरि हीन छोट गुण-
ख । २४ । ५ । १६

हानिमात्र विशेष ऐसे— वि । ८ । २३ । सो उत्तर अर पूर्व सर्व कृष्टि प्रमाणकौ द्वयर्ध गुणहानि
का भाग दीएं सर्व नवीन भई बंधांतर कृष्टिमात्र गच्छ ऐसा ४ । ८ । ३ इहां गुणहानिकी
संदृष्टि आठका अंक है । जैसें स्थापि तहां संकलन घनमात्र बंधांतर कृष्टि विशेष नामा
द्रव्य हो है । सो इसकी संदृष्टिके विधानका मोकों ज्ञान न भया तातें नाही लिख्या है ।
बहुरि समय प्रबद्धका अनंतवां भाग जुदा जुदा स्थापै अवशेष किंचिदून समय प्रबद्ध ऐसा
(स —) ताकौ द्वयर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्धमात्र द्रव्यकौ कृष्टि प्रमाणका भाग दीएं
एक बंधांतर कृष्टिका द्रव्य ऐसा स १२ ताका भाग दीएं बंधांतर कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा
स १२
४ ख

स — इहां किंचिदून न गिणि समय प्रबद्धका अपवर्तन कीएं अर ऐसा ४ जो भागहारका
स १२
४ ख

भागहार या ताकौ राशि कीएं ऐसी नवीन निपजी कृष्टिनिका प्रमाण ४ भया बहुरि
खा । १२

याका भाग सर्व कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ । २३ ताकौ दीएं ऐसा ४ । २३ इहां ऐसे का
ख । २४ । ४
ख । २९

अपवर्तन कीएं ४ अर भागहारका भागहार ऐसा (१२) कौं राशि कीएं तहां ब्योढकारि
अपवर्तन कीएं ब्योढ गुणहानि ऐसा (१२) ब्योढ गुणहानिमात्र भाज्य या ताका तौ एक
गुणहानिमात्र ऐसा (८) भाज्य भया । अर चौईसका भागहार था सो सोलहका भागहार
भया तव ऐसा ८ । २३ नवीन निपजी बंध कृष्टिनिके वीचि जे कृष्टि तिनका प्रमाण हो हे

बहुरि पूर्वोक्त बंधांतर कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ ताका भाग किंचिदून समय प्रबद्ध

ऐसा (स -) ताकौं दीएं एक खंड होइ । ताकौं तिसही करि गुणें बंधांतर कृष्टि संबंधी समा-
न खंड हो हे । बहुरि जो समय प्रबद्धका अनंतवां भाग जुदा राख्या था ताकौं सर्व पूर्व अ-
पूर्व बंध कृष्टि प्रमाण गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग
दीएं विशेष होइ सो सर्व बंध कृष्टि प्रमाण गच्छका संकलन धनमात्र विशेष तिस जुदा रा-
ख्या भागविषैं ग्रहणकरि स्थापना । सो इहां एक विशेष ऐसा (वि) आदि एक विशेष उत्तर
अर सर्व कृष्टिनिका प्रमाणविषैं अनुभय उदय कृष्टिका प्रमाण घटाएं बंध कृष्टि हो हे । सो

तिस प्रमाणकौं किंचित् जानि न गिन्या । तव बंध कृष्टिमात्र गच्छ ऐसा ४ । २३ । इहां गच्छ
मैं एक घटाइ ताकौं दोयका भाग देइ उचर जो विशेष ताकरि गुणें ऐसा वि । ४ । २३

यार्भैं एक विशेष आदि मिलावनेकौं एक हीनकी जायगा एक अधिक भया ताकौं न गिनि

बहुरि गच्छकरि गुणें औसा वि । ४ । ११ । ४ । २१ हर्हा तेईस तेईसकौ परस्पर गुणि पांचसे
 न । २४ । २ । ख । २४ ।
 गुणतीस कीएं अर गुण्य गुणकार आगे पीछें औसा भया वि । ४ । ४ । ५२९ याका
 ख । २४ । ख । २४ । २
 नाम बंध विशेष है । बहुरि जुदा स्थाप्याविषैं याकौ घटाएं अवशेष समय प्रवद्धका अनंतवां
 भाग औसा स ताकौ सर्व बंध कृष्टि प्रमाणका भाग दीएं एक खंड होइ ताकौ तिसहीकरि
 ख
 गुणें बंध मध्यम खंड द्रव्य होइ । औसैं बंध द्रव्यका विधान कहा ताकी संदृष्टि औसी-

नाम	लोभाद्वितीयग्रह
बंधांतर कृष्टि	वि । ४ । २३ । ४
विशेषद्रव्य	ख । २४ । २ । ख । ८ । ३
बधांतरसंबंधी	स - ४
समान खंड	ख । २४ । ख । १२
बंधविशेष	वि । ४ । ४ । ५२९
खंड	ख । २४ । ख । २४ । २
बंधमध्यम	स । ४ । २३
खंड	ख । ४ । २३ । ख । २४
	ख । २४

इहां द्वितीय संग्रह हीका बंध है । तातैं तिसहीविषैं औसा विधान जानना । बहुरि सं-
 क्रमण द्रव्यकरि निपजी सूक्ष्म कृष्टिनिका द्रव्यविषैं विभाग कहिए है-
 सूक्ष्मकृष्टि संबंधी द्रव्य पूर्वोक्त औसा व । १२ । ५५३ ताकौ प्रथम समयविषैं कीनी
 २४ । ओ

सूक्ष्मकृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ औसा ४ ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून
ख
दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष औसा व । १२ । ५५३ १८ गच्छ अर संपूर्ण गच्छकौ
२४ । ओ । ४ । १६ - ४

ख ख २

दोय अर एकका भाग दीएं एक वार संकलन धन होह तिहिकरि तिस विशेषकौ गुणै सू-
क्ष्मकृष्टि संबंधी विशेष द्रव्य हो है । बहुरि याकरि हीन सूक्ष्मकृष्टिका द्रव्यकौ सूक्ष्मकृष्टि
प्रमाण औसा ४ का भाग दीएं एक खंड ताकौ तिसही करि गुणै सूक्ष्मकृष्टि संबंधी समान

ख

द्रव्य हो है । तिनकी संहष्टि औसी-

नाम	सूक्ष्मकृष्टि
विशेष द्रव्य	१८ व । १२ । ५५३ । ४ । ४ २४ । ओ । ४ । १६ - ४ । ख । ख । २
समान खंड द्रव्य	१८ व । १२ । ५५३ । ४ २४ । ओ । ख । ख । ख

बहुरि सूक्ष्मकृष्टि संबंधी विशेष औसा व । १२ । ५५३ १८ याकौ दोगुणहानिकरि गुणै
२४ । ओ । ४ । १६ - ४
ख ख

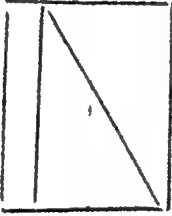
111 222

इहां अनुयायिणी रचना है। तातें आढी सहनानी करी है। तहां नीचें सूक्ष्मकृष्टि लिखी है। ताकी समयट्टिका अर विशेष घटा कमकी संहष्टिकरि नीचें आदि अंत कृष्टि निके द्रव्यका प्रमाण लिख्या है। बहुरि ताके उपरि लोभकी तृतीय कृष्टि अर ताके उपरि द्वितीय कृष्टि लिखी है। तहां समयट्टिका पूर्व विशेष अघस्तन कृष्टि उभय द्रव्य विशेष की संहष्टि पूर्वोक्त प्रकार करी है। बहुरि सिन कृष्टिनिके वीचि जे नवीन कृष्टि भई तिन

३६

25

की संहति वीचिमें लोककरी है । तहां संक्रमण द्रव्यकरि निपजीकी तौ सूची लीक अर
बंध द्रव्यकरि निपजी कृष्टिनिकी वक्र कहिए वाकी लीक करी है । बहुरि द्वितीय कृष्टिकी
जिनि पुरातन नूतन बंध कृष्टिनिविषैं बंधांतर कृष्टि विशेष बंध मध्यम खंडरूप बंध द्रव्य
दीजिये है । तहां उभय द्रव्य विशेषविषे इतना द्रव्य घटना दीया है ताकी संहति उभय द्रव्य
की रचनाविषैं औसी



मयविषैं प्रथम समयविषैं जेती कृष्टि कौनी तिनके असंख्यातवै भागमात्र नवीन कृष्टिकरि
ए है तिनकी संहति ४ तिनविषैं पूर्व कृष्टिनिके नीचैं जे कृष्टि करिए है तिनके असं-

ख्यातवै भागमात्र औसी ४ अर पूर्व कृष्टिनिके वीचि करिए है ते बहुभागमात्र औसी ४ । ३

इहां गुणकारका एक हीनपनांकों न गिणि अपवर्तन कीएं औसी ४ हो है । बहुरि इस

समयविषैं द्रव्य असंख्यात गुणा अपकर्षण करिए है । ताकी संहति औसी व । १२ । ५५३

२४ को

इहां असंख्यातका गुणकारकों अपकर्षण भागहारका भाग कीया है । बहुरि याविषैं एक
पूर्व विशेष आदि एक विशेष उत्तर एक घाटि प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ

१८
ऐसा ४ करि तहां संकलन सूत्रके अनुसारि गच्छ अर एक अधिक गच्छकौ दोयका भाग दीएं संकलन घन हो है । सो इतने विशेषमात्र द्रव्य ग्रहि जुदा स्थापना । याका नाम अध-
स्तन शीर्ष विशेष है । बहुरि प्रथमसमय संबंधी सूक्ष्म कृष्टि द्रव्यकौ प्रथम समयविषै कीनी
कृष्टि प्रमाणका भाग दीएं अर विशेष अधिक है । तिनिकौ न गिणै तिनकी जघन्य कृष्टि
का द्रव्य ऐसा व । १२ ताकौ द्वितीय समयविषै पूर्व कृष्टिनिके नीचै करी कृष्टिनिका प्र-
२४। अ०। ४

माण ऐसा ४ ताकरि गुणै नीचै निपजाई अपूर्व कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य हो है ।
बहुरि ताहीकौ वीचिकरी कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ ताकरि गुणै वीचि निपजाई अपूर्व
ख । ३। ३

कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य हो है बहुरि प्रथम द्वितीय समय संबंधी सूक्ष्म कृष्टिका
द्रव्यकौ मिलाय ताकौ प्रथम द्वितीय समय संबंधी सर्व सूक्ष्म कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छका
अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं एक उभय विशेष होइ
ताकी संहति ऐसी [वि] ताकौ प्रथम समय संबंधी कृष्टि प्रमाणविषै द्वितीय समय संबंधी
कृष्टि प्रमाण मिलावनेकौ अधिककी संहति कीएं गच्छ ऐसा ४ ताकरि अर एक अधिक-

करि गुणि दोयका भाग दीएं संकलन घनमात्र उभय विशेष द्रव्य हो है । बहुरि इस च्यारि प्रका-
रका द्रव्य घटावनेकौ सर्व द्रव्यके आगे किंचिदूनकी संहति करि ताकौ सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि प्र-

[illegible]

इहां पहलैं द्वितीय समयविषें नवीन करी नीचली कृष्टिनिकी रचना करी । ताके ऊपरि प्रथम समयविषें कीनी कृष्टिनिकी रचना करी । तहां समपट्टिका पूर्व विशेष अधस्तन कृष्टिकी रचना करी । अर वीचि वीचि नवीन भई कृष्टिनिकी ऊभी लीककी सहनानी करी बहुरि तिन दोऊ रचनानिके मध्यम खंड अर उभय द्रव्य विशेषकी समरूप क्रम हीन

रूप सहनानी करी । बहुरि ताके उपरि तृतीय द्वितीय संग्रहकी रचना करी ताका विधान प्रथम समयवत् जानना । जैसे ही आडी रचनाइहां करी है । बहुरि जैसे ही सूक्ष्म कृष्टिकारक का तृतीयादि अनिवृत्तिकरणका अंतसमय पर्यंत विधानकी रचना यथासंभव जाननी । बहुरि ताके अनंतरि सूक्ष्म सांपराय हो है । तहां प्रथम समयविषै सर्व मोहनीयका सत्त्वद्रव्य असा स । ३ । १२ इहां उत्कृष्ट समय प्रचद्वकौ द्वयर्थ गुणहानिकरि गुणै सर्व सत्त्व द्रव्य होह ७

ताकौ सातका भांग दीएं मोहका सत्त्व द्रव्य जानना । याकौ अपकर्षण भागहारका भाग दीएं अपकृष्ट द्रव्य असा स ३ । १२ याकौ पत्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भाग असा स । ३ । १२ ताकौ सूक्ष्म सांपरायका कालतै किछू अधिक जो अवस्थित गुण- ७ । ओ प ३

श्रेणि आयाम ताविषै गुणकार क्रमकरि देना । तहां अंक संहति अपेक्षा पित्यासीका भाग ताकौ देह एककरि गुणै प्रथम निषेकविषै चौसठिकरि गुणै अंत निषेकविषै दीया द्रव्य हो है । बहुरि बहुभाग जैसे स ३ । १२-प इहां गुणकारविषै एक हीनकौ न गिणि पत्यके असंख्या- ७ । ओ । प ३ ३

तवै भागका अपवर्तन कीएं असा स ३ । १२ बहुरि अंतरायामका प्रमाण संख्यात गुणा अंतमुद्धृतमात्र असा २ १ । ४ यातै संख्यात गुणा स्थिति कांडकायाम असा २ १ । ४ । ४ ७ । ओ

यातैं संख्यात गुणी कांडकके नीचें अवशेष रही स्थिति सो ऐसी २७।४।४।४।४ इहां गुणकारनिकों परस्पर गुणें कांडकायाम औसा २७।१६ अर अवशेष स्थिति ऐसी- २७।६४ इनिकों मिलाएं द्वितीय स्थितिका प्रमाण औसा २७।८० याकों अंतरायाम का भाग दीएं बीस पाए ताका भाग तिस बहुभागकों देह न्यारितौ अंतरायामविषे दीएं तिनकी संहति ऐसी स।३।१२।४ अर सोलह भाग प्रमाण द्रव्य द्वितीय स्थितिविषे ७।३०

दीया ताकी संहति ऐसी स ३।१२।१६ इहां यथा योग्य संख्यातकी सहनानी न्यारिका ७।ओ।२०

अंककरि ऐसी संहति करी है। बहुरि अपना अपना द्रव्यकों अपना अपना आयाममात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष होइ। ताकों दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम निषेकविषे अर तिस गुणकारविषे क्रमतैं एक एक घटाइ एक घाटि अपने गच्छमात्र घटैं अंत निषेकविषे दीया द्रव्य हो है। इहां अंतरायामका गच्छ औसा २७।४ अर द्वितीय स्थितिका गच्छ औसा २७।८० जानना। तहां द्वितीय स्थितिविषे अंतकी अतिस्थापनावलीविषे द्रव्य दीजिए है। तातैं तिस गच्छविषे इतना घाटि है। तथापि ताकों किंचित् जानि संहतिविषे नाही गिन्या है। इनकी संहति ऐसी-

लिख्या है। मध्य निषेकानि की विंती सहनानी करी है। इनके उपरि अतिस्थापनावलीकी सहनानी च्यारिका अंक कीया है। अर इहां अंतरायामविषे पूर्वे द्रव्यका अभाव था नवीन ही द्रव्य दीया तातें दो बड़ी लीक करी। द्वितीय स्थितिविषे पूर्वे द्रव्य था नवीन ही दीया तातें दो बड़ी लीक करी। बहुरि द्वितीयादि समयविषे भी ऐसा क्रम जानना।

बहुरि प्रथम स्थितिकांडककी अंत फालिका पतनसमयविषे विधान कहिए है—द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेकविषे एक घाटि द्वितीय स्थितिमात्र विशेष घटाएं चरम फालिका अंत निषेक ऐसा स। ३। १२ इहां सत्व द्रव्यको द्वितीय स्थितिका भाग दीएं मध्य निषेक हो

७। २७। ४। २०

है। ताविषे जो विशेष हीन है तिनको द्रव्यका प्रमाण किंचित जानि नाही गिन्या है बहुरि ताको अंतरायाममात्र जो चरम फालिके निषेकनिका प्रमाण ताकरि गुणें चरम फालिका सर्व द्रव्य ऐसा स। ३। १२। २७। ४। ४ इहां विशेष अधिक है तिनिका द्रव्यको किंचित जानि नाही गिन्या है। इहां असे २७। ४ का अपवर्तन कीएं ऐसा स। ३। १२। ४

७। २७। ४। २०

याविषे गुणश्रेणिके अर्थ अपकर्षण कीया द्रव्य भिलावना ताको किंचित जानि संदृष्टिविषे नाही गिन्या है। बहुरि याको पत्यका असंख्यातवां भागका भाग देह एक भाग ऐसा स। ३। १२। ४ गुणश्रेणि आयामविषे पूर्वोक्त प्रकार क्रमरूप देना। बहुरि बहुभाग ऐसा

७। २०। ४

३

२५

१-८

स। ३। १२। ४। ५
७। २०। ५ ३

अपवर्तन कीएं औसा स। ३। १२। ४ याविषे अंतरायामविषे दीया द्रव्य औसा स। ३। १२। ३०

७। २०।

अर द्वितीय स्थिति विषे दीया द्रव्य औसा स। ३। १२। ३। १३ इनि दीए दोऊ द्रव्यनि विषे

७। २०। १७

औसा गुणकार भागहार कैसे भया ताका मोकों नीकें ज्ञान नाहीं भया तातें विधान नाहीं
लिख्या है। बहुरि अंतरायामका गच्छ औसा २ ७। ४ अर कांडक घात इहां संपूर्ण भया
तातें कांडकायाम सहित अवशेष द्वितीय स्थितिका गच्छ औसा २ ७। ४ १ ४ सो अपने
अपने गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष
होइ ताकों दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम निषेक इस गुणकारविषे एक घाटि गच्छ घटाएं
अंत निषेक हो है। इनकी रचना औसी—

सूक्तसंस्कारविषये प्रथमकांडक अन्वयात्कालि पठनसमय रचना ।

स ३१२।३।१६।१६-२७६४

४

प्रतिस्थापनावली

७२० १७ २७ ६४ १६-२७६४

द्वितीयस्थितिः

स ३१२३ १६ १६ १-२७६४

७२० २७ ६४ १६-२७६४

अंतरायाम

स ३१२२० १६-२७६४

७२० २७ ६४ १६-२७६४

स ३१२२० १६ १-२७६४

७२० २७ ६४ १६-२७६४

गुणश्रेणि

स ३१२४ ६४

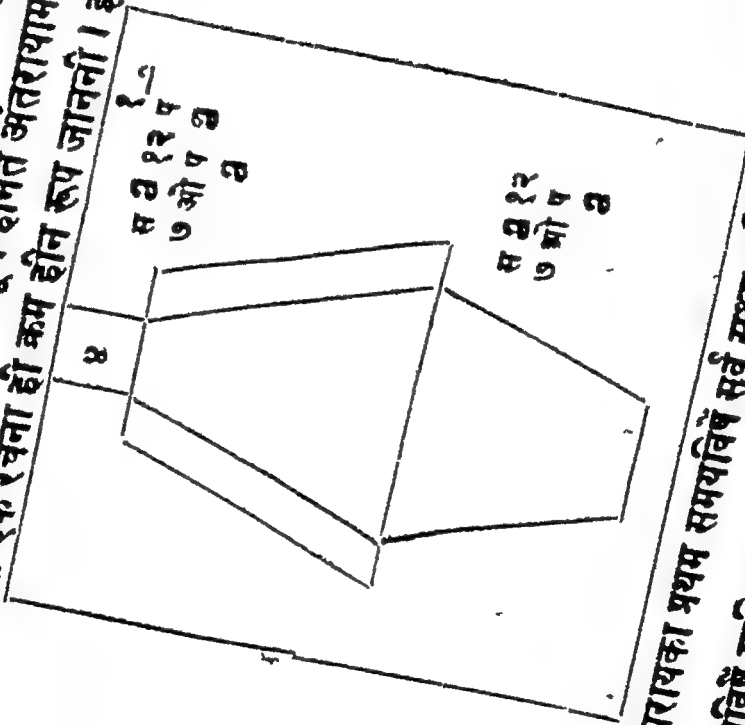
७२० ८५

स ३१२४

७२० ८५

इहां रचना पूर्वोक्त प्रकार जाननी । अंतरायामविषे पूर्व भी द्रव्य था तातें इहां दो मदी लीक करी हैं । बहुरि द्वितीय कांडकका प्रथम फालिपतन समयविषे सर्व द्रव्यकौ अप-

कर्षण भागहारका भाग दीएं ऐसा स १३। १२ द्रव्य ग्रहि ताकों पत्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग गुणश्रोत्रे आयामविषे बहुभाग उपरितन स्थितिविषे अतिस्था- पनावली छोड दीजिए है। इहां अंतरायाम पूर्ण होनेतें अंतरायाम अर द्वितीय स्थितिका एक गोपुच्छ भया। तातें एक रचना ही कम हीन रूप जाननी। इनिकी संहति ऐसी-



बहुरि सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषे सर्व सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रथम समयविषे कानी सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रमाणविषे साधिक कीएं ऐसा ४ ताकों पत्यका असंख्यातवां भागका

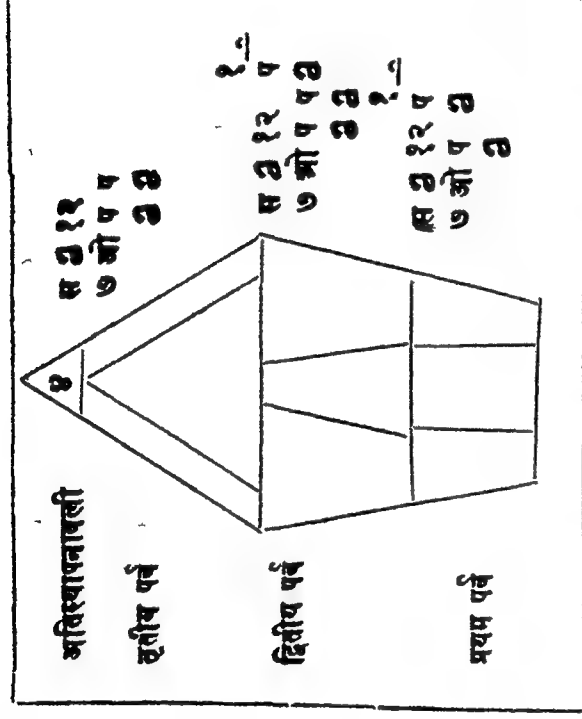
—
असि

<div style="text-align: center;"> <p>० ० ० ० ०</p> </div>	तृतीय	२ ३ ३	४ ३	३ ३
	द्वितीय	२ ३	४ ३	३ ३
	प्रथम	१ २ ३	४ ५ ६	७ ८ ९

इहाँ क्रम हीन रूप प्रथमादि समयविविधें उदय आवने योग्य प्रथमादि निष्क सिनकी

ऊर्ध्व रचनाकरि तहां प्रथमादि निषेकनिविधे नीचली अनुदय मध्यकी ऊपरली अनुदय कृष्टिनिकी आडी रचना करी है। अर तिनिका प्रमाण लिख्या है। तहां द्वितीयादि निषेक-निविधे नीचली ऊपरली कृष्टिनिविधे दोय तीन भाग ये तिनकी संहृष्टि दोय तीनका अंक-निका प्रमाण लिख्या है। वीचिमें सर्व कृष्टिनिकों दोय तीन आदि करि किंचिदुकी सहना-नीकरि उदय कृष्टिनिका प्रमाण लिख्या है असा जानना। बहुरि सूक्ष्म सांपरायका अंत-कांडका द्रव्य असा-स ३। १२ इहां किंचित् ऊन हे ताकों न गिण्या है। याकों अपकर्षण भागहारका भाग दीएं असा-स ३। १२ प्रथम फालिका द्रव्य हो है। याकों पत्यका असं-

ख्यातवां भागका भाग देह बहुभाग सूक्ष्मसांपरायका अंतसमयपर्यंत गुणकार क्रमकरि दी-जिए है। इहां यह गुणश्रेणि शीर्ष है। बहुरि अवशेष एक भागकों पत्यका असंख्यातवां भागका भाग देह बहुभाग पुरातन गुण श्रेणिका अंतपर्यंत विशेष घटता क्रमकरि दीजिए है बहुरि अवशेष एक भाग ताके उपरि स्थितिनिविधे अतिस्थापनावली छोडे विशेष घटता क्रमकरि दीजिए है। असें तीन पर्वनिविधे द्रव्य दीजिए है ताकी रचना ऐसी-



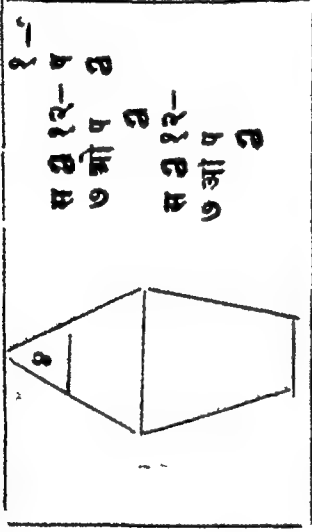
इहाँ नीचें अधिक क्रमरूप पुरातन गुणश्रेणिकी रचनाकरि ताविषें दीया द्रव्यकी दूसरी लीक नीचें प्रथम पर्वकी अधिक क्रमरूप ताके उपरि द्वितीय पर्वकी क्रमहीनरूप संक्षिप्त करी है। बहुरि ताके उपरि तृतीय पर्वका पुरातन नवीन द्रव्यकी दोऊ लीक क्रमहीन रूप करी हैं। इनके आगे दीया द्रव्यका प्रमाण लिख्या है। उपरि अतिस्थापनावली लिखी है असा जानना। बहुरि अँमें ही द्वितीयादि फालिषिषें विधान जानना। बहुरि अंतर्फालि का द्रव्य किंचिदून द्वयर्धगुणहानि गुणित समय प्रवद्ध प्रमाण असा स। ३। १२ ताकौ पत्यका असंख्यात वर्गमूलमात्र असंख्यातका भाग देह एक भागमात्र ताकौ सुक्ष्मसांपरायका द्वि-

चरम समय पर्यंत प्रथम पूर्वविषे असंख्यातगुणा क्रमकरि देना । तहां ताकाँ अंक संहष्टि करि पिब्यासीका भाग देह एक च्यारि सोलह चौसठिकरि गुणें प्रथमादिनिषेक हो हैं । ब-
हुरि बहुभाग सूक्ष्मसांपरायका अंत समय संबंधी निषेकविषे दीजिए है । यह दूसरा पूर्व है
इनकी संहष्टि रचना ऐसी-

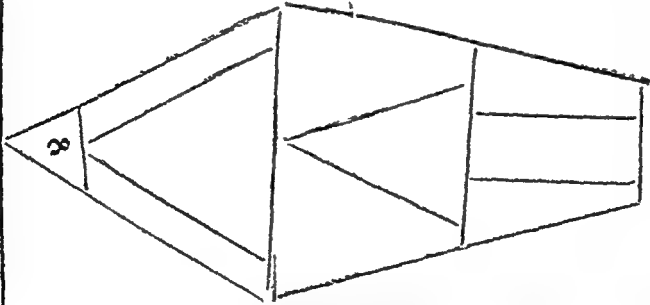
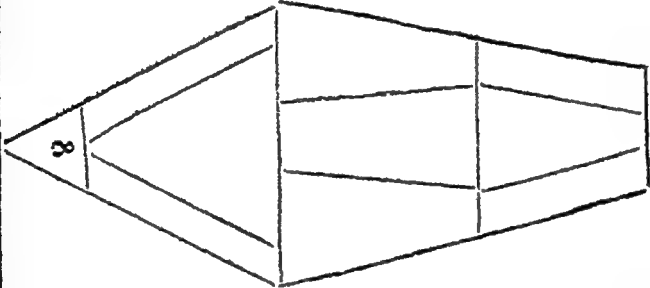
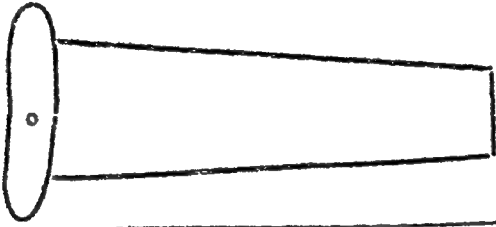
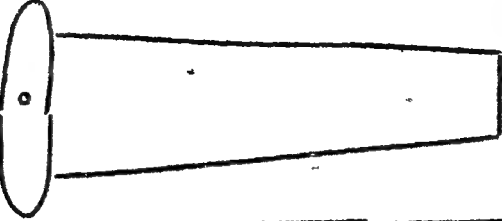
द्वितीयपूर्व	स ३ १२-— सू ३ ७ सू ३
प्रथमपूर्व	स ३ १२-— ६४ ७ ३ ८५
	स ३ १२-— १६ ७ ३ ८५
	स ३ १२-४ ७ ३ ८५
	स ३ १२-१ ७ ३ ८५

इहां नीचें प्रथम पूर्वकी अधिक क्रम रूप संहष्टि करी है । ताके आगे प्रथमादि निषेकका द्रव्य लिख्या है । ताके उपरि एक निषेक बडा लिख्या है । ताके आगे तहांही दिया द्रव्य लिख्या है जैसे कृष्टि वेदनाधिकारका विधानविषे संहष्टि जाननी । बहुरि क्षीणकथायविषे छह कर्मनिविषे विव-
क्षित एक कर्मका सत्त्व द्रव्य ऐसा स । ३ । १२ ताकाँ अपकर्षण भागहारका भाग देह एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि ताकाँ पत्यका असंख्यातवां भागका भाग देह तहां एक भाग गुणश्रेणि आयाम

विषे गुणकार क्रमकरि बहुभाग उपरितन स्थितिविषे अतिस्थापनावली छोडि विशेष घटता
क्रमकरि देना तिनकी संहति असी—



बहुरि निद्रादिक चोदह घातियानिका अंतकांडकविषे प्रथमादि फालिनिका वा अंत
फालिका द्रव्य देनेका विधान जेसे सुक्ष्म सांपरायविषे मोहका कह्या तेसे ही जानना ।
तिनकी रचना पूर्वोक्त प्रकार असी—

निद्रादिक प्रथमादिफालि	चौदह घातियानिकी प्रथमादिफालि	निद्रादिककी अंतफालि	चौदह घातियानिकी अंतफालि
			

बहुति तीन वेद व्यापि कषायनिविष्टे एक सहित चढनेकी अपेक्षा क्षपक जीव बारह प्रकार हैं। तहां पुरुष वेद क्रोध सहित चढनेवालेके नपुंसक स्त्री सात नोकषाय क्षपणा अश्व-करण कृष्टिकरण क्रोध मान माया लोभ क्षपणा क्रमैतें हो हे बहुति मान माया लोभ सहित चढ्याके नोकषाय क्षपणा पर्यंत तौ समान है पीछें क्रोधकी अर क्रोध मानकी अर क्रोध

मायाकी क्रममें क्षपणा हो है। पीछें अधिकरण कृष्टिकरण हो है पीछे क्रममें अवशेष कषायानि-
की क्षपणा हो है बहुरि अंतकरण पीछें कृष्टि करण पर्यंत तो जिस कषाय सहित चढ्या
ताकी प्रथम स्थिति स्यापे है। पीछें अवशेष कषायानि की जुदी जुदी प्रथम स्थिति स्यापे है
सो प्रथम स्थिति गुणश्रेण्यायाम रूप है तातें तिनकी अधिक क्रम रूप रचना जाननी।
बहुरि नपुंसक स्त्रीवेद सहित चढ्या जीवकें स्त्रीवेदका क्षपणा कालविषे दोऊ वेदनिकी
क्षपणा हो है। इहां जिस वेद सहित चढ्या ताहीकी प्रथम स्थिति स्यापे है। ऐसा जानना।
ऐसे ए नव कालके प्रत्येक यथायोग्य अंतर्मुहूर्तमात्र जानने तिनकी संहति रचना ऐसी-

२७	लो स	लो स	लो स	लो स
२७	या स	या स	या स	कि का
२७	मा स	मा स	मा स	अ स्स
२७	को स	कि का	अ स्स	या स
२७	कि का	अ स्स	मा स	मा स
२७	अ स्स	को स	को स	को स
२७	नो ७	नो ७	नो ७	नो ७
२७	न ६	न ६	६	६
२७	न	न	न	न
न	६	की	मा	या
७	७	७	७	७

इहाँ इनका प्राकृत नामका आदि अक्षरकी संहारि जाननी । बहुरि अवशेष तीन

घाति कर्मनिका नाशकरि सयोग केवली हो है । तहां प्रथमादि समयविषे आयुविना तीन घातियानिका द्रव्यकों अपकर्षण भागहारका भाग देह उदयादि गुणश्रेणि आयामविषे गुणकार कर्मकरि उपरितन स्थितिविषे विशेष घटता कर्मकरि अतिस्थापनावली छोड दीजिए है । ताकी संहिष्टि सुगम है । इहां स्वस्थान केवलीतें आवर्जित करणविषे अपकर्षण द्रव्य असंख्यात गुणा, गुणश्रेणि काल संख्यातवे भागमात्र जानना । बहुरि दंड कपाट प्रतरलोक पुरणविषे स्थिति सत्व घात कीया ताका प्रमाण दंडविषे पत्यका असंख्यातवां भागकों असंख्यातका भाग देह बहुभागमात्र अर कपाटविषे अवशेष एक भागकों तैसे ही भाग देह बहुभागमात्र बहुरि प्रतरविषे अवशेष एक भागकों तैसे ही भाग देह बहुभागमात्र अर लोकपूरणविषे अवशेष एक भाग संख्यात गुणा अंतर्मुहूर्तकरि हीन जानना । जैसे समय समय घात भए अवशेष स्थिति संख्यात गुणा अंतर्मुहूर्तमात्र रहै है । ताका संख्यात बहु-भाग आयाम रूप कांडक बिधानकरि कर्मतें घात कीएं आयुके समान तीन घातियानिकी अंतर्मुहूर्तमात्र स्थिति रहै है ताकी संहिष्टि औसी-

याहीका नाम स्पर्धक शलाका है। ताकी संहृष्टि नवका अंक है (१) बहुरि गुणहानि समूहरूप एक स्थान तीहिविषै गुणहानिका पत्यके असंख्यातवे भागमात्र है। याहीका नाम नानागुणहानि है। ताकी संहृष्टि औसी (ना) औसै जघन्य स्थान हो है। इनके प्रमाणकी संहृष्टि औसी जाननी-

अवि ≡	वर्ग ≡ ३	वर्ग्या ३	स्पर्धक ३ ३	गुणहानि १	नानागुणहानि १
----------	-------------	--------------	----------------	--------------	------------------

बहुरि स्थान स्थान प्रति सूत्र्यंगुलका असंख्यातवां भाग प्रमाण मात्र जघन्य स्पर्धक बंधे है। औसै उत्कृष्ट परिणाम योग पर्यंत क्रम है औसै पूर्वस्पर्धकविषै विधान है। तहां पूर्वस्पर्धकका जघन्य वर्गके अविभाग प्रतिच्छेदनिकी संहृष्टि औसी (व) याकौ स्पर्धक शलाका अर नाना गुणहानिकरि गुणै अंत स्पर्धकका प्रथम वर्गकी संहृष्टि होह। तामें अंक संहृष्टि अपेक्षा वर्गणा शलाकाका प्रमाण ब्यारि तामें एक घटाएं तीन होह सो अधिक कीएं पूर्व स्पर्धकका उत्कृष्ट वर्गके अविभाग प्रतिच्छेदनिकी संहृष्टि औसी- व। १। ना बहुरि इनके नीचै अपूर्वस्पर्धक हो है तिनका प्रमाण स्पर्धकशलाकाकौ असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र हो है सो औसा - ८ याका उत्कृष्ट वर्गविषै अविभाग प्र-
प्रो ३

तिच्छेद पूर्वस्पर्धकका जघन्य वर्गके असंख्यातवे भागमात्र है सो औसा व याकौ अपूर्व स्पर्धक प्रमाणका भाग अपूर्वस्पर्धकके जघन्यवर्गका अविभाग प्रतिच्छेद हो है। सो

ऐसा—व ९ बहुरि सर्व प्रदेशनिकों द्वयर्ध गुणहानिका भाग दीएं पूर्वस्पर्धककी प्रथम ३ ओ ३

वर्गणाका द्रव्य हो है । याकों दोगुण हानिका भाग दीएं एक विशेष हो है । बहुरि प्रथम-वर्गणातैं द्वितीयादि अंतवर्गणा पर्यंत एक एक विशेष घटता द्रव्य प्रथम गुणहानिविधें हो है । बहुरि द्वितीयादि गुणहानिविधें आधा आधा क्रम अंत गुणहानि पर्यंत जानना । बहुरि आदि वर्गणाकों द्वयर्ध गुणहानिकारि गुणें सर्व प्रदेश प्रमाण ऐसा (व १२) ताकों अपकर्षण भागहारका भाग देह एक भागमात्र द्रव्य ग्रहि ताकों अपूर्व पूर्व स्पर्धकनिविधें यथा योग्य दीजिए है । इनकी संदृष्टि यथासंभव जानि लेनी । पूर्व अपूर्वस्पर्धकनिकी रचना ऐसी—

पूर्वस्पर्धक	३—	व	९	ना
६ ना				यहां द्रव्यकी संदृष्टि यथा संभव जाननी
अपूर्वस्पर्धक		व	व	३
९ ओ ३		व	६	३ ओ ३

इहाँ रचना ऊभी लीक करी है । नदुरि द्वितीय समयविषै प्रथम समयतँ असंख्यात गुणा द्रव्य अपकर्षण करै है सो ऐसा—व १२ इहाँ गुणकारकों भागहारका भागहार कीया औ

हे । बहुरि प्रथम समयविषैं कीने अपूर्वस्पर्धकनिके नीचै नवीन अपूर्वस्पर्धक करिण है ।
तिनका प्रमाण प्रथम समय संबंधी स्पर्धकनिके असंख्यातवे भागमात्र है सो ऐसा-९ इहां
संहाष्टि रचना औसी—

२ ना	३ ओ ३	४ ओ ३ ३
पूर्वस्य स्पर्धक	प्रथमतः प्रयत्नपूर्व स्पर्धक	द्वितीयस्य प्रयत्नपूर्व स्पर्धक

इहाँ सर्वे स्पर्षकनिकी वर्गणाकी संहष्टिविषे समपट्टिका करि आगँ विशेष घटता क्रम की संहष्टि करी है । तहाँ उपरि छुँवें स्पर्षक नीचें प्रथम समयविषे कीने, अपूर्व स्पर्षक अर्चि द्वितीय समयविषे कीने । अपूर्व स्पर्षककी रचना जाननी । असें ही अपूर्वस्पर्षक करणकाल

का अंत समय पर्यंत जानना । बहुरि कृष्टि करण कालका प्रथम समयविषे सर्व पूर्व अपूर्व स्पर्धक संबंधी जीव प्रदेश ऐसे-व १२ । इनिकों अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र ऐसा व । १२ । ग्रहि प्रथम समयविषे कीनी प्रथमादि कृष्टिनिविषे अर अपूर्व स्पर्धककी प्रथ-

ग्रो

मादि वर्गणानिविषे द्रव्य दीजिए है । इहां कीनी कृष्टिनिका प्रमाण वर्गणा शलाकाके असंख्यातवे भागमात्र ऐसा ४ इनकी रचना ऐसी—



इहां कृष्टिकी समपट्टिकारूप संहतिकरि नीचें विशेष घटता क्रमकी संहति करी है बहुरि द्वितीय समयविषे पूर्व द्रव्यें असंख्यातगुणा द्रव्य ऐसा व । १२ । ग्रहि ताकौ प्रथम समय

को

३

विषे कीनी कृष्टि प्रमाणकों असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र ऐसा ४ । तिनके नीचें नवीन कृष्टि करै है । तिनविषे अर प्रथम समय संबंधी प्रथम कृष्टिकों

३३

आदि देय अंत कृष्टि पर्यंत कृष्टिनिविषे निक्षेपण करै है । इनकी रचना ऐसी—

द्वितीय समय कुल कृष्टि ४ ओ ३	प्रथम समयकृतकृष्टि समपट्टिका
	प्रथम समयकृतकर्णव्य विशेष
	अवस्तानशीर्ष
	मध्यमखण्ड
	उभय द्रव्य विशेष

इहां नीचें नवीन कृष्टिनीकी उपरि पुरातन कृष्टिकी संहति करी हे । तहां पुरातन कृष्टिविषे समपट्टिका अर विशेष घटता क्रमकी संहति करी हे । बहुरि पुरातन कृष्टिविषे अवस्तान शीर्ष विशेष द्रव्य दीपे सर्वकृष्टिकी समपट्टिका भई ताकी सर्व कृष्टिनिविषे मध्यम खण्ड द्रव्य दीपे समपट्टिका रही ताकी अर उभय द्रव्य विशेष दीपे विशेष घटता क्रम भया ताकी रचना करी हे । इहां औसैं आढी रचना करी हे । बहुरि इहां प्रथम समयविषे प्रया द्रव्य असा व । १२ याकौ पत्यका असंख्यातवां भागका भाग दीपे कृष्टि संबंधी द्रव्य असा ओ

व । १२ अवशेष बहुभागमात्र द्रव्य पूर्व अपूर्व स्पर्शकनिविषे दीजिए हे । बहुरि कृष्टिसंबंधी जो ४

द्रव्यकौ प्रथम समयविषे कीनी कृष्टि प्रमाणमात्र गण्ड असा ४ ताका अर किंचित् न दोगुण

हानि ऐसा १६- ताका भाग दीएं प्रथम समय संबंधी विशेष होइ सो ऐसा व । १२ ताकौ
ओ प ४ १६-

दोगुणहानि करि गुणै प्रथमवर्गणा औसी व । १२ । १६ ताकौ द्वितीय समयविषै कीनी
ओ प ४ १६-

कृष्टि प्रमाण ऐसा-४ ओ ३ । ताकरि गुणै अधस्तन कृष्टिका द्रव्य हो है । बहुरि प्रथम समय
संबंधी विशेष ऐसा-व । १२ ताकौ एक घाटि प्रथम समय संबंधी कृष्टि प्रमाण गच्छ अर
ओ प ४ १६-

तातै एक अधिक प्रमाणकौ दोयका भाग दीएं तिस गच्छका संकलन घन होइ सो ऐसा-
४ । ४ याकरि गुणै अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य हो है । बहुरि द्वितीय समयविषै द्रव्य ऐसा-
४ ४ २

व १२ ओ ३ हहां भागहारका भागहारकौ राशिका गुणकार कीएं ऐसा व १२ । ३ याकौ
पत्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं कृष्टि संबंधी द्रव्य ऐसा व । १२ । ३ याविषै प्रथम
ओ प ३

समय संबंधी कृष्टि संबंधी द्रव्य मिलावनेकौ अगिला असंख्यातका गुणकार उपरि एक अ-
धिक कीएं उभय संबंधी कृष्टि द्रव्य ऐसा व । १२ ३ याकौ प्रथम समयविषै कीनी कृष्टि
ओ । प ३

प्रमाण विषै द्वितीय समय संबंधी कृष्टि मिलावनेको साधिक कीएं उभय समय संबंधी कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ औसा ४ ताका अर किंचिदून दोगुणहानिका भाग दीएं उभय द्रव्य विशेष औसा व १२ ३ याको उभयकृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ अर तातै एक अधिक प्रमाणको ।

ओ ५ ४ १६-

३ ३

। १-

दोयका भाग दीएं तिस गच्छका संकलन घन औसा ४ । ४ ताकरि गुणै उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है । बहुरि द्वितीय समय संबंधी द्रव्यविषै पूर्वोक्त तीन द्रव्य घटावनेकी आगै औसी

(३) संहष्टि कीएं अवशेष द्रव्य औसा व । १२ । ३ । ३ याको उभय संबंधी कृष्टिनिका भाग को । ५

३

दीएं एक खंड होह । ताको तिस ही करि गुणै सर्व मध्यम खंड द्रव्य हो है । इनकी संहष्टि औसी-

प्रधस्तन कृष्टि	ब। १२। १६। ४ ओ। ५। ४। १६ - ३। ओ३ ३ ३
प्रधस्तन शीर्ष	१ - ब। १२। ४। ४ ओ। ५। ४। १६ - ३ ३। २ ३ ३
उभय द्रव्य विशेष	१ - १ - ब। १२। ३। ४। ४ ओ। ५। ४। १६ - ३ ३। २ ३ ३
मध्यम खंड	१ - ब। १२। ३ = ४ ओ। ५। ४ ३ ३

बहुरि अंत कृष्टि करण कालका तृतीयादि समयनिविषे यथा संभव रचना जाननी ।
इहां अपूर्व स्पर्धकानिका वा सूक्ष्म कृष्टिका विधान अनिवृत्तिकरणवत् जानना । तहां कर्मपर-
माणनिविषे अनुभाग शक्ति अपेक्षा कथन है । इहां जीव प्रदेशनिविषे योग शक्तिका निरू-
पण है तहां प्रमाणादिकका विशेष है सो विशेष जानना । बहुरि कृष्टि वेदक कालका प्रथम
समयविषे विधान कहिए है-
कृष्टि करण कालका प्रथम समयविषे कीनी कृष्टि प्रमाणविषे अन्य समयविषे कीनी

कृष्टि प्रमाण मिलावनेको अधिककी संहष्टि कीएं सर्व कृष्टि प्रमाण ओसा ४ तार्को पल्यका ३

असंख्यातर्वा भागका भाग दीएं बहुभाग औसा

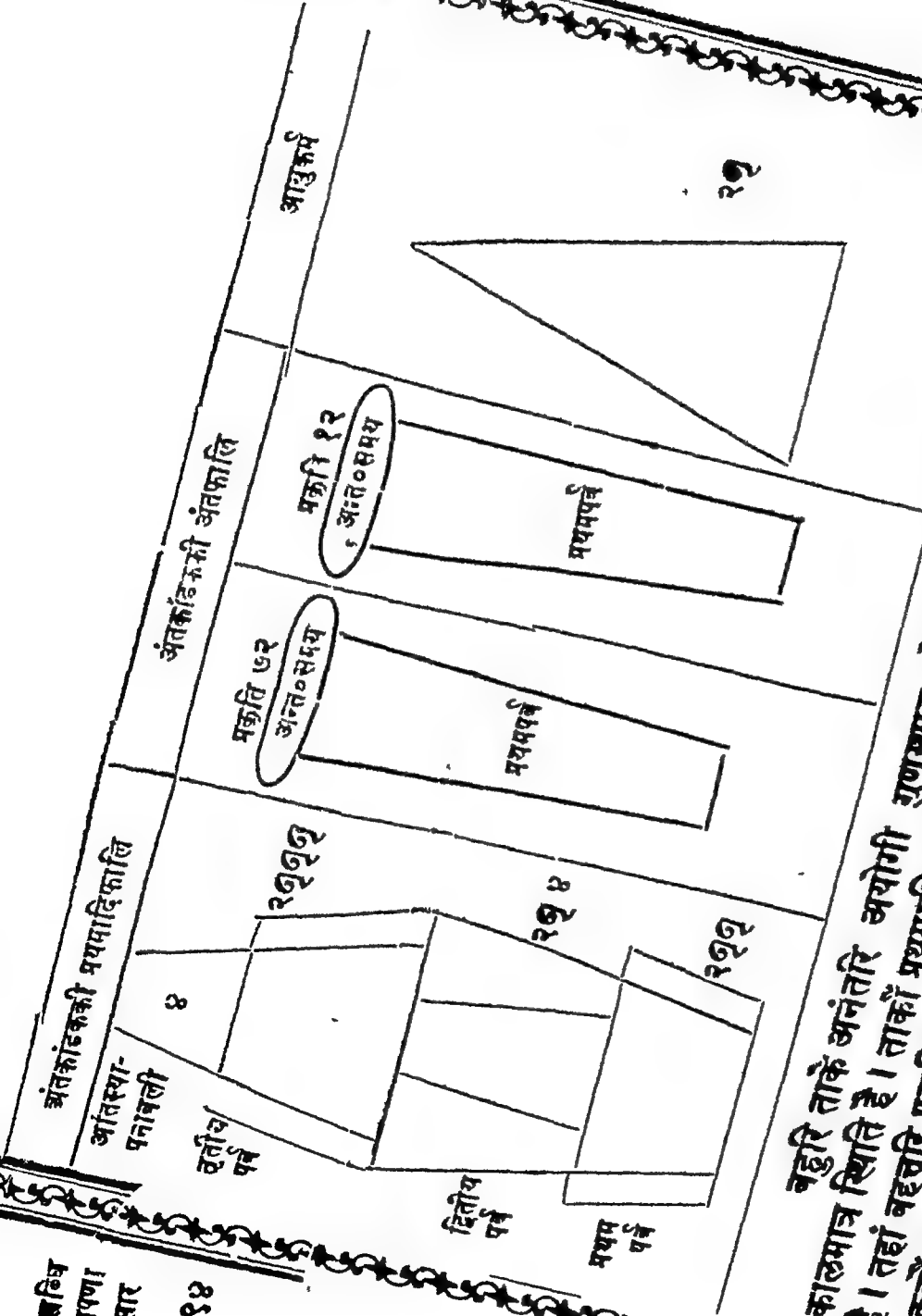
बहुरि एक भाग औसा ४। प तार्कौ अंक संहति अपेक्षा पांचका भाग देह दोय भागमात्र
३।३

नीचेकी तीन भागमात्र ऊपरिकी अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण जानना । बहुरि द्वितीय समय विषे नीचेकी अनुदय कृष्टिनिविषे तिनके असंख्यातेवे भागमात्र उदय रूप हो हैं । अर उपरिकी अनुदय कृष्टिनिविषे तिनके असंख्यातेवे भागमात्र उदय कृष्टि हैं । ते अनुदय रूप हो हैं । अैसे ही तृतीयादि समयनिविषे विधान जानना । इस सूक्ष्म कृष्टि वेदक काल-विषे सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती शुद्ध्यान हो है । ताकी संहृष्टि अैसी-

द्वितीयसमय	० ० ०		
	अनुदय	उदय	अनुदय
प्रथमसमय	१ ४ २ ३ ३ ५ ५ ३	४ = ४ ३ ३ ३ ५ ५ ३	४ ३ ३ ३ ५ ५ ३
	अनुदय	उदय	अनुदय
	१ ४ २ ३ ३ ५ ५ ३	१ ५ ४ ३ ३ ५ ५ ३	४ ३ ३ ३ ५ ५ ३
	अनुदय	उदय	अनुदय

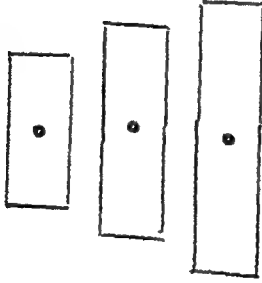
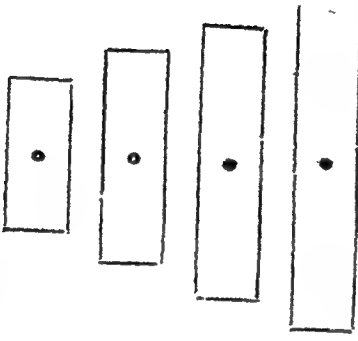
इहां प्रथमादि समयनिकी रचनाकरि तहां कृष्टिनिकी रचना आगैं करी है । तहां समपाटिका विशेष घटता क्रमरूप संदृष्टि करी है अर अनुदय उदय अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण लिख्या है बहुरि सयोगीविषे अंतर्मुहूर्त काल अवशेष रहै वेदनीय नाम गोत्रका अंत कांडककी प्रथम फालिका पतन हो है । तहां ताके द्रव्यको ग्राहि स्थिति कांडक घात कीएं

पीछे अवशेष जो स्थिति रहेगी ताविषे असंख्यातगुणा क्रमकारि अर ताके उपरि पुरातन गुणश्रेणि आयामका अंत पर्यंत चय घटता क्रमकारि अर ताके उपरि अतिस्थापनावली छोडि उपरितन स्थितिविषे चय घटता क्रमकारि द्रव्य दीजिए है। औसैं इहां तीन पर्व जानने औसैं ही ताकी द्वितीयादि चरमफालि पतन समय पर्यंत विधान जानना । बहुरि अंत फालि पतन समयविषे अवशेष स्थितिका द्विचरम समय पर्यंत एक पर्व अर अंत समयरूप द्वितीय पर्व औसैं दोय पर्वनिविषे द्रव्य दीजिए है । इहां पिन्व्यासी प्रकृतिनिका सत्त्वविषे बहुत्तरि प्रकृति तो अयोगीका द्विचरम समयविषे अर तेरह प्रकृति ताका अंत समयविषे सिपैंगी तातैं जुदी जुदी रचना करिए है । अर तेरह प्रकृतिनिविषे मनुष्यायुका स्थिति कांडक घात नाहीं । तातैं इहां बारह प्रकृतिनिका ग्रहण कीया है । सो इहां जैसैं क्षीण कषायविषे ज्ञानावरणादिकनिका अंत कांडकविषे विधान वा सम्यग्दृष्टिका स्वरूप कह्या या तैसैं इहां जानना । बहुरि आयुकी अंतमुहूर्तमात्र स्थिति रही ताकी घटता क्रमलीएं निषेकनिकी रचना जाननी । औसैं इनकी संदृष्टि औसी हो है—



बहुरि ताकै अनंतरि अयोगी गुणस्थान हो है तहां पांच लयु अक्षर उच्चारण कालमात्र स्थिति है। ताकौ प्रथमादि समयनिविधे तिन पर्वनिका एक एक निषेककौ गलावे है। तहां बहुरि मकृतिनिका द्वित्रय समयविधे तेरह मकृतिनिका अंत समयविधे अंत निषेककौ गलावे है। सो इहां अयोगी कालका अंक संहतिकरि च्यारि समय मानि बहुरि

प्रकृतिक तीन निषेक रूप अर बारह प्रकृतिनिकी व्यारि निषेक रूप रचना ऐसी जाननी

प्रकृति ७२	प्रकृति १२
	

अर निषेक घटते क्रम लीएं हैं अर अधोगलन रूप जुदे जुदे हैं तातैं तिनकी जुदी जुदी रचना घटता क्रम लीएं करी है औसैं सर्व कर्मनिका क्षयकरि ताका अनंतर समयविषैं पर द्रव्य संबंधी रहित केवल आत्मा ऊर्ध्व गमनकरि लोकका अग्रभागविषैं जाइ विराजमान हो है । तहां अनंत काल पर्यंत तैसैं ही रहै है तातैं कृतकृत्य अवस्थाको प्राप्त भए तातैं तिनको सिद्ध कहिए । सो सिद्ध भगवान परम मंगलकारी होऊ । औसैं श्रीलब्धिसार नामा शास्त्र अर इसहीविषैं क्षणसागर शास्त्रका अर्थ गर्भित है । ताविषैं अर्थनिकी संहति अर तिन संहतिनिका स्वरूप निरूपण किया है । तहां जो चुक होइ सो विशेष ज्ञानी संवारि शुद्ध करियो मोको अत्यन्न मानि क्षमा करियो ।

श्लोक-

गर्भितक्षपणासारं लब्धिसारश्रुतं महत् ।
तत्संहटिसमाख्यातिः पूर्णजातार्थभासिका ॥ १ ॥

मगलं मलहंताहन् सिद्धात्मा शुद्धमंगलं ।
मंगलं साधुसंघस्तद्धर्मो मंगलमुद्यमं ॥ २ ॥

इति क्षपणासार अर्थगर्भित लब्धिसारके अर्थनिकी संहतिनिका वर्णन संपूर्ण भया,
याकों संपूर्ण होतें यह ग्रंथ समाप्त भया, ग्रंथ समाप्त होतें प्रारंभ कीया
कार्यकी सिद्धि-होनेकरि हम आपको कृतकृत्य मानि इस कार्य
करनेकी आकुलता रहित होइ सुखी भए याके प्रसादतै
सर्व आकुलता दूरे होइ हमारै शीघ्र ही स्वात्मज
सिद्धि जनित परमानंदकी प्राप्ति होउ ।



अथ ग्रंथप्रशस्तिवर्णन ।

श्रीमत् लब्धिसार वा क्षणसार सहित श्रुत गोष्मटसार
ताकी सम्यग्ज्ञान चंद्रिका भाषामय टीका सुखकार ।

प्रारंभी अर पूरण भइ अब भए समस्त मंगलाचार

सफल मनोरथ भयो हमारो पायो ज्ञानानंद अपार ॥ १ ॥

दोहा—

आप अर्थमय शब्दजुत ग्रंथ उदाधि गंभीर । अवगाँह ही जानिये याकी महिमा धीर ॥ १ ॥
षट्कारक या ग्रंथके निश्चय अर व्यवहार । जानहु जानत होत है जातैं सत्य विचार ॥ २ ॥

सवैया—

सिद्ध श्रुत शब्द सोई है स्वतंत्र करतार भया यहु ग्रंथ सोई कर्म पहिचानिए ।
ग्रंथरूप जुरनेकी शक्ति सो करण जैन शासनके अर्थि औसो संप्रदान जानिए ।
ग्रंथहीतैं भयो ग्रंथ यहु अपादान जैन श्रुतविषै यहु अधिकरण प्रमानिए ।
स्वाश्रित स्वरूप षट्कारक विचारो औसै निश्चय करि आनको विधान न वखानिये ॥
जिन गन इंद्र नेमि इंद्र आदि करतार भयो ग्रंथ काज सोई कर्म शर्म थान है ।
याके होत भए जे सहाई हैं करण तेई भव्यनिके अर्थि किया औसै संप्रदान है ।
आन काज छूटनेतैं भयो यहु काज सोई अपादान नाम औसै जानत सुजान हैं ।
भयो क्षेत्रविषै अधः करण कहावे सोई औसै व्यवहार षट्कारक विधान है ॥ ५ ॥

ग्रंथ होंनके जे भए समाचार सुखकार-
दोहा-

वर्धमान केवलीके देहरूप पुढल ते जीव नाहि प्रेरे तौऊ उपकार करै हैं।
मेघवत् अक्षर रहित दिव्य ध्वनि करि घर्माघृत वरसाय भवताप हरै हैं।
ताहीका निमित्त पाह आन स्कंध पुढलके नानाविध भापारूप होइ विसतरे है।
जाकों जैसो इष्ट सो सुने है सो सत्य अर्थ सभा माहि असौ जिन महिमा अनुसरै है ॥
गनधर गौतम जु च्यारि ज्ञानधारी आप महा रुचि धारि तिनकों तहां सुने है ॥
तिनकों निमित्त अर श्रुतज्ञान शक्ति सेती साचे नाना अर्थिनिकों नीकी भांति सुने है।
राग अंश उदै होत भई उपकार बुद्धि तातें ग्रंथ गुणनेकों भले वर्ण चुने है।
अंग अंग बाह्यरूप रचना बनाई ताकों करिके अभ्यास भव्य सर्व कर्म घुने हैं ॥ ८ ॥
बुद्धि ऋद्धि धारी कोई संपूरण जानि ताहिकोई ताके अंग अंश जानि अर्थ पायो है।
केई ताके अनुसार ग्रंथ जोरै हैं नवीन करिकें संक्षेप सोई अर्थ तहां गायो है।
गणधरके ग्रंथ ग्रंथ तिनकों न पाठी अब असौ कलिकाल दोष आपको दिखायो है।
अनुसारी ग्रंथनि तैं शिव पंथ पाह भव्य अबहु करि साधन स्वभाव भाव भायो है ॥
मुनि भूतबलि यति वृषभ प्रमुख भए तिनि दूनें तीन ग्रंथ कीने सुखकार हैं।
प्रथम पवल अर दूजो है जयचवल तीजो महाचवल प्रसिद्ध नाम धार हैं।
श्लोक तो हैं लाखो अर अर्थ है कठिन घनो तातें बुद्धिमान विनु जानै नाहि सार है।

दक्षिणमें गोम्मत निकटि मूलविद्रपुर तहां ठीक कीए ग्रंथ पाइए अवार है ॥
दक्षिण दिशामें नेमिचंद आदि मुनिराज भये तिनहुंके भयो तिनको अभ्यास है ।
जैनी राजमल राजा ताको मंत्री आप राजा भयो है चांमुंडराय तहां ताको वास है ।
तीहि कीनी प्रश्न तब धवलादि शास्त्रनिके अनुसारि कीयो हस ग्रंथको उजास है ।
बंघकादि संग्रहैं नाम पंचसंग्रह है अथवा गोम्मतसार नामको प्रकाश है ॥ ११ ॥

दोहा-

बहुत सूत्रके करनेतैं नेमिचंद गुनधार । मुखपने यों ग्रंथके कहिए है करतार ॥
चोपड़ै ।

कनकनांदि फुनि माधवचन्द । प्रमुख भए मुनि बहु गुन कंद ।
तिनहुंको है यामैं सीर । सूत्र कितेक किए गभीर ॥ १३ ॥
मौक्तिक रत्न सूत्रमें पोय । गंध्या ग्रंथ हार सम सोय ।
अर्थ प्रकाशक अमल अनूप । हृदय धरै सो है सुखरूप ॥ १४ ॥
नेमिचंद जिन शुभपद धारि । जैसे तीर्थ कियो गिरिनारि ।
तैसें नेमिचंद मुनिराय । ग्रंथ कियो है तरण उपाय ॥ १५ ॥
देशनिमें सुप्रसिद्ध महान । पूज्य भयो है यात्रा थान ।
यामैं गमन करै जो कोय । उच्चपना पावत है सोय ॥ १६ ॥
गमन करणको गली समान । कर्णाटक टीका अमलान ।
ताको अनुसरती शुभ भई । टीका सुंदर संस्कृतमई ॥ १७ ॥

केशववर्णी बुद्धि निधान । संस्कृत टीकाकार सुजान ।
मार्ग कियो तिहिं जुत विस्तार । जहं स्थूलनिकौ भी संचार ॥ १८ ॥
हमहु करिके तहां प्रवेश । पायो तारन कारण देश ।
चितवन करि अर्थनिकौ सार । अैसे कीनो बहुरि विचारि ॥ १९ ॥
संस्कृत संहितनिकौ ज्ञान । नहि जिनके ते बाल समान ।
गमन करणकौ अति तरफरे । बल विनु नाहि पदनिकौ धरे ॥ २० ॥
तिनि जीवनिकौ गमन उपाय । भाषा टीका दई वनाय ।
वाहन सम यहु सुगम उपाव । याकरि सफल करो निज भाव ॥ २१ ॥
पूर्व कहे सिद्धान्त महान । तिनहीमें जयधवल प्रधान ।
ताका पंच दशम अधिकार । ताकरि करिके अर्थ विचार ॥ २२ ॥
नेमिचंद नामा मुनिराय । लब्धिसार श्रुतसार वनाय ।
वर सम्यक्त्व चरित्र वखान । करिके प्रगट किए गुणधान ॥ २३ ॥
उपशम श्रेणि कथन पर्यंत । ताकी टीका संस्कृतवंत ।
देखी देखे शास्त्रनि माहि । संपूरण हम देखी नाहि ॥ २४ ॥
माधवचंद यती कृत ग्रंथ । देख्यो क्षणसासर सुपंथ ।
संस्कृत धारामय सुखकार । क्षपक श्रेणि वर्णनयुत सार ॥ २५ ॥
वह टीका यह शास्त्र विचार । तिनि करि किछु अर्थ अवधार ।
लब्धिसारकी टीका करी । भाषामय अर्थनसौ भरी ॥ २६ ॥

औसँ ग्रंथ दोयकी बनी । भाषा टीका सुंदर घनी
इनिमें जैसे कियो वखान । क्रमतेँ जानौ ताहि सुजान ॥ २७ ॥
सबैया ।

करिकेँ पीठबंध जीवकांड भाषा कीनी तामेँ
गुणथान आदि दोय वीस अधिकार हैं ।
प्रकृति समुत्कीर्तन आदि नव ग्रंथनिको

समुदाय कर्मकांड ताकी भाषा सार है ।
औसँ अनुक्रम सेती पीछेँ लिख्यो इनिहीकी
संहृष्टीनिको स्वरूप जहां अर्थभार है ।

पूरण गोम्मटसार ग्रंथ भाषा टीका भई
याकौ अवगाहैं भव्य पावैं भव पार हैं ॥ २८ ॥

समकित उपशम क्षायिकको है वखान
पीछेँ देश सकल चारित्रको बखान है ।

उपशम अपक श्रेणी दोय तिनहुको
कीयो है वखान ताकौँ जानै गुणवान हैं ।

सयोगी अयोगी जिन सिद्धनिकौँ वर्णनकरि
लब्धिसार ग्रंथ भयो पूरण प्रमान है ।

इनकी संहृष्टिनिकौँ लिखिकेँ स्वरूप ताकी

संपूर्ण भाषा टीका कीनी भयो ज्ञान है ॥ २९ ॥

याविध गोमटसार लब्धिसार ग्रंथनिकी

भिन्न भिन्न भाषा टीका कीनी अर्थ गायकै ।

हनिक्कै परस्पर सहायपनौ देख्यो तातै

एक करि दई हम तिनिकी मिलायकै ।

सम्यग्ज्ञान चंद्रिका घरयो है याकौ नाम

सो ही होत है सफल ज्ञानानंद उपजायकै ।

कलिकाल रजनीमें अर्थको प्रकाश करे

यातै निज काज कीने इष्ट भाव भायकै ॥ ३० ॥

संशयादि ज्ञाननिकौ हेतुभूत जीवनिकै

तथाविध कर्मको क्षयोपशम जानिए ।

ताकरि हमारै किछू संशय विपर्यय वा

अनध्यवसाय भया होसी असै मानिये ।

तिनकरि ग्रंथविषै कहीं लिपं संशयको

कहीं विपरीत कहीं स्पष्ट न वखानिये ।

लिख्यो होइ अर्थ ताको भरो वश नाहि तातै

क्षमा करो गुनी, शुद्ध करो चूक मानिये ॥ ३१ ॥

दोहा ।

संशयादि होतै किछू जो न कीजिए ग्रंथ ।

तौ छद्मस्थानिकें मिटै ग्रंथ करनको पंथ ॥ ३२ ॥
जो कषाय उपजायकें धरै अर्थ विपरीत ।
तौ पापी है आप ही आज्ञा भंग अभीत ॥ ३३ ॥
आज्ञा अनुसारी भए अर्थ लिखे या मांहि ।
धरि कषाय करि कल्पना हम किछु कीन्हों नाहि ॥ ३४ ॥
चौपई ।

सम्यग्ज्ञान चंद्रिका नाम, भाषामय टीका अभिराम ।
भई भले अर्थनिकरि युक्त, जाविध सो सुनिये अब उक्त ॥ ३५ ॥
सवैया ।

मैं हों जीव द्रव्य नित्य चेतना स्वरूप मेरो
लग्यो है अनादितैं कलंक कर्ममलको ।
ताहीको निमित्त पाय रागादिक भाव भए
भयो है शरीरको मिलाप जैसे सलको ।
रागादिक भावनिकों पायकें निमित्त फुनि
होत कर्मबंध असो है बनाव कलको ।
ऐसैं ही अमृत भयो मानुष शरीर जोग
बनै तौ बनै इहां उपाव निज थलको ॥ ३६ ॥
दोहा ।

रमापति स्तुत गुन जनक जाको जोगी दास ।

सोई मेरो प्रान है धरि प्रगट प्रकाश ॥ ३७ ॥

चौपई ।

भैं आतम अर पुद्गल स्कंध । मिलिकैं भयो परस्पर बंध ।
सो असमान जाति पर्याय । उपज्यो मानुष नाम कहाय ॥ ३८ ॥
मातगर्भमें सो पर्याय । करिकैं पूरण अंग सुभाय ।
बाहिर निकसि प्रगट जब भयो । तब कुटुंबको भेलो थयो ॥ ३९ ॥
नाम धर्यो तिनि हरषित होइ । टोडरमल्ल कहै सब कोय ।
ऐसो यहु मानुष पर्याय । बधत भयो निज काल गमाय ॥ ४० ॥
देश दूढाहडमांहि महान । नगर सवाई जयपुर थान ।
तामैं ताकाँ रहनो घनो । थोरो रहनो ओढि बनो ॥ ४१ ॥
तिस पर्यायविषैं जो कोय । देखन जानन हारो सोय ।
मैं हों जीव द्रव्य गुन भूप । एक अनादि अनंत अरूप ॥ ४२ ॥
कर्म उदयको कारण पाय । रागादिक हो है द्रव्य दाय ।
ते मेरे औपाधिक भाव । इनिकाँ विनशैं मैं शिवराव ॥ ४३ ॥
वचनादिक लिखनादिक क्रिया । वर्णादिक अर इंद्रिय हिया ।
ए सब हैं पुद्गलका खेल । इनमें नाहि हमारो मेल ॥ ४४ ॥
रागादिक वचनादिक घना । इनके कारण कारिजपना ।
तातैं भिन्न न देखै कोय । विनु विवेक जन अंधा होइ ॥ ४५ ॥

सवैया ॥

कर्मको क्षयोपशम होत भयो मेरे किछु
बुद्धिको विकास तातैं विद्याभ्यास कर्यो है ।
होनहार नीकौ तातैं औसा ही बनाव बन्यो

नाना जैन ग्रंथनिमैं ज्ञान विस्तार्यो है ।
सार्थक गोमटसार लब्धिसार शास्त्रनिकों

अर्थ अवभास्यो तब औसो भाव घर्यो है ।
इनिकी जो भाषा टीका है तो तुच्छबुद्धि धनी
जानैं सार अर्थ जो प्रमाण अनुसर्यो है ॥ ४६ ॥

चौपई ।

रायमल्ल साधर्मी एक । धर्म सधैया सहित विवेक ।
सो नानाविध प्रेरक भयो । तब यहु उत्तिम कारज थयो ॥ ४७ ॥
ज्ञान राग तौ मेरो मिल्यो । लिखनौ करनौ तनकौ मिल्यो ।
कागदमहि अक्षर आकारि । लिखि या अर्थ प्रकाशन हार ॥ ४८ ॥
औसैं पुस्तक भयो महान । जानै जाने अर्थ सुजान ।
यद्यपि यहु पुद्गलकौ स्कंध । है तथापि श्रुतज्ञान निबंध ॥ ४९ ॥
संवत्सर अष्टादश युक्त । अष्टादश शत लौकिक युक्त ।
माघ शुक्ल पंचम दिन होत । भयो ग्रंथ पूरन उद्योत ॥ ५० ॥

मस्थानका विशेष विषे याकों मिलाएं प्रथम स्थानका विशेष धन^१ असा २ ७ भया याकों
तीनकरि समच्छेद कीएं असा २ ७। ३ या विषे प्रथम ऋण असा २ ७। २ अर^१ द्वितीय
ऋण असा २ ७। घटाएं जो अवशेष रहा ताका अधिकका प्रथम द्वितीय बहु भाग असा-
२ ७। २ के उपरि असा (।) संहति कीएं असा ३ ७। २ यामें आवली मिलाएं वादरलो-
भकी प्रथम स्थितिका काल हो है। बहुरि इहां प्रथम स्थानविषे बहुभाग असा २ ७। १
इहां ऋण असा २ ७। ७ जुदा कीएं अर संख्यातका अपवर्तन कीएं असा २ ७ बहुरि तहां
विशेष धन असा २ ७। ७ इहां ऋण असा ३ ७ जुदा कीएं संख्यातका अपवर्तन कीएं
असा २ ७ याकों तीनकरि समच्छेद कीएं असा २ ७। ३ याविषे द्वितीय ऋणकरि अधिक
प्रथम ऋण असा २ ७। १ घटाएं असा २ ७। २- तिस बहुभागका धन असा २ ७ विषे
अधिक कीएं वादर लोभ कालका प्रथम अर्ध साधिक लोभ वेदक कालका तृतीय भागमात्र
असा २ ७ हो है। बहुरि कृष्टिकरण कालविषे विधानकी संहति कहिए है-

जघन्यस्पर्धककी प्रथम वर्गणाकी एक परमाणूविषे अनुभागके प्रतिच्छेद जीवराशितें अनंत गुणें जैसे १६। स्व तिनके समूहका नाम वर्ग है। ताकी संहति ऐसी (व) बहुरि संज्वलन लोभका सत्त्व द्रव्य ऐसा स। ७। ११-याकौ अनुभाग संबंधी गुणहानि अनंत गुणित अनंत

७। ८

प्रमाण सो ऐसी (स्व) साधिक च्योड गुणहानिका भाग दीएं प्रथम वर्गणा ऐसी स। ७। १२

७। ८ क। ३

२

याकौ दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष ऐसा स। ७। १२ - इस विशेषकरि वर्गकौ

७। ८। क। ३। क। ३। २

गुणें लघु संहति ऐसी (व वि) याकौ दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम वर्गणा ऐसी व वि स्व स्व २ इहां अंकसंहतिकरि एक गुणहानिका प्रमाण आठ कल्पि दोगुणहानिका प्रमाण सोलह स्थापें ऐसी व। वि। २६ संहति हो है। याकी लघु संहति ऐसी (व) यह वर्गणाका आदि अक्षर रूप जाननी। बहुरि याकौ अनुभाग संबंधी साधिक च्योड गुणहानिकरि गुणें लोभ

का सत्त्व द्रव्य ऐसा व १२ याकौ अपकर्षण भागहारका भाग देह एक भाग ग्रहया सो ऐसा

७। ८

व १२ याकौ पत्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभाग ऐसा व १२। प जुदा

ओ

ओ प

७

स्यापि एक भाग औसा ३ १२ ताकौं इहां एक स्पर्धकविषै वर्गणा शलाकाकी संहति औसी
ओ प ३

(४) ताकौं अनंतका भाग दीएं प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ औसा ४
ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानि औसा १६-४ ताका भाग दीएं
ख २

चय होह । ताकौं दोगुणहानिकरि गुणै प्रथम कृष्टिका द्रव्य औसा व १२ १६ याका अ-
१-२

ओ । प । ४ । १६-४

नुभाग पूर्व स्पर्धक वर्गकौं कृष्टिनिका प्रमाणमात्र वार अनंतका भाग दीएं हो हो सो औसा-
व ४ बहुरि प्रथम कृष्टिविषै एक चय घटावनेकौं दोगुणहानिका गुणकारविषै एक घटाएं द्वितीय
ख ४

कृष्टिका द्रव्य औसा भया संहति व । १२ । १६-१ १-२ याका अनुभाग तिस अनुभागतै
ओ । प । ४ । १६-४

अनंतगुणा औसा व । ख १ औसै ही क्रमतै दो गुणहानिका गुणकारविषै एक घाटि कृष्टि-
ख ४

निका प्रमाणकौं घटाएं अंत कृष्टिका द्रव्य औसा व । १२ । १६-४ १-२ बहुरि प्रथम
ख ४

ओ । प । ४ । १६-४
ख २

कृष्टिका अनुभागको एक घाटि कृष्टि प्रमाणमात्र बार अन्तकरि गुणें अंत कृष्टिका अनुभाग ऐसा व। ख। १५ अपवर्तन कीएं वर्गणाके अन्तवै भागमात्र याका अनुभाग ऐसा व। ख। १५
व जानना बहुरि जुदे स्यापें बहुभाग ऐसा व। १२। प साधिक ज्योढ गुणहानिनिका अर ख ओ प ३

दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ ताको दोगुणहानिकरि गुणें स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषे दीया द्रव्य ऐसा व। १२। प १६ बहुरि द्वितीयादि वर्गणाविषे दोगुणहानिका गुणकार-
ओ प। १२ १६

विषे क्रमतैं एक एक घटाएं अंतविषे एक घाटि गुणहानिमात्र घटाएं प्रथम गुणहानिकी अंत वर्गणा होइ। बहुरि गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा होइ। प्रथम गुणहानिके निषेकानि को एक घाटि नानागुणहानिका प्रमाणमात्र हूवा परस्पर गुणें ऐसे (२ ना) तिनिका भाग दीएं अंतगुणहानिके प्रथमादि निषेक हो हैं। अतैं अंत वर्गणा ऐसी होहै व। १२। प। १६ गु-
ओ प। १२। १६। २। ना

अतैं कृष्टिनिकी वा पूर्व स्पर्धकनिविषे दीया द्रव्यकी संहति ऐसी-

व ख ४ ख	व ख
व १२ १६ ओ प ४ १६-४ अ ख ख अ ख ख	व १२ १६ ओ प ४ १६-४ अ ख ख अ ख ख
१ १२ १६ ००००० व १२ १६-४ १ १२ १६-४ ओ प ४ १६-४ अ ख ख अ ख ख	१ १२ १६ ००००० व १२ १६-४ १ १२ १६-४ ओ प ४ १६-४ अ ख ख अ ख ख

इहां ऐसा जानना—निषेक तो ऊपरि ऊपरि समयविषे उदय आवने योग्य हे तातें निषेकनिकी तो रचना वा ऊर्ध्वविषे क्रमरूप कीजै थी अर इहां युगवत् उदय आवने योग्य एक निषेकके परमाणुनिविषे अधिक हीन अनुभागकी रचना हे तातें आडी रचना करी हे तहां ऊपरि तो समपट्टिकाकी संहति करी हे । नीचें चय घटता क्रमकी क्रम हीन रूप संहति करी हे । तहां छष्टि वा वर्गणानिविषे छष्टिनिविषे आदि अंत छष्टिनिके द्रव्यका अर स्पर्धकनिविषे आदि अंत वर्गणानिविषे दीया द्रव्यका प्रमाण लिख्या हे । मध्यभेदनिके अर्थे वीचिमें विंदी लिखी हे । बहुरि छष्टि करण कालका द्वितीय समयविषे अपकर्षण कीया हवा द्रव्य प्रथम समय वालेतें असंख्यात गुणा ऐसा हे व । १२ । ३ याकों पत्यका असं-

ख्यातवां भागका भाग देह बहुभाग औसैं व । १२ । ३ । प जुदे राखि अवशेष एक भागमात्र
मो । प । ३

कृष्टि द्रव्य औसा व । १२ । ४ । ताके विभाग करिए हे—

मो । प । ३

तहां प्रथम समयका कृष्टि द्रव्यविषैं एक विशेषका प्रमाण कबा सौ औसा—

व १२ १-इहां इसहीकौ आदि उत्तर स्यापि एक घाटि प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनि
मो । प । ४ । १६ — ४

३ । ख । १-४

का प्रमाण गन्छ औसा ४ स्यापि पदमेगेण विहीणं इत्यादि सूत्रकरि गन्छैं एक घटाइ

मो । १-४

दोयका भाग दीएं औसा ४ याकरि तिस विशेषकौ गुणैं औसा— व १२ । ४ यामैं आदिका
मो । २ । १-४

मो । प । ४ । १६ — ४

३ । ख । २

प्रमाण तिस विशेषमात्र ताके मिलावनेके अर्थि आगिला गुणकारविषैं दोयकरि भाजित

दोय ऋण था ताका एक भगा । अर इहां इस गुणकारविषैं एक ही मिलावना तातैं तिस
मो । १-४

घाटिकौ दूर कीएं औसा व । १२ । ४ याकौ तिस गन्छकरि गुणैं औसा व १२ । ४ । ४
मो । २ । १-४

मो । २ । ख । १

मो । प । ४ । १६ — ४

३ । ख । २

मो । प । ४ । १६ — ४

३ । ख । २

वय धन भया सो यह अथस्तन शीर्ष द्रव्य है । बहुरि प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनिविषै
आदि कृष्टिमात्र एक कृष्टि औसो व । १२ । १६ याकौ प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनि

को । प । ४ । १६ — ४
३ त ख २

का प्रमाणकौ असंख्यात गुण! अपकर्षण भागहारका भाग दीएं द्वितीय समयविषै कीनी
कृष्टिनिका प्रमाण औसा ४ ताकरि गुणै अवस्तन कृष्टि द्रव्य औसा व । १२ । १६ । ४
ख । ओ । ३

को प । ४ । १६ — ४
३ ख त
१८

बहुरि द्वितीय समय कृष्टिका द्रव्य औसो व । १२ ३ या विषै प्रथमसमयका कृष्टिद्रव्य
को । प । ४

औसा- व १२ मिलानेकौ आगिला असंख्यातकौ गुणकारविषै एक अधि-
को प ३ १८

क कीएं औसा- व । १२ । ३ याकौ प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनि
को । प ३

का प्रमाणके ऊपरि द्वितीय समयविषै कीनी कृष्टिनिका प्रमाण मिलानेके अर्थ

अधिककी औसी (१) संहति कीएँ गच्छ औसा ४ ताका भाग दीएँ मध्य धन औसा

व। १२। ४ बहुरि याकोँ एक घाटि गच्छका आयाकरि हीन दोशुणहानिका भाग
जो। ५। ४

दीएँ उभय द्रव्यका एक विशेष औसा व। १२। ४
जो। ५। ४

हसकोँ आदि उत्तर स्यापि अर
जो। ५। ४। १६-४

प्रथम द्वितीय समयकृत कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ औसा ४ स्यापि 'पदमेगेण विहीणं'
जो। ५। ४। १६-४

इत्यादि सूत्रकरि एक घाटि गच्छ दोयकरि भाजित औसी ४ याकरि तिस विशेषकोँ
जो। ५। ४। १६-४

गुणि हसविषे विशेषमात्र आदि मिलावनेकोँ अगिला गुणकार दोयकरि भाजित एक
जो। ५। ४। १६-४

क्रुण या तहां दोयकरि भाजित दोय मिलाएँ एक घाटिकी जायगा एक अधिक होइ।
जो। ५। ४। १६-४

बहुरि याकोँ तिस गच्छकरि गुणना। औसैं कीएँ उभय द्रव्यविषे विशेष द्रव्य औसा-
जो। ५। ४। १६-४

पूर्वोक्त तीन द्रव्य घटावनेका औसा ॥ संदृष्टि कीएं औसा-व । १२ । ३ ॥ हो हो । याकों

उभय कृष्टिमात्र गच्छ औसा ४ ताका भाग दीएं एक खण्डका द्रव्य औसा हो है—

व । १२ । ३ ॥ याकों तिस गच्छहीकरि गुणें मध्यघन खंडका द्रव्य औसा हो है—

व । १२ । ३ ॥ ४ बहुरि इहां अघस्तन शीर्षादिककका द्रव्यविषे गुणकार भागहारका

यथासंभव अपवर्तन कीएं ते न्यायो द्रव्य औसे हो हैं—

अधस्तन शीर्ष	। व १२ ओ प । ख । ख । ४ ३
उभय विशेष	। १— व । १२ । ३ ओ । प । ख । ख । ४ ३
अधस्तन कृष्टि	। व १२ ओ । प । ओ । ३ ३
मध्यम खंड	। व १२ ३ ≡ ओ प ३

इहां अधस्तन शीर्ष द्रव्यविषे औसा ४ तौ गुणकार भागहारविषे समान जानि अप-
वर्तन कीया अर भागहारविषे दोगुणहानि अंक संहतिअपेक्षा औसा १६ लिख्या था तहां
अर्थ संहति अपेक्षा औसा ख । ख २ करि गुणकारका औसा ४ याकौ दोयका भागहार था

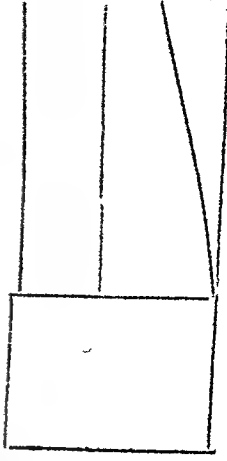
ताकरि गुणें ऐसा ख । ख । ४ भागहार भया । ऐसा गुणकार वा । दोगुणहानिविषे
घटाया ऋण तिनको किंचित् जानि न गिणि अपवर्तन कीया है । जैसे ही यथासंभव
औरनिविषे अपवर्तन जानना । जैसे इनिकों जानि जिन कृष्टिनिविषे जो जो द्रव्य
दीया तिनकी संदष्टि जाननी । तहां समपट्टिकाको वयसंयुक्त कीएं पूर्वकृष्टि कम हीन
द्रव्य लीएं ऐसी—



थी तिनविषे अधस्तन शीर्ष द्रव्य दीएं समान प्रमाण लीएं सर्वकृष्टिनिका प्रमाण समपट्टि-
कारूप ऐसा हो है—



बहुरि याके नीचें अधस्तन कृष्टि द्रव्यकरि नवीन करी कृष्टि याहीके समान प्रमाण
लीएं स्थापि ऐसी कृष्टि हो है—



प्रमाणकरि गुणित उभय द्रव्य विशेष अैसे व । १२ । ३ ४ इन तीन द्रव्यको दीजिए । हे ।

को । प । ४ । १६ — ४

३ ल ख २

द्वितीयादि कृष्टिनिविषे एक एक उभय विशेष घटता द्रव्य नवीन करी कृष्टिनिका अंत पर्यंत दीजिए है । बहुरि पूर्व कृष्टिनिकी आदि कृष्टिनिविषे एक मध्यम खंड अर पूर्व कृष्टि गुणित उभय विशेष द्रव्य दीजिए है । बहुरि द्वितीय कृष्टिनिविषे एक अधस्तन शीर्ष विशेष

ऐसा व १२ १ २ एक मध्यम खंड एक घाटि पूर्व कृष्टि प्रमाण गुणित उभय द्रव्य

को । प । ४ । १६ — ४

३ ल ख

विशेष अैसे-व । १२ । ३ ४ दीजिए है । तृतीयादि कृष्टिनिविषे एक एक अधस्तन शीर्ष

को । प । १६ — ४

३ ल ख २

बंधता एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता दीजिए है । अैसे दीएं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिका एक गोपुच्छ हो है । तहां प्रथम समयविषे कीनी कृष्टिनिका द्रव्यविषे अधस्तन शीर्ष विशेष का द्रव्य अर अधस्तन कृष्टिका द्रव्य दीएं पूर्व अपूर्व कृष्टिनिका ममगट्टिका द्रव्य पूर्व जय-

न्य कृष्टिको पूर्व अपूर्व प्रमाणकरि गुणे ऐसा व १२ । १६ । ४ बहुरि उभय द्रव्य विशेषका द्रव्य

को । प । ४ । १६ — ४

३ ल ख

उभी लोक रूप औसी (॥) सद्विषय कीएं औसा भया व । १२ । १ या कौ पूर्व अपूर्व कृष्टिमात्रे अर
ओ प ३

एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानिका भागे दीएं चय औसा व । १२ । १ २ ५

या कौ दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम कृष्टिका द्रव्य भयो अर इस गुणकार विषे क्रम तै एक एक
घटाइ अंत विषे एक घाटि गच्छमात्र घटाएं द्वितीयादि कृष्टिका द्रव्य हे तहां रचना औसी -

अपूर्वकृष्टि द्रव्य	पूर्वकृष्टि द्रव्य
उभयविशेष द्रव्य	अच्युतन शक्ति

मथपकृष्टि अन्तकृष्टि १ ५
। ॥ ॥ ॥ ॥
व १२ १ १६ ०००० व १२ १ १६-४
ओ प ४ १६-४ १ ५
३ स्व ३ स्व
ओ प ४ १६-४ ३ स्व २

2

प्रथमपक्षि

व १२३ = १६-४
 व १२३ = १६-४
 ओ प ४ १६-४
 ओ प ४ १६-४

इहां मध्यम खंडकी समपट्टिका रूप अर नीचें उभय विशेषकी क्रमहीन रूप संह्राष्टि करी है औसैं यहू गोपुच्छ भया । याकी पूर्व गोपुच्छके ऊपरि स्थापै क्रमहीन रूप सर्व कृष्टिनिका एक गोपुच्छ हो है । ताकी रचना औसी-

असंख्यात गुणकारका उपययविशेष द्रव्य	
मध्ययखंड द्रव्य	
पूर्वकृष्टि सम्पट्टिका द्रव्य	
अधस्तनकृष्टि द्रव्य	पूर्वचय
एक गुणकारका उपययविशेष द्रव्य	
अधस्तनशीर्ष	

प्रथमकृष्टि	अंतकृष्टि
। १- व १२ ३ १६ ००००००० व १२ ३ १६- ४	। १- व १२ ३ १६- ४
ओ ५४ १६- ४	१- ओ ५ ४ १६- ४
३ ख ख २	३ ख २

इहां पहली रचनाके उपरि पाछिली रचना लिखि क्रम हीनरूप एक गोपुच्छ कीया है। तहां द्वितीय समय संबंधी कृष्टि द्रव्यका असंख्यातका गुणकारके ऊपरि पाहिला समय संबंधी द्रव्य मिलावनेको एक अधिककरि ताको पूर्वापूर्वकृष्टिमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरिहीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ। ताको दोगुणहानिकरि गुणै प्रथमकृष्टि का अर इस गुणकारविषे एक एक क्रमतै घाटि होइ एक घाटि गच्छमात्र घाटि भए अंत कृष्टिका द्रव्य हो है ताकी संदृष्टि नीच लिखी है। बहुरि जैसे ही कृष्टि करण कालका तृती-

यादि समयानिविषे यथासंभव संहति जाननी । बहुरि अन्य क्रिया होइ अनिवृत्ति करण
का काल पूर्ण भए सुक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषे कृष्टिनिका द्रव्य असा-

१८

स ३। १२ - ३ । २ १ इहां लोभके द्रव्यको अपकर्षण भागहारका अर पल्यका असं-
७। ८। ओ । प

३

ख्यातवां भागका भाग दीएं कृष्टि करण कालका प्रथम समयका द्रव्य होइ । ताको एक घाटि
अंतर्मुहूर्तके समयमात्र वार असंख्यातकरि गुणें ताका अति समयका द्रव्य होइ । ताविषे पूर्व
समयनिका द्रव्य मिलावनेको उपरि अधिककी संहति कीएं यहु संहति भई है । याको अपक-
र्षण भागहारका भाग देइ एक भागको पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग असा

१ । १८

स । ३ । १२ - ३ । २ १ ताको प्रथमस्थितिविषे असंख्यात गुणा क्रमकरि देना । तहां याको

७ । ८। ओ । प । ओ । प

३

पिच्यसीका भाग देइ एक ब्यारि आदि करि गुणें प्रथमादिनिषेक होइ । बहुरि बहुभाग

१८ १८

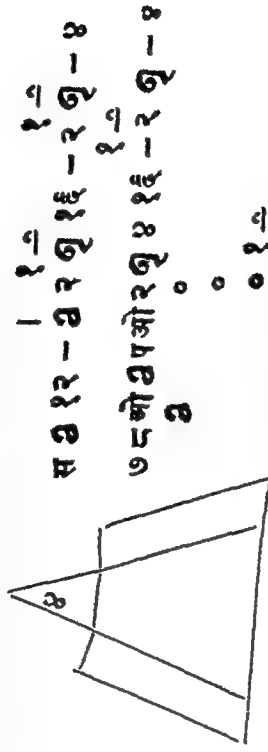
असैं स । ३ । १२ - ३ । २ १ । प याको द्वितीय स्थितिविषे हीन क्रमकरि देना । तहां

७ । ८। ओ । प । ओ । प

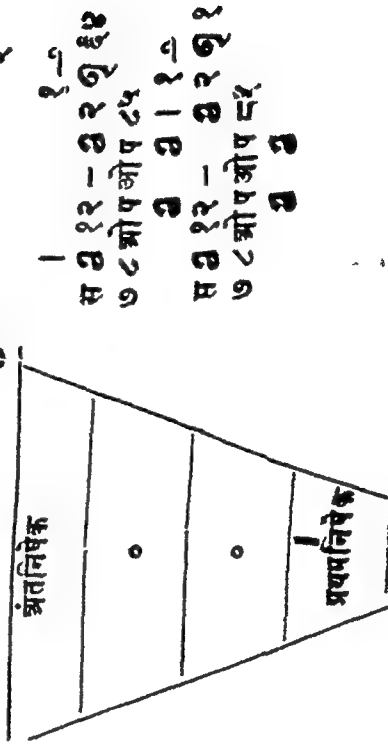
३

याकी स्थिति अंतर्मुहूर्तमात्र तामें अतिस्थापनावली घटाएं गच्छ असा २ ७ - ४ सो तिस
द्रव्यविषे एक हीनको न गिणि पल्यके असंख्यातवां भागका अपवर्तनकरि ताको गच्छका अर
एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहीनका भाग दीएं चय होइ । ताको दोगुणहा-

निकरि गुणै प्रथम निषेक अर गुणकारविषै क्रमतै एक आदि घटाए अंतविषै एक घाटि गच्छमात्र घटाए अन्य निषेकनिविषै दीया द्रव्य हो हे । तहां संहष्टिविषै नीवै अधिक क्रम लीए प्रथम स्थितिकी रचनाकारि ताके उपरि अंतरायामकी शून्यरूप संहष्टिकरि ताके उपरि द्वितीय स्थितिकी वा तहां अंतस्थापनावलीकी संहष्टि करी है । बहुरि आगे प्रथम द्वितीय स्थितिके निषेकनिविषै दीया द्रव्यकी संहष्टि जाननी ।



स ३ १२ - ३ २ ७ १६ १ २
७ ८ ओ प ओ २ ७ - ४ १६ - २ ७ - ४



स ३ १२ - ३ २ ७ १६
७ ८ ओ प ओ प ८५
स ३ १२ - ३ २ ७ १
७ ८ ओ प ओ प ८२

बहुरि कृष्टि करणका प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनिका प्रमाणविषै अन्य समयनिविषै
कीनी कृष्टिनिका प्रमाण मिलावनके अर्थि उपरि अधिककी औसी (।) संदृष्टि कीएं स-
र्वकृष्टिनिका प्रमाण औसा ४ याकौ पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभाग औसा

। १८

४ प उदयरूप कृष्टिनिका प्रमाण है । अवशेष एक भाग औसा ४ याकौ पल्यका असंख्या-

ख ३

प

३

१८

तवां भागका भाग देइ बहु भाग औसे ४ प तिनिके आधे प्रमाण लीएं तो कृष्टि करण

३

ख ५ प

३३

कालका अंत समयविषै कीनी जे आदिकी जघन्यादि कष्टि ते अनुदय रूप हैं । बहुरि

। १८

आधे औसे ४ प याविषै रखा एक भाग औसा ४ मिलावनेकौ अगिला गुणकारविषै

३

ख ५ प २

३३

ख ५ प

३३

१५

दोयकरि भाजित एक घाटि या तहां दोयकरि भाजित एक अधिक कीएं औसा ४ प

३
अ प प २

३३

प्रमाण लीएं कृष्टि करण कालका प्रथम समयविषै कीनी अंतकी उत्कृष्ट पर्यंत कृष्टितैं अ-
नुदयरूप हो है । इहां पल्यका असंख्यातवां भागकी सहनानी पांचका अंक कीएं जो एक

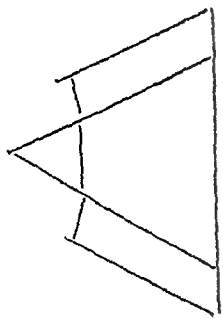
भाग औसा ४ । या ताकौ पांचका भाग देह बहुभागके आधे औसे ४ । २ अर इनिविषै
स्व प ५

स्व प ५

एक अवशेष भाग मिलाएं औसैं हो है ४ । ३ औसैं सुक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषै उदय
स्व प ५

अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण जानना । इहां रचना औसी-





अन्यनिषेक	अनुदय	उदय	अनुदय
प्रथमनिषेक	१ ४ २ ख प ५ ३	१ २ ४ प ख ३	१ ४ ३ ख प ५ ३

प ३

इहां प्रथम स्थिति अंतरायाम द्वितीय स्थितिका पूर्ववत् रचनाकरि प्रथम स्थितिका प्रथम समय संबंधी निषेकानिकी कृष्टिनिविषै आदिकी जघन्यादि अनुदय कृष्टिका अर उभय आवने योग्य वीचिकी कृष्टिनिका अर अंतकी उत्कृष्ट पर्यंत अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण लिखा है । बहुरि सूक्ष्मसांपरायका द्वितीय समयविषै पूर्वोक्त अंतकी अनुदय कृष्टिनिकों पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र कृष्टि ऐसी ४ । ३ नवीन अनुदयरूप हो है । ते ए कृष्टि प्रथम समयकी उदय कृष्टिनिविषै अंतकी कृष्टि जानना । ब-

ख। प। ५। प
३ ३

दुरि पूर्वोक्त आदिकी अनुदय कृष्टिनिका पत्यका असंख्यातवां भागमात्र कृष्टि औसी-
 ४।२ नवीन उदयरूप कृष्टि हो हैं। ते ए कृष्टि प्रथम समयकी अनुदय कृष्टिनिविषे अंत
 का।प।५।५ ३ ३
 की कृष्टि जाननी। बहुरि इहां नवीन अनुदय कृष्टिनिविषे नवीन उदय कृष्टिनिका प्र-
 माण घटाएं औसा ४।१ विशेषकरि घटता द्वितीय समयविषे उदय कृष्टिनिका प्रमाण
 का।प।५।५ ३ ३
 हो हे। अंसैं ही तृतीयादि समयनिविषे विधान जानना, तिनकी रचना कथन अनुसार औसी-

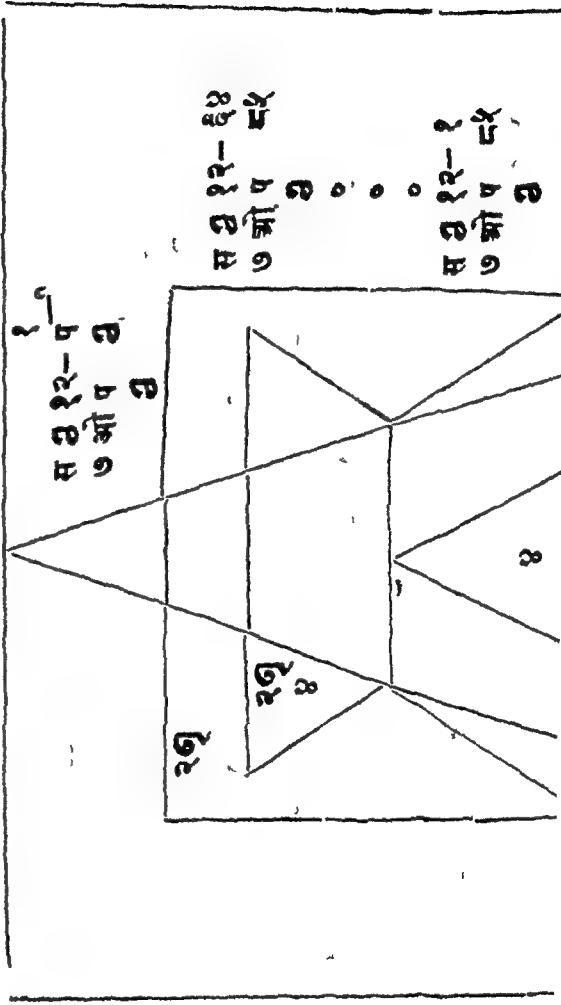
क्र.सं.	केंद्रनाम	अ.	अ.	अ.	अ.
०		अ.	अ.	अ.	अ.
द्वितीयसमय		अ.	अ.	अ.	अ.
प्रथमसमय		अ.	अ.	अ.	अ.

इहाँ पूर्वोक्त प्रकार प्रथम स्थित्यादिककी सहायिकादि तत्ता समय समय कमसे आदिक
 अनुदय छुटि घटती बीचकी उदय छुटि विशेष हीन अंतकी अनुदय छुटि संबंधी अंतर्गत

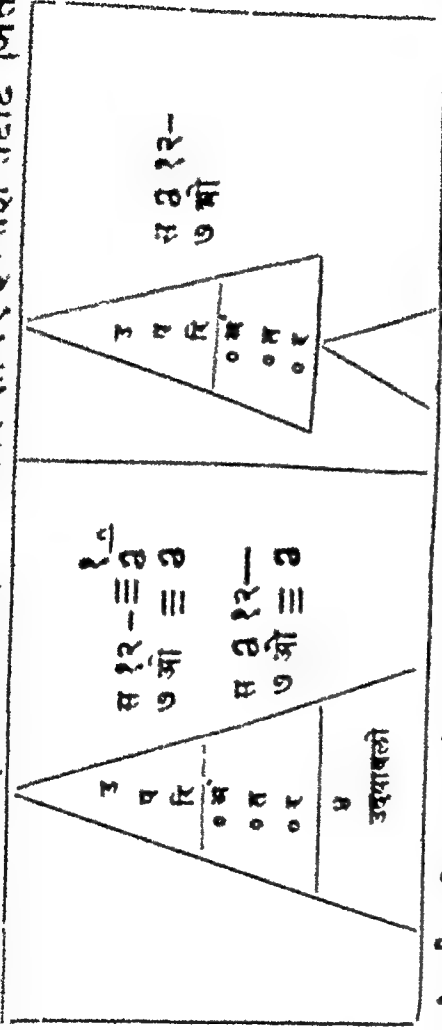
हारका भाग देह एक भागकौ पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भाग औसा-
स । ३ । १२ - ताकौ गुणस्थान काल अंतर्मुहुर्ते ताका संख्यातवां भाग औसा २ ७ ताविधैं
७ । ओ । प ३

१-
गुणश्रीणि विधानकरि द्रव्य देना । बहुरि बहुभाग औसे स । ३ । १२ - प उपरितन स्थिति
७ । न । ओ । प ३

विधैं विशेष घटता क्रमकरि देने तहां संहाष्टि औसी-

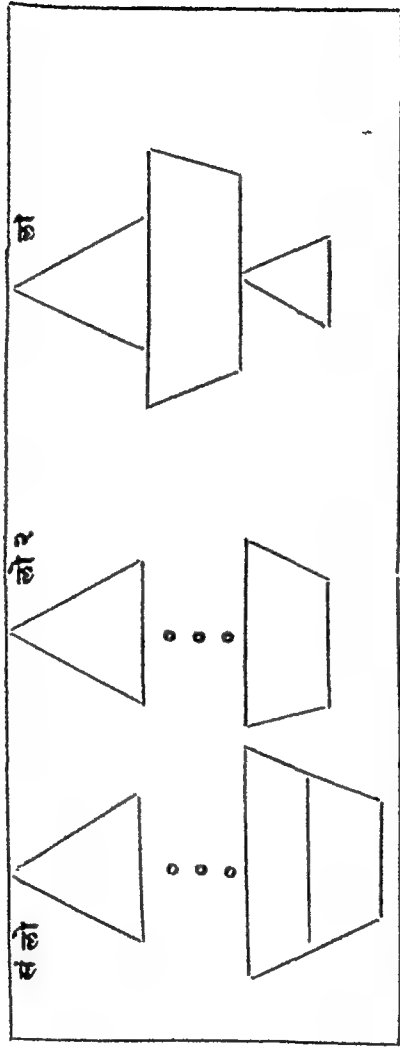


द्रव्य औसा स १ ३ १ २ - ताकों अपकर्षण करि उदयावलीतें बाह्य निषेक अर अंतरायाम
अर द्वितीय स्थिति विषे पूर्वोक्त प्रकार हीन कम करि दीजिए हे । तहां संहति ओसी—



इहां सर्वत्र हीन कम करि द्रव्य दिया हे । तातें हीन कमरूप संहति करी । तहां उद-
यावली आदिका विभागके अर्थी वीचिमें लीककी संहति करी हे । बहुते अद्वाक्षय नि-
मित्ततें उपशांत कषायस्यो पडि सूक्ष्मसांपरायविषे आवै तहां प्रथम समयविषे उदयवान सं-
ज्वलन लोभका द्रव्यको अपकर्षण करि ताका पत्यको अमंख्यातवा भागका भाग देइ एक
भागको उदयादि गुणश्रेणि आयामविषे गुणकार कम करि देइ ताके उपरि अंतरायामविषे
न देइ ताके उपरि तिनके बहुभागानिको द्वितीय स्थिति विषे विशेष हीन कम करि दीजिए
हे । बहुते उदय रहित अप्रत्याख्यान अत्याख्यान लोभका द्रव्य अपकर्षण करि पूर्वोक्त प्रकार
उदयावली बाह्य गुणश्रेणि आयामविषे देना । अंतरायाम विषे न देना । उपरितन स्थिति विषे

देना । बहुरि ज्ञानावरणादि छह कर्मनिका द्रव्य अपकर्षण करि उदयावलीविषे हीन क्रमक-
रि गुणश्रेणि आयामविषे गुणकार क्रमकरि उपरतिन स्थितिविषे हीन क्रमकरि देना । ता-
की संछष्टि रचना ऐसी-



इहां दीया द्रव्यकी संछष्टि यथा संभव जानि लेनी । बहुरि सूक्ष्मसांपरायका प्रथम
ममयविषे सर्व छष्टि ऐसी ४ ताकौ पल्यका असख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभागमात्र
ऐसी ४ प उदयछष्टि है । बहुरि एक भागकौ अंक संछष्टि अपेक्षा पांचका भाग देहदोय

१२
४
४
४

भागमात्र आदि छष्टिविषे अनुदयरूप है । तीन भागमात्र अंत छष्टिविषे अनुदयरूप है ते ऐसी

१। २ ४। ३ बहुरि द्वितीय समयविषे आदि कृष्टिनिर्को पल्यका असंख्यातवां भागका भाग
क। प। ५ क। प। ५ ३

दीएं एक भागमात्र उदय कृष्टिनिविषे आदि की नवीन कृष्टि अनुदय कृष्टिरूप हो है। बहुरि अंत-
की अनुदय कृष्टिनिर्को तैसैं ही भाग दीएं एक भागमात्र अंतकी अनुदय कृष्टिनिविषे नवीन
कृष्टि उदयरूप हो हैं। इहां पूर्व उदय कृष्टिनिविषे घटी कृष्टि औसी ४। २ अर बंधी कृष्टि
क। प। ५। ५ ३

औसी ४। ३ बंधीमें घटाएं इतनी ४। १ इहां पूर्व उदय कृष्टितै अधिक इहां
क। प। ५। ५ ३ क। प। ५। ५ ३

उदय कृष्टि जाननी। औसैं ही तृतीयादि समयनिविषे कम जानना। तहां संहष्टि रचना औसी-

आधिको अनुदयकृष्टि	मध्यको उदयकृष्टि	अन्तको अनुदयकृष्टि

इहां आदि अनुदयकृष्टि अधिक क्रमरूप मध्य उदयकृष्टि विशेष अधिक रूप अंत

अनुदयकृष्टिहीन रूप जाननी । बहुरि अनिवृत्ति करण लोभ वेदक कालादिविषे गुणश्रीणि
आदिकी सुगमसंहृष्टि हे । बहुरि क्रोधवेदक कालका प्रथम समयविषे क्रोधका द्रव्य असा स ७।१२-

ताकों अपकर्षण भागहारका भाग दीएं असा स ७।१२ - याकों पत्यका असंख्यातवां
७।८।को

भागका भाग दीएं एक भाग असा स ७।१२- उदयादि गुणश्रीणि आयामविषे गुणकार
७।८।को।प

कूमकरि देना । तहां याकों अंक संहृष्टिकरि पिच्यसीका भाग देह एक आदिकरि गुणें प्रथ-
मादि निषेक हो हैं । बहुरि बहुभागनिविषे केता इक द्रव्य देह अंतरायामकों पूरे है । तहां
क्रोध द्रव्यकों साधिक ब्योढ गुणहानिका भाग दीएं द्वितीयादि स्थितिके प्रथम निषेकका
द्रव्य असा स ७।१२ - याकों अंतरायामका गच्छ असा २ ७ करि गुणें समपट्टिका
७।८।१२

घन असा स ७।१२ - । २ ७ बहुरि तिस प्रथम निषेकका द्रव्यकों दोगुणहानिका भाग
७।८।१२

दीएं चय होइ ताकों दोगुणहानि कीएं तिसतें नीचली गुणहानिका चय असा स ७।१२-२
७।८।१२

याकों एक अधिक गच्छकरि अर गच्छका आधाकरि गुणें उत्तर घन असा-

स ७।१२ - २।२ ७।१ ७ मिलावनेकों समपट्टिका घन उपरि साधिककी संहृष्टि असी
७।८।१२।१२

(१) कीएं अंतरायामविषं दीया द्रव्य ऐसा स । ३ । १२ - २ ७ याकौ गच्छ ऐसा २ ७

७।८।१२

ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ ताकौ दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम निषेक अर तिस गुणकारविषं एक एक क्रमते घटाइ अंतविषं एक घाटि गच्छकौ घटाए अन्य निषेक हो है । बहुरि तिन बहुभागनिविषं इतना द्रव्य घटावनेकौ आगैं ऐसी (—) संक्षिप्त कीएं अवशेष उपरितन स्थितिविषं दीया द्रव्य ऐसा—

स । ३ । १२ - ५ - इहां गुणकारका हीनपनाकौ न गिणि पत्यका असंख्यातवां भागका
७ । ८ । ओ । ५ ३

३

अपवर्तन कीएं ऐसा स । ३ । १२ - याकौ साधिक ब्योढ गुणहानिका अर दोगुणहानिका

७।८।१२

भाग दीएं चय होइ ताकौ दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम गुणहानिका प्रथम निषेक अर याकौ आधा अन्योन्याभ्यस्तराशि ऐसा ५ का भाग दीएं अर तिस दोगुणहानिका गुणकार-

३ २

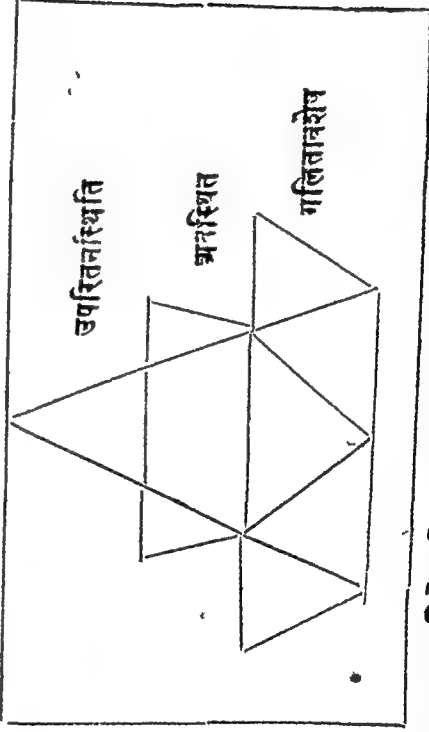
१२

विषं एक घाटि गुणहानि आयाम ऐसा— ८ घटाएं अंत निषेकका द्रव्य हो है तहां संक्षिप्त रचना ऐसी—

४	स ३ १२-१६-८ ७ ८ ओ १६ प १६ ० ० ३ २
	स ३ १२-१६ ७ ८ ओ १२ १६
०	स ३ १२-२७ १६ ७ ८ २७ १६-२७ ० ० ३ २
०	स ३ १२-२७ १६-२७ ७ ८ २७ १६-२७ ० ० ३ २
०	स ३ १२-२७ ७ ८ ओ प ८५ ० ० ३
०	स ३ १२-१ ७ ८ ओ प ८५ ३

इहां नीचें गुणश्रेणिके वीचि अंतरायामका उपरितन स्थितिकी अंतविषं अतिस्वाप-

नावलीकी संहष्टिकरि आगे दीए द्रव्यनिकी संहष्टि करी है । बहुरि संज्वलन मानादिक
तीनका द्रव्य असा-स । ७ । १२ - ३ याविषै अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यानका द्रव्य असा-
स । ७ । १२ - ८ मिलावनेकी साधिककी संहष्टि कीएँ असा, स । ७ । १२ - ३ याकी
७ । १२ । १७
अपकर्षणकरि उदयावली बाह्य गुणश्रेणि आयामविषै अर अंतरायामविषै अर उपरितन
स्थितिविषै दीया द्रव्य पूर्वोक्त विधान जानि संहष्टि जाननी । बहुरि स्थिति बंधादिकी
संहष्टि सुगम है । तहां संख्यातकी सहनानी पांचका अंक इत्यादि यथासंभव जानि लेना
बहुरि उतरनेवाले सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषै प्रारंभी गलितावशेष गुणश्रेणिका
आयामतैं अधःकरणका प्रथम समयविषै आरंभी अवस्थित गुणश्रेणि आयाम संख्यात
गुणी है तहां संहष्टि असा-



इहां क्रम हीन रूप निषेकनिकी संहष्टिकरि तहां स्तोक प्रमाण लीएँ गलितावशेष अर

बहुत प्रमाण लीएँ अवस्थित गुणश्रेणि आयामकी संहति अधिक क्रमरूप करी है । अतः उपशम श्रेणिके उतरनेका विधानकी संहति कही ।

बहुते उपशम श्रेणि चढनेवालोंके क्रमते नपुंसकवेद स्त्रीवेद सप्त नोकषाय तीन क्रोध तीन मान तीन माया तीन लोभ एक सुक्ष्म लोभका उपशमावना क्रमते हो है । विशेष इतना — नपुंसक वेद सहित चढनेवालेके स्त्रीवेदका उपशमन कालविषे नपुंसक वेदका भी उपशमावना हो है । तहाँ क्रोध सहित श्रेणि चढ्याके क्रोध पर्यंतकी प्रथम स्थिति पहलें होइ । उपरि मानादिककी जुदी जुदी प्रथम स्थिति हो है । बहुते मान माया लोभ सहित चढनेवालोंके क्रमते मान माया लोभ पर्यंतनिकी प्रथम स्थिति पहलें होइ । उपरि अवशेष-निकी जुदी जुदी प्रथम स्थिति हो है । तहाँ प्रथम स्थितिविषे अधिक क्रम लीएँ द्रव्य दीजि ए है । ताते तिनकी अधिक क्रम लीएँ ऐसी संहति रचना हो है—

लो १	लो १	लो १	लो १	लो १		
लो ३	लो ३	लो ३	लो ३	लो ३		
या ३	या ३	या ३	या ३	या ३		
मा ३	मा ३	मा ३	मा ३	मा ३		
को ३	को ३	को ३	को ३	को ३		
नो ७	नो ७	नो ७	नो ७	नो ७		
लो	लो	लो	लो	लो		
न	न	न	न	न		
न	लो	पुं	कोषोक्ष्य	मानोक्ष्य	मयोक्ष्य	लोभोक्ष्य

बहुरि उपशम श्रेणिका चढनो वा पडनोका कालका अल्प बहुत्वविधैं संहृष्टि पूर्वोक्त प्रकार वा एकवार आदि अधिककी उपरि एक दोय आदिवार ऊभी लीकनैं आदि देकरि कथनके अनुसारि औसी संहृष्टि जाननी-

औसैं उपशम चारित्राधिकारविधैं संहृष्टि जाननी ।

इति श्री लक्ष्मिभारतीका अनुसारि उपशम श्रेणिकस्य
व्याख्यानकी संहृष्टि संपूर्ण भई ।

शुद्ध १०२ (क) में देलो

अथ क्षपणासारका अनुसारि दीपं क्षपक श्रेणिका व्याख्यानरूप लब्धिसारके सूत्र-
निका अर्थकी संहति लिखिए है तहां अपूर्व करणविषै गुणश्रेणि गुणसंक्रमण स्थितिकांडक
अनुभाग कांडककी संहति उपशम श्रेणिवत् इहां अर विशेष है तिनकी यथा संभव संहति
जाननी । इहां सत्वद्रव्य विषै गुणश्रेणि आदि वा बंध द्रव्यकी संहति औसी—

पृष्ठ १०३ (क) में देलो

इहां प्रकृति अष्ट आदि क्रमतै जैसे क्षये है तैसे क्रमतै तिनके सत्व रूप निषेकानिकी क्रम
हीन संहतिकरि तिनविषै नीचै उदयावलीका हीन क्रमरूप वीचि गुणश्रेणि आयामकी अधिक
क्रमरूप उपरि उपरितन स्थितिकी हीनक्रमरूप रचना जाननी । बहुरि पुरुषवेद अर क्रोध
की प्रथमास्थिति स्थापी ताकी जुदी हीन क्रमरूप संहति दिखाइए है । बहुरि इस रचनाके
वीचि वीचि पुरुषवेद अर क्रोधादिकका बंध द्रव्यकी जुदी संहति औसी ^१ दिखाई है । इहां नीचै
आवाधा उपरि निषेकानिकी संहति जाननी । बहुरि ताके आगे अवशेष कर्मनिकी क्रमहीन
रूप सत्व निषेक रचनाविषै नीचै उदयावली वीचि गुणश्रेणि उपरि उपरितन स्थितिकी रचना
जाननी । बहुरि ताके आगे अवशेष कर्मनिका बंध द्रव्यकी संहति है । तहां नीचै आवाधा
ऊपरि निषेकानिकी रचना जाननी । बहुरि अनिवृत्ति करणविषै स्थिति बंधापसरणादिककी
संहति सुगम है । बहुरि अष्ट कषाय सोलह प्रकृतिकी क्षपणा अंश देशघाति करण अंतर करण
विषै संहति पूर्वोक्त प्रकार वा विशेष है । ताकी संभवती संहति जाननी । बहुरि नपुंसक
वेदका संक्रमण कालविषै पूर्वोक्त प्रकार नपुंसक वेदका सत्व द्रव्य औसास । ३ । १२ — ४२

ताकाँ गुण संक्रमका भाग दीपं पुरुषवेदविषै संक्रमणरूप भया द्रव्यका प्रमाण हो है । अर

पूर्वोक्त प्रकार पुरुषवेदका सत्व द्रव्य ऐसा स ३।१२ - २ ताकौ अपकर्षण भागहार अर
७।१०।४८
पत्यका असंख्यातवां भाग अर अंक संहष्टि अपेक्षा पिच्यसीका भाग दीएं गुणश्रोणिका
प्रथम निभेक होह । तिसविषे पूर्व सत्व निषेक साधिक कीएं पुरुषवेदका उदय द्रव्य हो है ।
बहुरि समय प्रवद्ध ऐसा स ३ ताकौ सातका भाग दीएं मोहका अर ताकौ दोयका भाग
दीएं पुरुषवेदका बंध द्रव्य हो है । इनकी संहष्टि औसी-

सक्रमण नमुसः	स ३।१२ - १४२
द्रव्य	७।१०।४८।गु
उदयपुषेव द्रव्य	स ३।१२ - १२ ७।१०।४८।ओ।५८५
बधपुषेव द्रव्य	स ३ ७।२

बहुरि अश्वकर्ण विषे अंक संहष्टिकरि जैसे व्याख्यानविषे कथन कीया तैसे हहां अर्थ संहष्टि-
करि पूर्व अनुभाग सत्व एक गुणहानि संबंधी स्पर्धक शलाका (९) कौ नानागुणहानिकरि गुणे
मानके स्पर्धक औसे (९।ना) याकौ अनंतका भाग देहक्रमते एक दोय तीन अधिक अनंत
करि गुणे क्रोध माया लोभके औसे ९।ना।स्व।९।ना।स्व।९।ना।स्व।बहुरि हहां क्रो-
धादिकका गुणकार उपरि एक दोय तीन अधिक थे तिनकौ जुदे कीएं ते औसे-
९।ना।९।ना।२।९।ना।३।मानकौ गुणकार विषे अधिक हे नहीं तहां अन्य लिखनी

बहुरि क्रोधका जुदा कीया अधिकका प्रमाण अर अधिक जुदेकरि अपवर्तन कीएं क्रोधके
 ऐसे १। ना स्पर्धकानिकों अनंतका भाग देह बहुभाग ऐसे १। ना। स्व इनिकों मिलाएं
 क्रोध कांडकका प्रमाण हो है। अवशेष एक भागमात्र ऐसा १। ना अवशेष सत्व क्रोधका रहे
 है। बहुरि तिस क्रोध संबंधी बहुभागनिका प्रमाण अर अवशेष एक भागका अनंत बहुभा-
 ग ऐसा १। ना। स्व स्व मिलाएं मान कांडकका प्रमाण हो है। अवशेष एक भागमात्र ऐसा-
 १। ना अवशेष सत्व रहे है। बहुरि जुदा कीया मायाके अधिकका प्रमाण अर क्रोध संबंधी
 मान संबंधी कहे थे बहुभाग तिनिका प्रमाण अर मान संबंधी अवशेष सत्व एक भाग मात्र
 ताका अनंत बहु भागनिका प्रमाण ऐसा १ ना स्व। मिलाएं मायाकांडकका प्रमाण हो है
 अर अवशेष एक भाग ऐसा १। ना अवशेष सत्व रहे है। बहुरि जुदा कीया लोभका
 अधिकका प्रमाण अर क्रोध मान माया संबंधी कहे थे बहुभाग तिनिका प्रमाण अर तिस
 मायाका अवशेष सत्व एक भागमात्र ताका अनंत बहुभागनिका प्रमाण ऐसा १। ना। स्व

इति सवर्णिकौ मिलाएँ लोभ कांडकका प्रमाण हो है । अवशेष एक भागमात्र औसा १ । ना
अवशेष सत्व रहे है । औसै इहां उपरि जुदे कीएं अधिकनिका प्रमाण लिखि नीचै अन्य मिलाएँ
तिनका प्रमाण लिखना । तिनको जौडे कांडक प्रमाण हो है औसै समझना । बहुरि इस
कांडकघात भएँ पीछे अश्वकरणविषे अनंत गुणहानि लिएँ क्रोधादिकके स्पर्धक क्रमरूप हो
है । तिनका प्रमाण नीचै ही नीचै लिखना । औसै कीएं औसी संहि हो है—

क्रो	मा	था	लो
१ । ना । १ ख	० ०	१ । ना । २ ख	१ । ना । ३ ख
१ । ना । १ ख	१ । ना । १ ख	१ । ना । १ ख	१ । ना । १ ख
१ । ना ख	१ । ना । १ ख	१ । ना । १ ख	१ । ना । १ ख
	१ । ना ख	१ । ना । १ ख	१ । ना । १ ख
		१ । ना ख	१ । ना ख

बहुरि इस अपकर्षण सहित अपूर्व स्पर्धक क्रिया हो है । तहाँ एक परमाणुविषै अविभाग प्रतिच्छेदका समूह वर्ग ताकी संहष्टि औसी (व) याकों वर्गणा प्रति जो चय ताका नाम विशेष है ताकारि गुणै औसा (व । वि) बहुरि एक स्पर्धकविषै जेती वर्गणा पाइए तिनका नाम वर्गणा शलाका है । ताकी संहष्टि औसी (४) बहुरि एक गुणहानिविषै स्पर्धकनिका प्रमाण ताका नाम स्पर्धक शलाका ताकी संहष्टि औसी (९) हनि दोऊनिकों परस्पर गुणै गुणहानि आयाम होइ ताकी अंक संहष्टि औसी (८) याकों दोयकारि गुणै दोगुणहानि की संहष्टि औसी १६ याकारि तिस विशेषकों गुणै प्रथम स्पर्धककी औसी व वि १६ याकों दूणा कीएँ द्वितीय स्पर्धककी आदि वर्गणाकी औसी व वि १६ २ बहुरि तिसहीकों तिगुणा कीएँ तृतीय स्पर्धककी आदि वर्गणाकी संहष्टि औसी व वि १६ ३ औसैही क्रमतै प्रथम समय विषै कीएँ अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण स्पर्धक शलाकाकों असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएँ होहै सो औसा ९ याकारि गुणै अंत स्पर्धककी आदि वर्गणाकी संहष्टि औसी

नो ३

व वि । १६ । ९ होहै । औसै ही जानि अन्य कथनकी संहष्टि यथा संभव जानि लेनी । ब-
नो ३

हुरि क्रोधके अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण पूर्वोक्त औसा ९ याकों अनंतका भाग देह क्रमतै
नो ३

एक दोय तीन अधिक करि गुणै मान माया लोभके अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण होहै ते औसै

१-	२--	३--
९ । ख नो ३ ख	१ । ख नो ३ ख	६ । ख नो ३ ख

बहुरि क्रोध कांडक अनंत प्रमाण औसा (स्व) यातें एक दोय तीन अधिक मानादिकका कांडक औसा १।२।३ बहुरि पूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदनिकौ अनंतका भाग दीएं अपूर्व स्पर्धककी अंत वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद व्याख्यो कषायनिके समान है। तिनकी डहाछि औसी व याकौ अपने अपने अपूर्व स्पर्धकनिके प्रमाणका भाग दीएं आदि वर्गणा हो है। यादीकौ जघन्य वर्गणा कहिए। बहुरि याकौ दोय तीन आदि क्रमतें एक एक बंधता गुणकार करि गुणें जहां अपने अपने कांडक प्रमाणका गुणकार होइ तहां व्याख्यो कषायनिकी वर्गणानिके समान अविभाग प्रतिच्छेद हो हैं। बहुरि ताके उपरि तैसे ही एक एक बंधता गुणकार रूप क्रमतें तिन समान वर्गणानिके अविभाग प्रतिच्छेदनितें दूणा प्रमाण भए समान वर्गणा हो है। औसैं ही तिनतें तिगुणा चौगुणा आदि एक घाटि अनंत गुणा पर्यंत प्रमाण होइ। ताके उपरि अंत स्पर्धकविषे पूर्वोक्त औसा व व्याख्यो कषायनिकी आदि वर्गणानिविषे समान अविभाग प्रतिच्छेद हो है। तिनकी सहाछि औसी—

निका औसा-व । १२ - हो है । बहुरि कथायनिके द्रव्यविषै साधिक चौथा भागमात्र लाभ का द्रव्य है । किंविदून चौथा भागमात्र मायाका तातैं किंविदून क्रोधका तातैं किंविदून मानका द्रव्य है । इहां इस व्यारिका भागहारकों पूर्व दोयका भागहारकरि गुणै आठका भाग हार हो है । बहुरि क्रोधका द्रव्यविषै नोकथायनिका द्रव्य समच्छेदकरि मिलाए क्रोधका द्रव्य पांच गुणा हो है । तिनकी संहष्टि औसी-लो माया मा को. बहुरि

$$\frac{व १२}{८} \times \frac{व १२}{८} = \frac{व १२}{८} = ५$$

इहां लोभके द्रव्यकों अपकर्षण भागहारका भाग दीएं अपकृष्ट द्रव्य औसा व १२ तहां लो-
भकी पूर्व स्पर्धककी वर्गणाकों अपकर्षण भागहारका भाग दीएं औसा व औसैं ही दोय घाटि
अपकर्षण भागमात्र पूर्व स्पर्धककी वर्गणानिका अपकर्षण कीया द्रव्य औसा व औ-२ यामें
आदि वर्गणाका अपकृष्ट द्रव्य मिलावनेकीं दोय घाटिकी जायगा एक घाटि कीएं औसा
व । औ - १ इतना द्रव्य ग्रहि अपूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणा निपजाइए है । सो यहू पूर्व
स्पर्धककी आदि वर्गणाके समान है । जातैं तहां भी तिस वर्गणाकों अपकर्षण भागहारका
भाग देह एक भाग ग्रहें बहुभागमात्र द्रव्य अवशेष रहे है । सो इतना ही यहू है । बहुरि
अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण औसा ९ अर एक स्पर्धकविषै वर्गणानिका प्रमाण औसा [४]
औ । २

इनकों परस्पर गुणें सर्व अपूर्व स्पर्धकनिकी वर्गणाका प्रमाण औसा १। ४ भया । इहां स्प-
ओ । ३

र्धक शलाकाकी सहनानी नवका अंक अर वर्गणा शलाकाकी न्यारिका अंक तिनकों पर-
स्पर गुणें गुणहानि होइ ताकी सहनानी आठका अंक कीएं औसी ८ संहष्टि हो है ।

याकरि तिस आदि वर्गणाकों गुणें समपट्टिका घन औसा व ओ - १ । ८ हो है । बहुरि पूर्व
ओ । ओ । ३

स्पर्धककी आदि वर्गणाकों दोगुणहानिका भाग दीएं ताका चय होइ । तातैं दूना अपूर्व
स्पर्धकनिकी वर्गणानिविधैं चयका प्रमाण है । तातैं तिस आदि वर्गणाकों एक गुणहानिकी
सहनानी आठका अंक ताका भाग दीएं इहां चय औसा व । ओ - १ याकों आदि उत्तर
ओ । ८

स्थायि अपूर्व स्पर्धक वर्गणा प्रमाणकों गच्छ स्थायि जोड़ें जो चय घन भया ताकों मिला-
वनेके अर्थि तिस समपट्टिका घनकी संहष्टि उपरि साधिककी संहष्टि कीएं औसा -

व । ओ - १ । ८ बहुरि याके गुणकार भागहारकों ल्योडकरि गुणें औसा व । १२ । ओ - १
ओ । ओ । ३

द्रव्यतौ अपूर्व स्पर्धकनिहीविधैं दना बहुरि लोभका अपकर्षण कीया द्रव्य औसा व । १२
८ । ओ

इहां मोहका सर्व द्रव्यकी अपेक्षा आठका भागहार था अर लोभहीकी वर्गणाकों ल्योड
गुणहानिकरि गुणें लोभका द्रव्य होइ । ताकों अपकर्षण भागहारका भाग दीएं औसी व १२
ओ

संहृष्टि हो है । याविषं पूर्वोक्त द्रव्य औसा व । १२ । ओ — १ घटावनेकों औसा ओ । ३ । ३
ओ । ओ । ३ । ३

करि समच्छेद कीएँ यहु औसा व । १२ । ओ । ३ ३ भया । बहुरि यकें अर तिस घटावने
को । ओ । ३ ३ ३

योग्य द्रव्यकें अन्य समान जानि औसा ओ । ३ । ३ गुणकारविषं औसा ओ — १ घटावनेकी
आगें संहृष्टि कीएँ घटाएँ पीछे अवशेष द्रव्यकी संहृष्टि औसी व । १२ । ओ । ३ ओ — १ संहृष्टि
ओ । ओ । ३ । ३ । ३

हो है । बहुरि अपूर्व स्पर्धक वर्गणा संबंधी एक शलाका अर याका भाग पूर्व स्पर्धक वर्गणा शला-
काकी देना । तहां गुणहानिकी संहृष्टि आठका अंक ताकों ड्योढकरि गुणें पूर्व स्पर्धक वर्गणा
शलाका औसी ८ । ३ याकों अपूर्व स्पर्धक वर्गणा शलाका औसी ८ का भाग दीएँ औसा
८ । ३ इहां गुणहानिका अपवर्तन कीएँ अर भागहारका भागहार औसा ओ ताकों राशिका
८ । ३ ३

गुणा कीएँ औसी ओ । ३ । ३ अपूर्व स्पर्धक संबंधी शलाका भई । यामें अपूर्व स्पर्धक शलाका
एक अधिक कीएँ उभय शलाका औसी ओ । ३ । ३ याका भाग तिस अवशेष द्रव्यकों देह
को । ३ ३ ३

अथ
संख्या
सार

११३

अपनी अपनी शलाका करि गुणें पूर्व स्पर्धक संबंधी द्रव्य ऐसा-
व । १२ । ओ । ३ । ३-ओ-१ ओ ३ याविषै ऐसा ओ । ३ का अपवर्तन कीएं ऐसा-

ओ । ओ । ३ । ३ । ओ । ३ । ३

व । १२ । ओ । ३ । ३-ओ-१ हो हे । बहुरि अपूर्व स्पर्धक संबंधी द्रव्य ऐसा-

ओ । ओ । ३ । ३ । ओ । ३ । ३

व । १२ । ओ । ३ । ३-ओ-१ याकों पूर्वोक्त अपूर्व स्पर्धकविषै देने योग्य द्रव्यविषै
ओ । ओ । ३ । ३ । ओ । ३ । ३

मिलावना सो पूर्व द्रव्य ऐसा व । १२ । ओ-१ सो याविषै गुणकाररूप अपकषेण भागहारके
ओ । ओ । ३ । ३

आगै एक घाटि या सो दूरिकरि भागहाररूप जो अपकर्षण भागहार या ताका गुणकार
ऐसा ३ । ३ विषै एक अधिक कीएं ऐसा व । १२ । ओ । याविषै पीछै मिलावने योग्य द्रव्यका

ओ । ओ । ३ । ३

साधिकपना जानना । बहुरि याकों अपूर्व स्पर्धक वर्गणा प्रमाण ऐसा ८ ताका भाग देना
ओ ३

तहां गुणकारविषै ओढ गुणहानि ऐसा १२ या ताका गुणहानि ऐसा ८ का भागहारकरि
१५

अपवर्तन् कीएं गुणकारविषैं ब्योढ रह्या अर भागहारका भागहार औसा-ओ। ३ या ताकौ राशिका गुणकार करना। औसैं कीएं मध्य धन औसा व। ओ। ओ। ३। ३ भया। याकौ

१-
ओ। ओ। ३। ३

एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ सो औसा-व। ओ। ओ। ३ याकौ दोगुणहानि औसा १६ करि गुणैं। प्रथम वर्गणाविषैं दीया द्रव्य





१-२ १-
ओ। ओ। ३। ३। १६-८ओ। ३। ३

होइ अर इस गुणकारविषैं क्रमतैं एक एक घाटि गच्छ औसा ८ अंत वर्गणाविषैं दीया द्रव्य हो है। औसैं तौ अपूर्व स्पर्धक संबंधी दीया द्रव्यकी सद्दष्टि हो है।

बहुरि पूर्व स्पर्धक संबंधी दीया द्रव्य औसा व। १२। ओ। ३-ओ-१ याकौ

१-
ओ। ओ। ३। ३

ब्योढ गुणहानि औसा १२ का भाग देइ याहीका अपवर्तन कीएं आदि वर्गणाविषैं दीया द्रव्य हो है। बहुरि याकौ दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष होइ ताकी लघु सद्दष्टि औसी (वि) ताकौ दोगुणहानिकरि गुणि तामैं एक एक घाटि प्रथम गुणहानि पर्यंत अर गुणहानि गुणहानि प्राति आधा आधा क्रम कीएं अंत वर्गणाविषैं दीया द्रव्यका प्रमाण विशेषकौ एक घाटि गुणहानिकरि हीन दोगुणहानि करि गुणैं अर एक घाटि नाना गुणहानि प्रमाण दूबा निका भाग दीएं हो है। इनकी सद्दष्टि औसी-

<p>  </p>	<p>  </p>
<p>  </p>	<p>  </p>

इहां नीचें अपूर्वस्पर्धक उपरि अपूर्व स्पर्धक की रचनाकरि ताके आगे तिनकी वर्गणाविषे दीया द्रव्यके प्रमाणकी सहाष्टि जाननी । असें तौ दीया द्रव्यकी सहाष्टि है । अर पूर्व स्पर्धककी वर्गणानिकी अपकर्षण भागहारका भाग देइतहां बहुभागमात्र पुरातन द्रव्य है सो ऐसा-
व । ओ - १ इस पुरातन द्रव्य अर दीया द्रव्यकीं मिलाएं पूर्व अपूर्व स्पर्धकानिका चय घ-

को

दत्ता क्रम लीएं एक गोपुच्छ हो है ऐसा जानना । बहुरि इहां क्षेत्र रचना करि इस अर्थ को दिखाया है सो टीका विषे लिखा ही है । तहां सहाष्टि सुगम है । बहुरि पूर्व स्पर्धक छोट गुणहानिमात्र औसे (१२) तिनकी नीचें प्रथम समयविषे कीएं अपूर्व स्पर्धक गुणहानिके असंख्याते भागमात्र औसे ८ तिनके नीचें तिनके असंख्याते भागमात्र द्वितीय समयविषे कीएं अपूर्व स्पर्धक औसे ८ इनिकी रचना औसी—

१२			१२			१२		
८			८			८		
३			३			३		
८			८			८		
३			३			३		

इहां स्पर्धकनिकी रचनाकरि वीचिमें पूर्व स्पर्धकादिकका विभाग करनेके अर्थ लीकरी है । औसैं ही तृतीयादि समयनिविषे नीचें नौवें असंख्यात गुणा घटता क्रम लीएं अपूर्व स्पर्धकनिकी रचना करनी । बहुरि प्रथम अनुभाग कांडक घात भएं अनुभागका अल्प बहुत्वविषे क्रोध मान माया लोभके अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाणकी प्रथम समयविषे कीएं अपूर्व स्पर्धकनिकी सहाष्टिके ऊपरि अन्य समयनिविषे कीएं मिलावनेके अर्थ अधिक की सहाष्टि कीएं सहाष्टि हो है । अर एक गुणहानिविषे स्पर्धक शलाकाकी अर एक स्पर्धक

विषे वर्गणां शलाकाकी तो पूर्वोक्त संदृष्टि जाननी अर क्रोधादिकके अपूर्व सर्वकानिके आगे वर्गणा शलाकाकी संदृष्टि कीएं तिनकी वर्गणाकी संदृष्टि हो हे। अर नानागुगहानि गुणित स्पर्धक शलाकाको क्रमते न्यारि तीन दोय एकवार अनंतका भाग दीएं लोभमाया मान क्रोधके पूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण हो हे। तिनकी वर्गणा शलाकाकरि गुणे अपना अपना वर्गणानिका प्रमाण हो हे। अैसे ए कहे तिनकी संदृष्टि अैसी है। —

क्रो अ पू	पा अ पू	या अ	लो अ	गु अ	स्पर्ध	क्रो व	पा व	या व
१	१- ९ ल ओ ३ ल	१- ९ ल ओ ३ ल	३- ९ ल ओ ३ ल	९	४	९ ४ ओ ३	१- ९ ल ओ ३ ल	१- ९ ल ओ ३ ल
लो व	लो पू	लो पू व	या पू	या पू व	पा पू	मा पू व	को पू	को पू व
३- ९ ल ओ ३ ल	९ ना ४ ल व ल	९ ना ४ ल व ल	९ ना ल व ल	९ ना ४ ल व ल	९ ना ल व ल	९ ना ४ ल व ल	९ ना ल	९ ना ४ ल

बहुरि इहां क्रोधादिकनिके पूर्वस्पर्धकनिका प्रमाणको अनंतका भाग दीएं बहुभाग मात्र तो द्वितीय कांडक करि घात कीजिए है। एक भागमात्र अवशेष रहै है। तिनकी संदृष्टि अैसी —

नाम	क्रो	मा	या	लो
घातकीए स्पर्धक	१- ६ ना ल व ल	१- ६ ना ल व ल	१- ६ ना ल व ल	१- ६ ना ल व ल
अवशेष स्पर्धक	६ ना ल व ल	६ ना ल व ल	६ ना ल व ल	६ ना ल व ल

असैं ही तृतीयादि कांडकविषैं क्रम जानना । बहुरि तहां अनुभागकी यथा संभव संहति जाननी
असैं अपूर्व स्पर्धक क्रिया विधानविषैं संहति कही । अब वादर कृष्टि करण विधानविषैं संह-
ति कहिए हैं—

तहां अंतर्मुहूर्तमात्र कालकों संख्यातका भाग देह बहुभागानिके तीन समान भागकरि
अवशेष एक भागका संख्यात बहुभाग प्रथम समान भागविषैं मिलाएं अवकरण काल है ।
अवशेष एक भागका संख्यात बहुभाग द्वितीय समान भागविषैं मिलाएं कृष्टि करण काल
है । अवशेष एक भाग तृतीय समान भागविषैं मिलाएं कृष्टि वेदक काल है तिनकी संहति
रचना ऐसी—

नाम	अवकरण	कृष्टिकरण	कृष्टिवेदक
समभाग	१— २ । ७ । ७ ७ । ३	१— २ । ७ । ७ ७ । ३	१— २ । ७ । ७ ७ । ३
देयभाग	१— २ । ७ । ७ ७ । ७	१— २ । ७ । ७ ७ । ७	२ । ७ ७ । ७ । ७

बहुरि व्याख्यो कषायनिकी वारह संहति हो हैं । तिनका अनुभाग जाननेको अंक संहति
अपेक्षा पूर्वे टीकामें कथन किया है । बहुरि मोहका द्रव्य औसा व १२ याकों अपकर्षण
भागहारका भाग दीएं अपकृष्ट द्रव्य औसा व १२ बहुरि वर्गणा शलाकाके अनंतवै

भागमात्र प्रथम समयविषे कीनी कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ तहां इनकी आठका भाग देह एक भाग व्याख्यो कषायनिका द्रव्य वा कृष्टिका प्रमाण हो है। तहां लोभविषे साधिक मायाविषे किंचिदून तातें भी क्रोधविषे किंचिदून तातें मानविषे किंचिदूनपना जानना। बहुरि व्यारिभागमात्र नोकषाय संबंधी कृष्टि क्रोधविषे मिलाएं तहां पांच भाग हो हैं। तिनकी संहृष्टि ऐसी-

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
द्रव्य	१ व। १२ ८। ओ	१ व। १२- ८। ओ	१ व। १२ = ८। ओ	१ व। १२ = ५ ८। ओ
कृष्टि	४ ख। ८	४- ख। ८	४ = ख। ८	४ = ५ ख। ८

बहुरि अपना अपना द्रव्यका चा कृष्टि प्रमाणकी पत्यका असंख्यातवां भाग का भाग देह तहां बहुभागके तीन समान भाग करने। बहुरि अवशेष एक भागकी पत्यका असंख्यातवां भागका भाग देह बहुभाग प्रथम समान भागविषे मिलाएं प्रथम संग्रहकृष्टिविषे द्रव्यका वा कृष्टिका प्रमाण हो है अर अवशेष एक भागकी तैसै ही भाग देह बहुभाग द्वितीय समान भागविषे मिलाएं द्वितीय संग्रहविषे तिनिका प्रमाण हो है। अवशेष एक भाग तृतीय समान भागविषे मिलाएं तृतीय संग्रहविषे तिनका प्रमाण हो है। सो लोभ का इस विधानकी ऐसी संहृष्टि हो है-

लोपका	प्रथमसंग्रह	द्वितीयसंग्रह	तृतीयसंग्रह
समानभाग द्रव्य	॥ १२२। प-१ २४ओ। ३ प ३	॥ १२२। प-१ २४। ओ ३ प ३	॥ १२२। प-१ २४। ओ ३ प ३
देयभाग द्रव्य	॥ १२२। प-१ २४ओ। ३ प ३	॥ १२२। प-१ २४ओ। ३ प ३	॥ १२२। प-१ २४ओ। ३ प ३
समानभाग कृष्टि	॥ १२२। प-१ २४ओ। ३ प ३	॥ १२२। प-१ २४ओ। ३ प ३	॥ १२२। प-१ २४ओ। ३ प ३
देयभाग कृष्टि	॥ १२२। प-१ २४ओ। ३ प ३	॥ १२२। प-१ २४ओ। ३ प ३	॥ १२२। प-१ २४ओ। ३ प ३

इहां बहुभागनिविषै आठका अर तीनका भागहारकों गुणि चौईसका भागहार लि-
ख्या है। औसै ही अन्य कषायनिकी जाननी। बहुरि तहां किंचित् हीन अधिक न गिणि
अपना अपना सर्व द्रव्यका वा सर्व कृष्टिका प्रमाणकों तीनका भाग देह आठका भाग
आगै था ताकरि गुणै चौईसका भाग हो है। तहां ग्यारह संग्रहविषै तो एक एक भागमात्र
प्रमाण हो है। अर क्रोधकी तृतीय संग्रहविषै नोकषाय संबंधी द्रव्यका संक्रमण भया है तातै
ताविषै तेरह भागमात्र तिनिका प्रमाण हो है तिनकी सदृष्टि औसी-

नाम	लोम			माया			मात			क्रोध		
	प्र	वि	तृ	प्र	वि	तृ	प्र	वि	तृ	प्र	वि	तृ
समग्र	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ
द्रव्य	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ
कृष्टि	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ	१२ २४ ओ

बहुरि प्रथम समयविषे अपकर्षण कीया द्रव्य असा व । १२ ताकी कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छका अर
एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीए विशेष होइ । सो असा-
व । १२ याको दोगुणहानिकरि गुणै प्रथम कृष्टिविषे दीया द्रव्य होइ । बहुरि विशेष

ओ । १२ । १२-४
४ । १२-४

का जो दो गुणहानिका गुणकार ताविषे कमते एक एक घटाइ एक घाटि गच्छमात्र घटै
अंत कृष्टिविषे दीया द्रव्य होइ । तिनकी संक्षिप्त असी-

बहुरि स्पर्धक संबंधी द्रव्यकों ब्योढ गुणहानिका भाग दीएं प्रथम वर्गणाविषै एक एक विशेष घटता द्वितीयादि वर्गणाविषै बहुरि आधा आधा गुणहानिविषै द्रव्य दीजिए है। ताकी संदृष्टि सुगम है। बहुरि कृष्टिकारकका द्वितीय समयविषै प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनिका प्रमाणको असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं नवीन करी कृष्टिनिका प्रमाण हो है। अर प्रथम समयविषै जो द्रव्यविषै अपकर्षण भागहारका भाग था तहां अपकर्षण भागहारके असंख्यातवै भागमात्र भागहारका भाग दीएं अपकर्षण कीया द्रव्य हो है। तिनकी संदृष्टि औसी-

लोभ				माया			
नाम	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	
संग्रह							
कृष्टि	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	
द्रव्य	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	
माया				क्रोध			
नाम	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	
संग्रह							
कृष्टि	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	ख २४ ओ ३	
द्रव्य	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	व १२ ओ ३	

बहुरि द्वितीय समयविषे अपकर्षण कीया द्रव्यविषे अधस्तन शीर्ष अधस्तन कृष्टि उ-
भय द्रव्य विशेष मध्यम खंड रूप न्यारि विभाग हो हें । तहां प्रथम समय संबंधी पूर्वोक्त
विशेष औसा हे व १२ याकी आदि अक्षर रूप औसी (वि) लघु संश्लिष्टकरि याकी

१८
को । ४ । १६ - ५
क २

आदि उत्तर स्थापना अर एक घाटि लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिनिका प्रमाण औसा ४
ताकी गच्छ स्थापना । तहां एक घाटि गच्छका आघाकी उत्तरकरि गुणि ताभे आदि मि-
लाय ताकी गच्छकरि गुणे लोभका प्रथम संग्रहविषे अधस्तन शीर्ष द्रव्य हो हें । बहुरि लो-
भकी प्रथम संग्रह कृष्टिमात्र विशेष आदि स्थापि एक विशेष उत्तर स्थापि अपनी कृष्टिनि
का प्रमाण गच्छ स्थापि पूर्वोक्त विधान कीएं लोभका द्वितीय संग्रहविषे अधस्तन शीर्ष
द्रव्य हो हें । औसे ही क्रोधका तृतीय संग्रह पर्यंत विधान जानना । विशेष इतना— जो आ-
यतें नीचें जे कृष्टि पाहए तिनका प्रमाण विशेष आदि स्थापने । अन्य विधान पूर्ववत्
जानना । तिनकी संहाष्टि औसी—

१८

२४

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीय संग्रह	१-८ ४ वि ४५ ख २४ ख २४ २	१-८ ४ वि ४ ११ ख २४ ख २४ २	१-८ ४ वि ४ १७ ख २४ ख २४ २	१-८ ४ वि ४ ४ ५ ख २४ ख २४ २
द्वितीय संग्रह	१-८ ४ वि ४३ ख २४ ख २४ २	१-८ ४ वि ४९ ख २४ ख २४ २	१-८ ४ वि ४ १५ ख २४ ख २४ २	१-८ ४ वि ४ २१ ख २४ ख २४ २
प्रथम संग्रह	१-८ ४ वि ४१ ख २४ ख २४ २	१-८ ४ वि ४७ ख २४ ख २४ २	१-८ ४ वि ४ १३ ख २४ ख २४ २	१-८ ४ वि ४ १९ ख २४ ख २४ २

इहां लोभका प्रथम संग्रहविषे एक घाटि गच्छ असा ४ ताकों आधा कीएं असा-
 ४ ताकों उत्तर जो विशेष ताकरि गुणें असा ४ वि। यमैं एक विशेषमात्र आदि मिला-
 वनेके अर्थि विशेषका गुण्यविषे दोयकरि भाजित दोय घाटिथे तिनकों दूरि कीएं असा-
 ४। २। वि। बहुरि याकों गच्छ असा ४ करि गुणना सो इस गुणकारकों गुण्य कीएं संक-
 लनधन असा हो है। ४ वि। ४ बहुरि लोभका द्वितीय संग्रहविषे एक घाटि गच्छका आधाकों
 उत्तर जो विशेष ताकरि गुणें असा ४ वि। यमैं प्रथम संग्रहका गच्छमात्र विशेष असा
 ४ वि। मिलावना सो याकों दोयकरि समच्छेद कीये यह असा - ४ वि २ भया। याकों अर
 ख २४ ख २४ २

वाकौ अन्य सर्व समान जानि दोय का गुणकारविषै एक गुणकाररूप वाकौ स्थापि मिलाएँ
 १.८
 ऐसा ४। वि। ३ याकौ गच्छ औसा ४ करि गुणै गुणकार गुण्यनिकौ आगे पीछे लिखे
 ख। २४। २ १.८ ख। २४
 द्वितीय संग्रहविषै संकलन धन औसा ४। वि। ४। ३ बहुरि लोभका तृतीय संग्रह विषै एक घाटि
 ख। २४। २। ख। २४। २ १.८
 गच्छका आधा उत्तर करि गुणित औसा ४। वि। याविषै प्रथम द्वितीय संग्रहका गच्छमात्र विशेष
 १.८ ख। २४। २
 रूप आदि मिलावना सो औसा ४। २ याकौ दोय करि समच्छेद कीएँ औसा ४। ४ याका
 ख। २४। २
 च्यारिका गुणकारविषै वाका एक गुणकार मिलाएँ तृतीय संग्रहविषै संकलन धन औसा—
 १.८
 ४। वि। ४। ५ . याही प्रकार मायाकी प्रथमादि संग्रहनिविषै विधान कीएँ भाज्य
 ख। २४। ख। २४। २
 राशिका गुणकारविषै दोय दोय अधिकका अनुक्रम हो है। बहुरि क्रोधकी तृतीय संग्रह
 विषै गच्छ औसा ४। १३ गाँमै एक बटाह ताका आधाकौ विशेष करि गुणै औसा—
 ख। २४
 १.८
 ४। १३। वि। याविषै पूर्वे ग्यारह संग्रह तातें एक संग्रहका गच्छकौ ग्यारहकरि गुणै अर
 ख। २४। २ १.८
 ताकौ विशेषकरि गुणि तिनिका गच्छमात्र विशेष औसा ४। ११। वि। याकौ दोयकरि सम-

१-

च्छेद कीएं औसा ४। २२। वि। इनिके मिलावनेकों अन्य समान जानि तेरह अर वाईसका
 ख। २४। २। १२-
 गुणकारकों मिलाएं औसा ४। ३५। वि। बहुरि याकों गच्छ औसा ४। १३ करि गुणें औसा
 १-
 ४। ३५। वि। ४। १३ इहां पैतीस अर तेरहका गुणकारकों परस्पर गुणें कोधकी तृतीय
 ख। २४। २। ख। २४
 संग्रहविषैं न्यारिसैं पचावनका गुणकार हो है। सो औसा ४। वि। ४। ४५५ इहां गुण्य गु-
 णकारादिविषैं एक हीन वा अधिककों न गिणि संहति स्थापी है। औसा जानना। बहुरि
 १-
 इस सककों मिलाएं एक धाटि सर्व कृष्टिमात्र गच्छ औसा ४ ताका आधाकों विशेषकरि गुणें
 ख
 तामैं एक विशेष मिलाय गच्छकरि गुणें सर्व अधस्तन शीर्ष द्रव्य औसा वि। ४। ४ इहां गुण्य
 गुणकार पीछैं आगैं लिखे हैं। बहुरि लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिका पूर्वोक्त प्रकार द्रव्य औसा
 व। १२। १६ इहां भागहारविषैं दोगुणहानिका ऋणकों न गिणि अपवर्तन कीएं औसा व
 १-
 ओ। ४। १६-४
 ख। २४। ख। २४। २
 याकों अपनी अपनी द्वितीय समयविषैं कीनी नवीन कृष्टिनिका प्रमाणकरि गुणें अपना अ-
 पना अधस्तन कृष्टि द्रव्य हो है। ताकी संहति औसी-

ओ ४
ख २४

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीयसंग्रह	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ १२ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४
द्वितीयसंग्रह	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४
प्रथमसंग्रह	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४	व १२४ ओ ४ ख २४ ओ ४ ख २४

बहुरि तिसही लोभकी प्रथम कृष्टिकों सर्व नवीन कृष्टिका प्रमाणकरि गुणें सर्व अधस्तन
कृष्टि द्रव्य औसा व । १२ । ४ बहुरि प्रथम समयविषे अपकर्षण कीया औसा व १२
ओ । ४ । ख ओ । ४

यातें असंख्यात गुणा द्वितीय समयविषे द्रव्य अपकर्षण कीया सो औसा व । १२ । ४ याका
असंख्यातका गुणकार उपरि एक अधिककी संदृष्टि कीएं उभय द्रव्य औसा व । १२ । ४ ।
याकों प्रथम समयविषे कीनी कृष्टि औसी ४ याके उपरि द्वितीय समयविषे कीनी कृष्टिनिका
प्रमाण मिलावनेकों अधिककी औसी (१) संदृष्टि कीएं उभयमात्र द्रव्य औसा ४ ताका अर
एक घाटि गच्छका आघाकरि न्युन दोगुणहानिका भाग दीएं उभय द्रव्यका विशेष औसा

व। १२। ४ याकी लघु संहति ऐसी (वि) याकी आदि उत्तर स्थापना अर क्रोधकी तृतीय

को। ४। १६-४
ख। ख २

संग्रहकी उभयद्रव्य कृष्टिमात्र गच्छ स्थापना तहां पूर्वोक्त प्रकार एक घाटि गच्छका आधाको विशेषकरि गुणि तारें आदि मिलाय गच्छकरि गुणें क्रोधकी तृतीय कृष्टिविषै उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है। बहुरि क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिमात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर एक घाटि अपनी उभय कृष्टिमात्र गच्छ स्थापै संकलन धनमात्र क्रोधकी द्वितीय कृष्टिविषै उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है। औसैं ही लोभका प्रथम संग्रह पर्यंत कम जानना। विशेष इतना—

अपनी अपनी एक अधिक पहिली कृष्टिका प्रमाणमात्र विशेष आदि स्थापन करना तिनकी संहति ऐसी—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीयसंग्रह	वि ४ ४ ४३ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ ३७ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ ३१ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ १६९ ख २४ ख २४ २
द्वितीयसंग्रह	वि ४ ४ ४५ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ ३९ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ ३३ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ २७ ख २४ ख २४ २
प्रथमसंग्रह	वि ४ ४ ४७ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ ४१ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ ३५ ख २४ ख २४ २	वि ४ ४ २९ ख २४ ख २४ २

इहां क्रोधकी तृतीय संग्रहविषे गच्छ असा- ४ । १३ यामें एक घटाय ताका आधाकों
 उत्तर जो विशेष ताकरि गुणें असा ४ । १३ वि। यामें आदि एक विशेष मिलावनेकों दोय
 करि भाजित एक हीनकी जायगा एक अधिक चाहिण सो न गिणें असा ४ । १३ । वि ।
 याकों गच्छकरि गुणें असा ४ । १३ । वि । ४ । १३ इहां भाज्यविषे तेरह तेरहके दोय गुण-
 कारनिकों परस्पर गुणें अर गुण्य गुणकारनिकों आगें पीछें लिखें क्रोधकी तृतीय संग्रह
 विषे असी ४ । ४ । १६१ बहुरि क्रोधकी द्वितीय संग्रहविषे गच्छ असा ४ । १३
 एक घटाह ताका आधाकों विशेषकरि गुणें असा ४ । वि। यामें एक अधिक क्रोधकी तृतीय
 संग्रहका गच्छमात्र विशेष आदि मिलावना सो असा ४ । १३ । वि । याकों दोयकरि सम-
 च्छेद कीएं असा ४ । २६ । वि । बहुरि याकें अर वाकें एक अधिक हीनकों न गिणि अन्य
 समानता जानि याका छवीसका गुणकारविषे एक गुणकार वाका मिलाएं क्रोधकी द्वितीय सं

विषैँ असा वि । ४ । ४ । २० बहुरि क्रोधकी प्रथम संग्रहविषैँ एक घाटि गच्छका आधा विशेष
स । २४ । स । २४ । २

करि गुणित असा ४ । वि । याविषैँ एक अधिक क्रोधकी प्रथम द्वितीयका मिलाया हूवा
स । २४ । स । २४ । २

गच्छमात्र विशेष आदि सो असा- ४ । ४ याको दोयकरि समच्छेदकरि पूर्वोक्त प्रकार
स । २४ । स । २४ । २

मिलाएँ संकलन घन असा वि ४ । ४ २९ असा ही विधान कीएँ मानकी प्रथम संग्रह आदि
स । २४ । स । २४ । २

लोभकी तृतीय संग्रह पर्यंत भाज्यराशिका गुणकारविषैँ दोय दोय अधिकका क्रम हो है । बहुरि
तिस विशेष प्रमाण आदि उत्तर स्थापि सर्व उभय कृष्टिमात्र गच्छ स्थापैँ सर्व उभय द्रव्य असा-
१ । १ ।

वि । ४ । ४ बहुरि अपना अपना द्वितीय समयविषैँ अपकर्षण कीया द्रव्यका भागहार अ-
स । स

संख्यात ताके आगैँ पूर्वोक्त तीन द्रव्य घटावनेके आर्थ तीनवार किंचिदूनकी असा- (३)
संदृष्टि कीएँ अर अपनी अपनी उभय कृष्टिका गुणकार ताहीका भागहार कीएँ अपना
अपना मध्य खंड द्रव्यकी संदृष्टि असा हो है-


नाम	लोभ	माया	मान	कोष
कुली- संग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ १३ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४
द्वितीय संग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४
प्रथम संग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ३ ३ ख २४


बहु- अपकृष्ट द्रव्यविषे तैसै ही संक्षिप्त कीएं सर्व मध्यम खंड द्रव्यकी औसी-

व १२ ४ हो है । बहु- इस व्या- प्रकार द्रव्य देनेका विधान जानि तहां तथा संभव संक्षि-

प्त जाननी । बहु- यह दीया द्रव्य पूर्व कृष्टि- अपूर्वकृष्टि- असंख्यात भाग शुद्ध रूप दीजिए है । सो अ- ग्यारह स्थान हैं । बहु- अपूर्व कृष्टि- पूर्व कृष्टि- असंख्यात भाग हानि लीं द्रव्य दीजिए है सो अ- नारह स्थान हैं । अवशेष स्थाननिविषे अनंत-

भाग हानि लीएँ द्रव्य दीजिए है सो इनकी तेबीस ऊंट कूटनिके समान रचना हो है ।
सो यथा संभव जाननी । बहुरि इहां अपूर्व कृष्टिनिकी रचना ऐसी है । —

इहां नीचें लोभकी प्रथम कृष्टि ताविषें नीचें अपूर्व कृष्टिनिविषें अधस्तन कृष्टि दीया
ताकी संहति ऐसी (८) बहुरि तिनके उपरि पूर्वकृष्टि तिनविषें समपट्टिकारूप द्रव्य विशेष
सहित था ताकी संहति ऐसी  ताविषें अधस्तन शीर्ष विषें द्रव्य दीया ताकी संहति

 अैसें भएँ पूर्व अपूर्व कृष्टिनिकी समपट्टिका भई अैसें ही लोभकी द्वितीयादि क्रोध-
की तृतीय पर्यंत विधान जानने । बहुरि इन सवनिविषें समानरूप मध्यम खंड द्रव्य दीया ताकी
समलकीररूप सहनानी जाननी । बहुरि इन सवनिविषें एक एक विशेष घटता उभय द्रव्य
विषें विशेष द्रव्य दीया था ताकी क्रमहीन लकीररूप सहनानी जाननी । अैसेंही कृष्टि करण
कालका तृतीयादि अंत समय पर्यंत विधान जानना । बहुरि कृष्टि करण काल समाप्त भएँ
कृष्टि वेदक कालका प्रथम समयविषें जो सर्व द्रव्य कृष्टिरूप परिनिमित्त तिन कृष्टिनिविषें
गोपुच्छाकार भया ताकी संहति कृष्टि कारक विधानविषें कही थी तैसें ऐसी जाननी—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
द्रव्य	१ व १२ ७।८	१ व १२ ७।८	व १२=५ ७।८	व १२=५ ७।८

बहुरि सर्व द्रव्य ऐसा व १२ याकों चौदसका भाग देह अन्य संग्रह विषें एक एक भाग, को-

१। १३ याकौ पत्यका असंख्यातवां भागका भाग देह बहुभाग औसैं ४। १३। प कृष्टि
ख। २४

संहति
अधिकार

वेदकका प्रथम समयविषैं बंध उदय रूप जे बीचिकी उभय कृष्टि तिनका प्रमाण है। बहुरि
एक भाग औसा ४। १३ ताकौ अंक संहति अपेक्षा शलाकानिका जोड सोलहका अंक
ख। २४। प

ताका भाग देह दोय शलाकाकरि गुणें तो नीचैकी बंध उदय रहित अनुभय कृष्टिनिका अर
तीन शलाकानिकरि गुणें तिनके उपरि जे नीचैकी उदय कृष्टि तिनिका च्यारि शलाका-
निकरि गुणें उपरिका अनुभय कृष्टिनिका सात शलाकानिकरि गुणें तिनके नीचैं जे उप-
रिकी उदय कृष्टि तिनका प्रमाण है। तिनकी संहति औसी-

अनुभय	उदय	उभय	उदय	अनुभय
१।	१।	१।	१।	१।
४। १३। २	४। १३। ३	४। १३। ५	४। १३। ७	४। १३। ९
ख। २४। प। १६	ख। २४। प। १६	ख। २४। प। १६	ख। २४। प। १६	ख। २४। प। १६
३	३	३	३	३

इहां गुगपत् उदय आवने योग्य एक निष्कविषैं औसा अनुभाग है। तातैं आडी रचना
करी है। तहां नीचैतैं प्रथमादि कृष्टिनिकी क्रमतैं रचना जाननी। तिनविषैं अनुभय उदय

उभय अनुभय कृष्टि क्रमते पाइए है तिनका प्रमाण लिख्या है। बहुरि द्वितीय समयविषे
नीचली उदय कृष्टि थी सो तो उदय रूप भई। अर नीचली अनुभय कृष्टि थी ताको प-
त्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग असा ४।१३।२ ताको अंक संहतिकरि
ख।२४।प।१६।प ३

पांचका भाग देइ तहां दोय भाग प्रमाण जघन्यादि कृष्टि तो अनुभय रूप हो हैं। अर ताके
उपरि तीन भाग प्रमाण कृष्टि उदय रूप हो हैं। अर ताके उपरि बहुभागमात्र कृष्टि असी
४।१३।प १८ उभय रूप हो हैं। बहुरि जे उभय कृष्टि थी तिनिविषे पूर्वे जे उदय

ख।२४।प।१६।प ३

कृष्टि थी तिनको पत्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र कृष्टि इहां उदय
रूप अर अनुभ(द)य रूप भई असी-४।१३।७ ४।१३।४ इनिंको मिलाएं
ख।२४।प।१६।प ख।२४।प।१६।प

याको पूर्वे उभय कृष्टिनिका प्रमाण असा ४।१३।प तांमें घटा-
असा ४।१३।११ ख।२४।प।१६।प ३

बना सो अन्य भागहार समान जानि असा १६ प भागहारकरि समच्छेद कीएं असा-
३

भया सर्व द्रव्य औसा (व । १२) ताकौ सर्व कृष्टिमात्र गच्छ औसा ४ ताका अर एक घाटि
गच्छका आधाकरि न्यून दो गुणहानिका भाग दीएं पूर्व विशेष औसा व १२ याकी लघु

१८
४।१६-४
ख । ख २

संघट्टि औसी (वि) बहुरि इहां गच्छका प्रमाण सर्व कृष्टिमात्र स्थापि जैसैं कृष्टिकारकका
द्वितीय समयविषैं विधान कह्या है तैसैं अधस्तनशीर्षविशेषकी संघट्टि हो है । विशेष इतना-

तहां ताकौ प्रथम संग्रह कृष्टि कहीं थी ताकौ इहां तृतीय संग्रह कहनी । तृतीय कहीं
थी ताकौ प्रथम कहनी । बहुरि लोभकी तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टि औसी । व । १२ इहां

४
ख

सर्व द्रव्यकौ सर्व कृष्टिके प्रमाणका भाग दीएं मध्यम घन होइ । ताविषैं विशेषका अधिक-
पना कीएं जघन्य कृष्टि भई है । बहुरि याकौ दीयवार असंख्यातकरि गुणित अपकर्षण
भागहारका भाग दीएं एक मध्यम खंड औसा व । १२ याकौ अपनी अपनी संग्रहके कृष्टि

४।ओ । ३३
ख

का प्रमाणकरि गुणैं अपना अपना मध्यम खंड द्रव्य हो है । बहुरि लोभकी तृतीय संग्रहकी
जघन्य कृष्टिविषैं एक मध्यम खंड पिलावनेकौ साधिककी संग्रह कृष्टि कीएं औसा व । १२

४
ख

बहुरि अपनी अपनी संग्रहके नीचे संक्रमण द्रव्यकरि करी जे नवीन कृष्टि तिनिका प्रमाण अपनी पूर्वे कृष्टिनिको असंख्यात गुणां अपकर्षण भागहारका भाग दीएं औसा ४

भागहारका गुण्य गुणकारनिको आगे पीछे लिखें औसा ४ ताकारि तिस लोभकी

ख। ३। ख

जघन्य कृष्टि समान द्रव्यको गुणें अपना अपना संग्रहके नीचे संक्रमण द्रव्यकरि भई नवीन कृष्टि संबंधी समान द्रव्य हो है। तहां क्रोधकी प्रथम कृष्टिविषे यह द्रव्य नाहीं संभव है। तहां शून्य जाननी। बहुरि पूर्व उत्तर द्रव्यको पुरातन नूतन कृष्टिमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणशानिका भाग दीएं एक उभय द्रव्य विशेष होइ ताकी लघु संदृष्टि औसी (वि) स्थापि जैसे कृष्टिकारकका द्वितीय समयविषे विधान कह्या था तैसे इहां उभय द्रव्यविशेष कीएं संदृष्टि हो है। विशेष इहां मध्यम खंडवत् जानना। बहुरि एक मध्यम खंड सहित लोभकी तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टिका द्रव्य औसा व १२ ताकी

४

ख

एक शलाका होइ तो लोभकी तृतीय संग्रहका आय द्रव्य विषे पूर्वोक्तव्यारि द्रव्य घटावने को आगे किंचिदूनकी संदृष्टि कीएं औसा व १२। २ - सो इतने द्रव्यकी केती शलाका होइ? असे त्रैराशिक कीएं लब्धिराशि औसा व १२। २ - इहां किंचित हीन अधिक न गिणि

२४ औ। ३। १२

४

ख

होइ । तहां मानका स्तोक ताँतै क्रोध माया लोभका क्रम अधिक है तिनकी संहति रचना
 औसी—मान क्रोध माया लोभ बहुरि मध्यम खंड सहित लोभकी तृतीय संग्रहकी
 स ४ स ४ स ४ स ४
 जघन्य कृष्टिका द्रव्य ब्याह गुणहानि गुणित समय प्रवद्धकौ सर्व कृष्टिका भाग देइ साधिक कीएं
 औसी स १२ सो इतने द्रव्यकी एक कृष्टिरूप एक शलाका होइ तो पूर्वोक्त मानका द्रव्यकी
 स ४ स ४
 केती होइ ! औसैं त्रैराशिक कीए लब्धिराशि मानविषैं औसी स इहां समयप्रवद्धका अपवर्तन

कीएं अर भागहारका भाग औसा ४ ताकौं भाज्य कीएं अर भागहारविषैं न्यारि अर ड्योढ गुणहानि औसा (१२) इनिकौं परस्परगुणैं छह गुणहानि भई। तंहां गुणहानिकी संहष्टि आठ का अंक करि ताके आगैं छहका गुणकार कीएं संहष्टि हो है। बहुरि क्रोधादिक विषैं औसी ही अधिक क्रमरूप संहष्टि हो है। असैं बंधांतर कृष्टिनिका प्रमाणकी संहष्टि औसी-

मान क्रोध माया लोभ

"

बहुरिइनिबंधकृष्टिनिकेवीचिपाइएहैंजेअंतरकृष्टितिनकाप्रमाणगुणहानिकेबोथाभाग-
मात्रहै।तहांकोधविषैनोकषायद्रव्यसंबंधीकृष्टिमिलेनैतैतेरहकागुणकारजानना।तिन


की संहति ऐसी लो मा या क्रो एक एक कषायकी एक एक संग्रह बंधरूप होइ सो
इहां चारथो कषायनिकी पहली संग्रह बंधरूप हो हे । सो इहां नवीन बंधरूप भया समयप्रवद्ध
व्यारो कषायनिका औसा— स स स स । इनिकों अनंतका भाग देह एक भाग तौ जुदा
राखि अर बहुभागनिकरि नवीन बंधांतर कृष्टि निपजाइए है । तहां अंत कृष्टितैं लगाय
जेथवी अतका नवीन कृष्टि होइ तितने विशेष तौ आदि अर अपना अपना अंतरालरूप
कृष्टिनिका पूर्वोक्त प्रमाणमात्र विशेष उत्तर अर अपनी अपनी बंधांतर कृष्टिनिका पूर्वोक्त
प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि संकलनघन कीएं बंधांतर कृष्टि विशेष द्रव्य हो है । सो अन्य कृष्टि-
निविषैं तौ उभय द्रव्य विशेष द्रव्य देना जहां कहा था तहां बंध कृष्टिनिविषैं इस द्रव्यको
देना । सो इहां क्रोध मान माया लोभकी प्रथम संग्रहके बंधांतर विशेष विषैं आदि उत्तर
गच्छकी अर संकलन कीया घनकी ऐसी संहति हो हे—

नाम	क्रोध प्र०	मान प्र०	माया प्र०	लोभ प्र०
संकलित घन	वि । ४ । १३ । ४ ख । २४ । २ । ख । ८ । ६	वि । ४ । २१ । ४ ख । २४ । २ । ख । ८ । ६	वि । ४ । ४३ । ४ ख । २४ । २ । ख । ८ । ६	वि । ४ । ४३ । ४ ख । २४ । २ । ख । ८ । ६
गच्छ	ख । ८ । ६	ख । ८ । ६	ख । ८ । ६	ख । ८ । ६
उत्तर	वि । ८ । १३ ४	वि । ८ ४	वि । ८ ४	वि । ८ ४
आदि	वि । ४ । १३ ख । २४	वि । ४ । १५ ख । २४	वि । ४ । १८ ख । २४	वि । ४ । २१ ख । २४

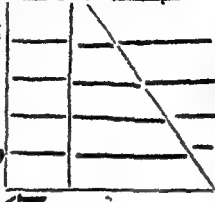
बहुरि बहुभागनिविषे इतना द्रव्य घटाए अवशेष द्रव्य जो रखा ताको अपना अपना
बधांतर कृष्टि प्रमाणका भाग दीए एकका कृष्टिका द्रव्य होइ । ताको तिसही प्रमाणकरि
गुणें बधांतर कृष्टि समान खंड द्रव्य होइ । याकरि लोभकी जघन्य कृष्टिके समान बंध
कृष्टि निपजै है । बहुरि एक भाग जुदा राख्या था तिसविषे दोय भाग करने । तहां तिस
एक भागको सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि प्रमाण गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन
दोगुणहानिका भाग दीए विशेष होइ सो एक विशेष आदि, एक विशेष उत्तर सर्व कृष्टि
प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि संकलन घन कीए बंध विशेष द्रव्य हो है । सो याको सर्व बंध कृष्टिनि-
विषे जहां उभय द्रव्य विशेषविषे घटता द्रव्य देना कहा तहां याको देह पूर्ण करना । बहुरि
तिस एक भागविषे याको घटाए जो अवशेष रखा ताको अपनी सर्वकृष्टि प्रमाण
का भाग दीए एक खंड होइ ताको तिसहीकरि गुणें सर्व मध्यम खंड द्रव्य होइ । असे बंध
द्रव्यविषे च्यारि प्रकार कहे । इनिकी संहितनिका मोको नीकें ज्ञान न भया तातें इहां नाही
लिखी है । बहुरि इनि द्रव्यनिके देनेका विधान पूर्वे व्याख्यानविषे कहि आए हैं । बहुरि
इहां अनंती जायगा पहलें बहुत पीछें घाटि पीछें वाधि वाधि द्रव्य दीए हैं तातें अनंत उद्ग-
कृत रचना हो है । बहुरि बारह संग्रहनिविषे नीचें नवीन भई कृष्टि अर पूर्व अर अपूर्व
वीचि वीचि संक्रमण द्रव्यकरि निपजो नवीन कृष्टि अर च्यारि संग्रहनिविषे बंध
रचना औसी जाननी । -

यु० सं० १४६ (क) में देखो ।

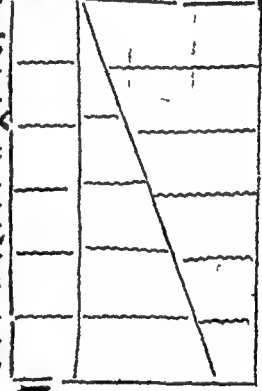
अत्रभागकी रचना युगवत् कालविषे संभवे है तातें आडी रचना करी है । तहां नीचें
विषयविषे नीचें नवीन कृष्टिनिकी रचना औसी तिनके उपरि

पूर्व कृष्टिनिकी रचना ऐसी  याविषै समपट्टिकाकी समान लीक अर विशेष घटा
क्रमकी क्रम हीन रूप लीक अर तिनविषै अधस्तन शीर्ष विशेषका द्रव्य दीया ताका क्रम
अधिक रूप लीककी संहति कीणुं ऐसी

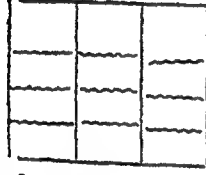
समपट्टिका भई। ऐसै ही लोभकी द्वितीयादिविषै संहति जाननी। तहां क्रोधकी तृतीय
संग्रहविषै नीचै नवीन कृष्टि नाही भई तातैं तिनकी रचना नाही करी है। पूर्व कृष्टिनिही
की रचना करी है। बहुरि इनि पूर्व कृष्टिनिके वीचि संक्रमण द्रव्यकरि नवीन कृष्टि भई
तिनकी सूधी ऊभी लीकरूप संहति अर बंध द्रव्यकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी बांकी
ऊभी लीकरूप संहति जाननी। तहां लोभादिक व्याचो कषायनिकी तृतीय द्वितीय
संग्रहविषै तौ संक्रमण द्रव्यहीकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी संहति ऐसी



अर लोभ माया मानकी प्रथम संग्रहविषै संक्रमण द्रव्यकरि अर बंध द्रव्यकरि नवीन कृष्टि
भई तिनकी संहति ऐसी।

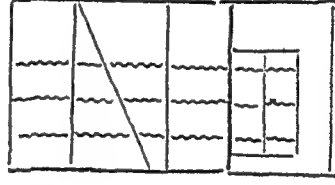


हीकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी संहति औसी



जाननी । बहुरि इन सर्व

पूर्व अपूर्व कृष्टिनिविषै मध्यम खंड द्रव्य दीया ताकी समानरूप लीककी संहति जाननी । बहुरि इन सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिविषै क्रम हीन रूप उभय द्रव्य विशेष द्रव्य दीया ताकी क्रम हीन रूप लीक संहति जाननी । बहुरि बंध होने योग्य पूर्व कृष्टिनिका उभय द्रव्य विशेष द्रव्यविषै वा बंध द्रव्यकरि निपजी नवीन कृष्टिका बंधांतर विशेष द्रव्यविषै घटता द्रव्य दीया तहां बंध विशेष द्रव्य दीया अर बंध द्रव्यका मध्यम खंड द्रव्य दीया ताकी उभय द्रव्य विशेष द्रव्यकी संहति औसी जाननी । औसैं इहां रचना जाननी



बहुरि क्रोधकी प्रथम संग्रहका द्रव्य औसा—व १२ १३ । सो द्वितीय संग्रह रूप भया । अर द्वितीय संग्रहका द्रव्य पूर्व औसा व १२ । १ था ही सो मिलि द्वितीय संग्रहका द्रव्य औसा

व । १२ । १४ । भया । औसै ही अन्य संग्रहविषे लोभकी द्वितीय संग्रह पर्यंत पूर्व पूर्व संग्रहका
द्रव्य अपने द्रव्यविषे मिलनेतें अपना अपना द्रव्य हो है । सो जानना ताकी संहति रचना
औसी-

नाम	क्रीय			मान			माया			लोभ		
	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ
संग्रह	व १२१३	व १२१४	व १२१५	व १२१६	व १२१७	व १२१८	व १२१९	व १२२०	व १२२१	व १२२२	व १२२३	व १२२४
द्रव्य	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४

तहां अपने अपने द्रव्यका अपकर्षणकरि प्रथम स्थिति विषे गुणकार क्रमकरि द्वितीय स्थि-
ति विषे विशेष हीन क्रमकरि देनेका विधान पूर्ववत् जानना । बहुरि आयुद्रव्य आदि यथा-
संभव जानि तिनकी संहति पूर्ववत् जाननी । बहुरि तहां संक्रमण द्रव्य बंध द्रव्यका विधान
यथासंभव जानि तिनकी संहति पूर्ववत् जाननी । विशेष होइ सो विशेष जानि लेना ।
बहुरि क्रोध मान माया लोभ वेदककै क्रमतें च्यारि तीन दोय एक कषानिका बंध है । तहां
जिस कषायकी जिस संग्रहकौ वेदे है तिस कषायकी तौ तिसही संग्रहका बंध है । अन्यक-
षायकी प्रथम संग्रहका बंध है । तिस बंधांतर कृष्टि शलाकाविषे क्रोध वेदकके कृष्टि प्रमाण
कौ छह गुणहानिका भागहार कह्या था । मान माया लोभ वेदककै क्रमतें साढा च्यारि
तीन ब्योढ गुणहानिका भागहार जानना । तिनकी संहति औसी-

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
क्रोधवेदक	४ ख। ८। ६	४ ख। ८। ६	४ ख। ८। ६	४ ख। ८। ६
मानवेदक	४ ख। ८। ९	४ ख। ८। ९	४ ख। ८। ९	
मायावेदक	४ ख। ८। ३	४ ख। ८। ३		
लोभवेदक	४ ख। ८। ३			

बहुरि बर्धातर कृष्टिनिके वीचि जे अन्तर कृष्टि तिनिका प्रमाण क्रोधका प्रथमसंग्रहका वेदकविषे अन्यकषायनिका चौथा भागमात्र क्रोधका ताते तेरह गुणा कहा था। बहुरि ताकरि द्वितीय तृतीय कृष्टि वेदकविषे अन्य कषायनिका पूर्ववत् अर क्रोधका चौदह पंद्रह गुणा जानना। बहुरि मानकी प्रथमादि संग्रह वेदकेके अन्यकषायनिका गुणहानिके तीन सोलहवां भागमात्र मानका ताते सोलह सतरह अठारह गुणा क्रमते जानना। बहुरि मायाकी प्रथमादि संग्रह वेदकेके लोभका गुणहानिका दोय सोलहवां भागमात्र, मायाका ताते उगणीस वीस इकईस गुणा क्रमते जानना लोभकी प्रथमादि संग्रह वेदकेके लोभका गुणहानिका सोलहवां भाग वाईस तेईस चौबीस गुणा जानना। तिनकी संहति औसी-

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
क्रोधवेदक	८ ४	८ ४	८ ४	८।१३।१४।१५
मानवेदक	८।३ १६	८।३ १६	८।३।१६ १६	१७।१८
मायावेदक	८।२ १६	८।१८ १६	२०।२१	
लोभवेदक	८।२२ १६	२३।२४		

बहुरि द्वितीय संग्रहका द्रव्य असा व । १२ । २३ याकों अपकर्षण भागहारका भाग देह पचो-
स भागमात्र संक्रमण द्रव्य असा व । १२ । ५७५ तिसविधै एक भागमात्र तृतीय संग्रहरूप
परिणया द्रव्य असा-व । १२ । २३ अर चौहिस भागमात्र सूक्ष्मकृष्टिरूप परिणया द्रव्य
असा व । १२ । ५५२ बहुरि तृतीय संग्रहका द्रव्यको अपकर्षण भागहारका भाग दीएँ एक
भाग सूक्ष्मकृष्टिरूप परिणया असा व । १२ । १ इनिकों मिलाएँ सर्व सूक्ष्म कृष्टिरूप परि-
णया द्रव्य असा व । १२ । ५५३ इतने द्रव्यकरि सर्व सूक्ष्मकृष्टि करण कालका प्रथम समय
विधै वादरकृष्टिनिके नीचै सूक्ष्मकृष्टि करिए है । तिनिका प्रमाण कहिए है-
कोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि औसी ४ । १३ बहुरि पूर्व पूर्व संग्रह उत्तर उत्तर संग्रहरूप
ख । २४

होइ परिनिर्भै है तातैं पूर्व प्रमाणकों विवाक्षित संग्रहकृष्टिका प्रमाणविषै मिलै अपना अपना वेदक कालविषै कृष्टिनिका प्रमाण औसा—

नाम	क्रोध			मान			माया			लोभ		
	प्र	दि	तृ	प्र	दि	तृ	प्र	दि	तृ	प्र	दि	सूक्ष्मकृष्टि
कृष्टिप्रमाण	४ १३ स्व २४	४ १४ स्व २४	४ १५ स्व २४	४ १६ स्व २४	४ १७ स्व २४	४ १८ स्व २४	४ १९ स्व २४	४ २० स्व २४	४ २१ स्व २४	४ २२ स्व २४	४ २३ स्व २४	४ २४ स्व २४

हो है । तहां सूक्ष्मकृष्टिनिका प्रमाण औसा ४ । २४ अपवर्तन कीं ऐंसा ४ हो है । बहुरि इहां लोभका द्वितीय संग्रहविषै आय द्रव्यका तीं अभाव है । तृतीय संग्रहरूप भया व्यय द्रव्य औसा हो है व । ४२ । २३ सोई तृतीय संग्रहका आय द्रव्य है । इसहीकानाम संक्रमण २४ । ओ

द्रव्य है । बहुरि लोभकी द्वितीय तृतीय संग्रहविषै अपनी अपनी कृष्टि प्रमाणकों अपकर्षण भागहारका असंख्यातवां भागका भाग दीं अपना अपना घात कृष्टिका प्रमाण हो है । ताकरि अपनी अपनी अंत कृष्टिका द्रव्यकों गुणि किछू साधिक कीं अपना अपना घात द्रव्य हो है । तहां घात द्रव्यकों यथा संभव दीं स्वस्थान परस्थान गोपुच्छरूप होइ कृष्टि हो है । तिनविषै संक्रमण द्रव्य वा घात द्रव्यका विभाग कहिए है—

एक विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर एक घाटि घात कीं पीछे रहीं अपनी कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापे संकलन धनमात्र द्रव्य तृतीय संग्रहविषै आय द्रव्यतै ग्रहि स्थापना । अर तृतीय संग्रह कृष्टिमात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर घात कीं

पीछें रही अपनी कृष्टिमात्र गच्छ स्थाने संकलन घनमात्र द्वितीय संग्रहविषे घात द्रव्यतै ग्रहि
स्थापने । इसका नाम वादर कृष्टि संबंधी अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य है । इहां 'पदमेगेण वि-
हीणं' इत्यादि सूत्रकरि संकलन घन कहिए है-

तृतीय संग्रहविषे गच्छ औसा ४ ^{क। २५} इहां घात कृष्टिनिका वा एक घाटिका किंचिदूनपनाकौ

नाही गिण्या है । यामें एक घटाह दोयका भाग दीएं ताकरि औसा ४ ^{क। २४। २} याकरि उत्तर

जो विशेष ताकौ गुणें औसा वि ४ यामें आदि एक विशेष मिलावनेकौ एक घाटि या तहां

एक अधिककरि ताकौ गच्छ औसा ४ ^{क। २४} करि गुणि तहां गुण्य गुणकारनिकौ आगें

पीछें लिखें संकलन घन औसा वि । ४ । ४ ^{१-} हो है । बहुरि द्वितीय संग्रहविषे गच्छ औसा-

४ । २३ यामें एक घटाह दोयका भाग देह ताकरि उत्तर जो विशेष ताकौ गुणें औसा-

वि । ४ । २३ यामें आदि औसा वि ४ मिलावना सो याकौ दोयकरि समच्छेद कीएं औसा-

वि । ४ । २ अर याकें वाकें अन्य समान देखि तेईसका गुणकारविषे दोयका गुणकार मि-

लाएं औसा वि । ४ । २५ याकौ गच्छ औसा ४ । २३ करि गुणें औसा वि । ४ । २५ । ४२३

इहां पचीस अर तेईसकौ परस्पर गुणें पांचसै पिचहत्तरिका गुणकार कीएं अर गुण्य गुण-

कार आगे पीछे लिखें संकलन घन ऐसा। वि। ४। ४। ५७५ हो हे। इहां एक अधिक
हीनकों न गिणि संहति करी है ऐसा जानना। बहुरि तृतीय संग्रहकी जयन्य कृष्टि
ऐसी व १२ याकों असंख्यात गुणां अपकर्षण भागहार ऐसा (ओ ४) ताका भाग देइ ताकों

तृतीय संग्रहविषे कृष्टि प्रमाण ऐसा ४ अर द्वितीय संग्रहविषे कृष्टि प्रमाण ऐसा ४। २३

सो इनकरि गुणें अपना अपना वादर कृष्टि संबंधी मध्यम खंड द्रव्य हो हे। बहुरि एक
विशेष आदि एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी पूर्व कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ स्यापि तहां जेना
संकलन घन भया ताविषे एक विशेषका अनंतवां भाग घटाए जो होइ सो द्वितीय संग्रह
का घात द्रव्यतै ग्रहि स्थापना। इहा एक विशेषका अनंतवां भाग घटाया है। तहां वंघ
द्रव्य देइ पूर्ण करिए है ऐसा जानना। बहुरि एक अधिक द्वितीय संग्रहकी कृष्टिनिका
प्रमाणमात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर संकमण द्रव्यकरि निपजी कृष्टि सहित
अपनी पुरातन कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ स्यापि तहां संकलन घनमात्र तृतीय संग्रहका आय
द्रव्यतै ग्रहि स्थापना इसका नाम उभय द्रव्य विशेष द्रव्य है। इहां 'पदमेगेण विहीण'
इत्यादि सूत्रकरि द्वितीय संग्रहविषे गच्छ ऐसा ४। २३ तामें एक घटाइ ताकों दोयका भाग

देइ ताकरि उत्तर जो विशेष ताकों गुणें ऐसा वि। ४। २३ बहुरि आदि एक विशेष मिलावेनक

एक हीनकी जायगा एक अधिककरि ताको गच्छकरि गुणें असा वि ४२११ बहुरि इहां ते
ईसकरि तेइसको गुणि पांचसे गुणतीसका गुणकार कीएं अर गुण्य गुणकारनिकों आगे पीछे
लिखैं संकलन घन असा वि ४। ४। ५२१ हो हे । बहुरि तृतीय संग्रहविषैं गच्छ असा-
क। २४। २

४ यामैं एक घटाइ दोयका भाग देह ताकरि उत्तर जो विशेष ताको गुणें असा वि ४। ४
क। २४। २

यामैं आदि असा वि ४। २३ मिलावना सो याको दोयकरि समच्छेद कीएं यह असा-
क। २४। २

वि ४। ४६ अर याकै वाकैं अन्य समान देखि याका छयालीसका गुणकारविषैं
क। २३। २

वाका एक गुणकार मिलाएं असा वि ४। ४७ बहुरि याको गच्छ असा ४ करि गुणें गुण्य
क। २४। २

गुणकारनिकों आगे पीछे लिखैं संकलन घन असा वि ४। ४। ४७ इहां घात कृष्टि-
क। २४। २

निका हीनपना वा संक्रमण कृष्टिनिका अधिकपना वा एकका अधिक हीनपनाको न गिणि
संहति करी है । असा जानना । बहुरि इस तीन प्रकार द्रव्यकरि हीन तृतीय संग्रहका
आय द्रव्य असा व १२। २३ तहां किंचिदूनको न गिणि ताका मध्यम खंड सहित तृतीय
क। २४। २

संग्रहकी जघन्य कृष्टि असी व १२ ताका भाग देह अपकर्षण कीएं वा भागहारका भागहारको
क। २४। २

राशि कीएं संक्रमण द्रव्यकरि वीचिवीचिमें भई नई कृष्टिनिका प्रमाण औसा ४। २३ बहुरि
इसका भाग अपनी सर्व कृष्टिनिका प्रमाणकौ दीएं संक्रमणांतर कृष्टिनिके वीचि जे कृष्टि
पाइए तिनिका प्रमाण औसा ४ इहां अपवर्तन कीएं वा भागहारका भागहारकौ
ख। २४। ४। २३ ख। २४। ओ

राशि कीएं औसा ओ बहुरि पूर्वोक्त संक्रमणांतर कृष्टिनिका प्रमाण औसा ४। २३ ताका
भाग अवशेष आय द्रव्यकौ दीएं एक खंड होइ ताकौ तिसहीकरि गुणें अपने अवशेष
आय द्रव्यमात्र संक्रमणांतर कृष्टि समान खंड द्रव्य हो है। द्वितीय संग्रहविषे आय द्रव्यके
अभावतैं औसा द्रव्य नाही है। तहां शून्य जाननी। इनकी संहति औसी-

नाम	लोभकी तृतीय संग्रह	लोभकी द्वितीय संग्रह
अद्यस्तन शीर्ष पूर्वविशेष द्रव्य	१— वि। ४। ४ ख। २४। ख। २४। २ व। १२४ ४। ओ। ४। ख। २४ ख	१— वि। ४। ४। ५७५ ख। २४। ख। २४। २ व। १२। ४। २३ ४। ओ। ४। ख। २४ ख
मध्यम खंड	१— वि। ४। ४। ४७ ख। २४। ख। २४। २	१— वि। ४। ४। ५२६ ख। २४। ख। २४। २
उभय द्रव्य विशेष द्रव्य	१— वि। ४। ४। ४७ ख। २४। ख। २४। २	१— वि। ४। ४। ५२६ ख। २४। ख। २४। २
संक्रमणांतरकृष्टि	व १२। २३ २४। ओ।	०
संबंधीसमानद्रव्य		

बहुरि बंध द्रव्यविषै विभाग कहिए है—

अंतकी बंधांतर कृष्टि सहित याके ऊपरि पूर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष आदि
ऐसा— वि । ४ । २३ । १ अर एक अधिक गुणहानिका सोलहों भागकरि हीन छोट गुण-
ख । २४ । ५ । १६

हानिमात्र विशेष ऐसे— वि । ८ । २३ । सो उत्तर अर पूर्व सर्व कृष्टि प्रमाणकों द्वयर्ध गुणहानि
का भाग दीएं सर्व नवीन भई बंधांतर कृष्टिमात्र गच्छ ऐसा ४ । ८ । ३ इहां गुणहानिकी
संदृष्टि आठका अंक है । जैसें स्थापि तहां संकलन घनमात्र बंधांतर कृष्टि विशेष नामा
द्रव्य हो है । सो इसकी संदृष्टिके विधानका मोकों ज्ञान न भया तातें नाही लिख्या है ।
बहुरि समय प्रबद्धका अनंतवां भाग जुदा जुदा स्थापै अवशेष किंचिदून समय प्रबद्ध ऐसा
(स —) ताकों द्वयर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्धमात्र द्रव्यकों कृष्टि प्रमाणका भाग दीएं
एक बंधांतर कृष्टिका द्रव्य ऐसा स १२ ताका भाग दीएं बंधांतर कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा
स १२
४ ख

स — इहां किंचिदून न गिणि समय प्रबद्धका अपवर्तन कीएं अर ऐसा ४ जो भागहारका
स १२
४ ख

भागहार या ताकों राशि कीएं ऐसी नवीन निपजी कृष्टिनिका प्रमाण ४ भया बहुरि
खा । १२

याका भाग सर्व कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ । २३ ताकों दीएं ऐसा ४ । २३ इहां ऐसे का
ख । २४ । ४
ख । २९

अपवर्तन कीएं ४ अर भागहारका भागहार औसा (१२) कौं राशि कीएं तहां ब्योढकारि
अपवर्तन कीएं ब्योढ गुणहानि औसा (१२) ब्योढ गुणहानिमात्र भाज्य या ताका तौ एक
गुणहानिमात्र औसा (८) भाज्य भया । अर चौईसका भागहार था सो सोलहका भागहार
भया तव औसा ८ । २३ नवीन निपजी बंध कृष्टिनिके वीचि जे कृष्टि तिनका प्रमाण हो हे

बहुरि पूर्वोक्त बंधांतर कृष्टिनिका प्रमाण औसा ४ ताका भाग किंचिदून समय प्रबद्ध

औसा (स -) ताकौं दीएं एक खंड होइ । ताकौं तिसही करि गुणें बंधांतर कृष्टि संबंधी समा-
न खंड हो हे । बहुरि जो समय प्रबद्धका अनंतवां भाग जुदा राख्या था ताकौं सर्व पूर्व अ-
पूर्व बंध कृष्टि प्रमाण गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग
दीएं विशेष होइ सो सर्व बंध कृष्टि प्रमाण गच्छका संकलन धनमात्र विशेष तिस जुदा रा-
ख्या भागविषैं ग्रहणकरि स्थापना । सो इहां एक विशेष औसा (वि) आदि एक विशेष उत्तर
अर सर्व कृष्टिनिका प्रमाणविषैं अनुभय उदय कृष्टिका प्रमाण घटाएं बंध कृष्टि हो हे । सो

तिस प्रमाणकौं किंचित् जानि न गिन्या । तव बंध कृष्टिमात्र गच्छ औसा ४ । २३ । इहां गच्छ
मैं एक घटाइ ताकौं दोयका भाग देइ उचर जो विशेष ताकरि गुणें औसा वि । ४ । २३

यार्में एक विशेष आदि मिलावनेकौं एक हीनकी जायगा एक अधिक भया ताकौं न गिनि

बहुरि गच्छकरि गुणें औसा वि । ४ । ११ । ४ । २१ हर्हा तेईस तेईसकौ परस्पर गुणि पांचसे
 न । २४ । २ । ख । २४ ।
 गुणतीस कीएं अर गुण्य गुणकार आगे पीछें औसा भया वि । ४ । ४ । ५२९ याका
 ख । २४ । ख । २४ । २
 नाम बंध विशेष है । बहुरि जुदा स्थाप्याविषैं याकौ घटाएं अवशेष समय प्रवद्धका अनंतवां
 भाग औसा स ताकौ सर्व बंध कृष्टि प्रमाणका भाग दीएं एक खंड होइ ताकौ तिसहीकरि
 ख
 गुणें बंध मध्यम खंड द्रव्य होइ । औसैं बंध द्रव्यका विधान कहा ताकी संहति औसी—

नाम	लोभाद्वितीयग्रह
बंधांतर कृष्टि	वि । ४ । २३ । ४
विशेषद्रव्य	ख । २४ । २ । ख । ८ । ३
बधांतरसंबंधी	स — ४
समान खंड	ख । २४ । ख । १२
बंधविशेष	वि । ४ । ४ । ५२९
खंड	ख । २४ । ख । २४ । २
बंधमध्यम	स । ४ । २३
खंड	ख । ४ । २३ । ख । २४
	ख । २४

इहां द्वितीय संग्रह हीका बंध है । तातैं तिसहीविषैं औसा विधान जानना । बहुरि सं-
 क्रमण द्रव्यकरि निपजी सूक्ष्म कृष्टिनिका द्रव्यविषैं विभाग कहिए है—
 सूक्ष्मकृष्टि संबंधी द्रव्य पूर्वोक्त औसा व । १२ । ५५३ ताकौ प्रथम समयविषैं कीनी
 २४ । ओ

सूक्ष्मकृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ औसा ४ ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून
ख
दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष औसा व । १२ । ५५३ १८ गच्छ अर संपूर्ण गच्छकौ
२४ । ओ । ४ । १६ - ४

ख ख २

दोय अर एकका भाग दीएं एक वार संकलन धन होह तिहिकरि तिस विशेषकौ गुणै सू-
क्ष्मकृष्टि संबंधी विशेष द्रव्य हो है । बहुरि याकरि हीन सूक्ष्मकृष्टिका द्रव्यकौ सूक्ष्मकृष्टि
प्रमाण औसा ४ का भाग दीएं एक खंड ताकौ तिसही करि गुणै सूक्ष्मकृष्टि संबंधी समान

ख

द्रव्य हो है । तिनकी संहष्टि औसी-

नाम	सूक्ष्मकृष्टि
विशेष द्रव्य	१८ व । १२ । ५५३ । ४ । ४ २४ । ओ । ४ । १६ - ४ । ख । ख । २
समान खंड द्रव्य	१८ व । १२ । ५५३ । ४ २४ । ओ । ४ । १६ - ४ । ख । ख । २

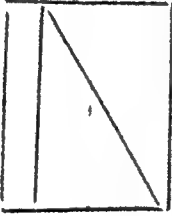
बहुरि सूक्ष्मकृष्टि संबंधी विशेष औसा व । १२ । ५५३ १८ याकौ दोगुणहानिकरि गुणै
२४ । ओ । ४ । १६ - ४
ख ख

111 222

इहां अनुयायी रचना है। तातें आढी सहनानी करी है। तहां नीचें सूक्ष्मकृष्टि लिखी है। ताकी समयट्टिका अर विशेष घटा कमकी संहष्टिकरि नीचें आदि अंत कृष्टि निके द्रव्यका प्रमाण लिख्या है। बहुरि ताके उपरि लोभकी तृतीय कृष्टि अर ताके उपरि द्वितीय कृष्टि लिखी है। तहां समयट्टिका पूर्व विशेष अघस्तन कृष्टि उभय द्रव्य विशेष की संहष्टि पूर्वोक्त प्रकार करी है। बहुरि सिन कृष्टिनिके वीचि जे नवीन कृष्टि भई तिन

३६

की संहति वीचिमें लोककरी है । तहां संक्रमण द्रव्यकरि निपजीकी तौ सूची लोक अर
बंध द्रव्यकरि निपजी कृष्टिनिकी वक्र कहिए वाकी लोक करी है । बहुरि द्वितीय कृष्टिकी
जिनि पुरातन नूतन बंध कृष्टिनिविषैं बंधांतर कृष्टि विशेष बंध मध्यम खंडरूप बंध द्रव्य
दीजिये है । तहां उभय द्रव्य विशेषविषे इतना द्रव्य घटना दीया है ताकी संहति उभय द्रव्य
की रचनाविषैं औसी



मयविषैं प्रथम समयविषैं जेती कृष्टि कौनी तिनके असंख्यातवै भागमात्र नवीन कृष्टिकरि
ए है तिनकी संहति ४ तिनविषैं पूर्व कृष्टिनिके नीचैं जे कृष्टि करिए है तिनके असं-

ख्यातवै भागमात्र औसी ४ अर पूर्व कृष्टिनिके वीचि करिए है ते बहुभागमात्र औसी ४ । ३

इहां गुणकारका एक हीनपनांकों न गिणि अपवर्तन कीएं औसी ४ हो है । बहुरि इस

समयविषैं द्रव्य असंख्यात गुणा अपकर्षण करिए है । ताकी संहति औसी व । १२ । ५५३

२४ को

इहां असंख्यातका गुणकारकों अपकर्षण भागहारका भाग कीया है । बहुरि याविषैं एक
पूर्व विशेष आदि एक विशेष उत्तर एक घाटि प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ

१८
ऐसा ४ करि तहां संकलन सूत्रके अनुसारि गच्छ अर एक अधिक गच्छकौ दोयका भाग दीएं संकलन घन हो है । सो इतने विशेषमात्र द्रव्य ग्रहि जुदा स्थापना । याका नाम अध-
स्तन शीर्ष विशेष है । बहुरि प्रथमसमय संबंधी सूक्ष्म कृष्टि द्रव्यकौ प्रथम समयविषै कीनी
कृष्टि प्रमाणका भाग दीएं अर विशेष अधिक है । तिनिकौ न गिणै तिनकी जघन्य कृष्टि
का द्रव्य ऐसा व । १२ ताकौ द्वितीय समयविषै पूर्व कृष्टिनिके नीचै करी कृष्टिनिका प्र-
२४। अ०। ४

माण ऐसा ४ ताकरि गुणै नीचै निपजाई अपूर्व कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य हो है ।
बहुरि ताहीकौ वीचिकरी कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ ताकरि गुणै वीचि निपजाई अपूर्व
ख । ३। ३

कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य हो है बहुरि प्रथम द्वितीय समय संबंधी सूक्ष्म कृष्टिका
द्रव्यकौ मिलाय ताकौ प्रथम द्वितीय समय संबंधी सर्व सूक्ष्म कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छका
अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं एक उभय विशेष होइ
ताकी संहति ऐसी [वि] ताकौ प्रथम समय संबंधी कृष्टि प्रमाणविषै द्वितीय समय संबंधी
कृष्टि प्रमाण मिलावनेकौ अधिककी संहति कीएं गच्छ ऐसा ४ ताकरि अर एक अधिक-

करि गुणि दोयका भाग दीएं संकलन घनमात्र उभय विशेष द्रव्य हो है । बहुरि इस च्यारि प्रका-
रका द्रव्य घटावनेकौ सर्व द्रव्यके आगे किंचिदूनकी संहति करि ताकौ सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि प्र-

माण औसा ४ ताका भाग दीएं एक खंड होइ । याको तिसही गच्छकरि गुणें सर्व मध्यम खंड
द्रव्य हो है । असें द्वितीय समयविषे सुक्ष्म कृष्टि संबंधी द्रव्यविषे पांच प्रकार द्रव्य कहे तिन
की संदृष्टि औसी-

नाम	अवस्था न दीव	अवस्था न कृष्टि	समान खंड	परम अपूर्व कृष्टि समान	वर्ण द्रव्य विशेष	परम खंड
द्रव्य	१ ५ ४ ४ ४	१ ५ ४ ४ ४	१ ५ ४ ४ ४	१ ५ ४ ४ ४	१ ५ ४ ४ ४	१ ५ ४ ४ ४

बहुरि बादर कृष्टि संबंधी व्यापार प्रकार संक्रमण द्रव्य अर द्वितीय कृष्टिविषे व्यापार
प्रकार बंध द्रव्य अर तीन प्रकार घात द्रव्य देनेका पूर्ववत् विधान जानना । इहां तिनकी
रचना औसी-

[illegible]

इहां पहलैं द्वितीय समयविषें नवीन करी नीचली कृष्टिनिकी रचना करी । ताके ऊपरि प्रथम समयविषें कीनी कृष्टिनिकी रचना करी । तहां समपाट्टिका पूर्व विशेष अधस्तन कृष्टिकी रचना करी । अर वीचि वीचि नवीन भई कृष्टिनिकी ऊभी लीककी सहनानी करी बहुरि तिन दोऊ रचनानिके मध्यम खंड अर उभय द्रव्य विशेषकी समरूप कम हीन

रूप सहनानी करी । बहुरि ताके उपरि तृतीय द्वितीय संग्रहकी रचना करी ताका विधान प्रथम समयवत् जानना । जैसे ही आडी रचनाइहां करी है । बहुरि जैसे ही सूक्ष्म कृष्टिकारक का तृतीयादि अनिवृत्तिकरणका अंतसमय पर्यंत विधानकी रचना यथासंभव जाननी । बहुरि ताके अनंतरि सूक्ष्म सांपराय हो है । तहां प्रथम समयविषै सर्व मोहनीयका सत्त्वद्रव्य असा स । ३ । १२ इहां उत्कृष्ट समय प्रचद्वकौ द्वयर्थ गुणहानिकरि गुणै सर्व सत्त्व द्रव्य होह ७

ताकौ सातका भांग दीएं मोहका सत्त्व द्रव्य जानना । याकौ अपकर्षण भागहारका भाग दीएं अपकृष्ट द्रव्य असा स ३ । १२ याकौ पत्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भाग असा स । ३ । १२ ताकौ सूक्ष्म सांपरायका कालतै किछू अधिक जो अवस्थित गुण- ७ । ओ प ३

श्रेणि आयाम ताविषै गुणकार क्रमकरि देना । तहां अंक संहति अपेक्षा पित्यासीका भाग ताकौ देह एककरि गुणै प्रथम निषेकविषै चौसठिकरि गुणै अंत निषेकविषै दीया द्रव्य हो है । बहुरि बहुभाग जैसे स ३ । १२-प इहां गुणकारविषै एक हीनकौ न गिणि पत्यके असंख्या- ७ । ओ । प ३ ३

तवै भागका अपवर्तन कीएं असा स ३ । १२ बहुरि अंतरायामका प्रमाण संख्यात गुणा ७ । ओ अंतमुद्धृतमात्र असा २ १ । ४ यातै संख्यात गुणा स्थिति कांडकायाम असा २ १ । ४ । ४

यातैं संख्यात गुणी कांडकके नीचें अवशेष रही स्थिति सो ऐसी २७।४।४।४।४ इहां गुणकारनिकों परस्पर गुणें कांडकायाम औसा २७।१६ अर अवशेष स्थिति ऐसी- २७।६४ इनिकों मिलाएं द्वितीय स्थितिका प्रमाण औसा २७।८० याकों अंतरायाम का भाग दीएं बीस पाए ताका भाग तिस बहुभागकों देह न्यारितौ अंतरायामविषे दीएं तिनकी संहति ऐसी स।३।१२।४ अर सोलह भाग प्रमाण द्रव्य द्वितीय स्थितिविषे ७।३०

दीया ताकी संहति ऐसी स ३।१२।१६ इहां यथा योग्य संख्यातकी सहनानी न्यारिका ७।ओ।२०

अंककरि ऐसी संहति करी है। बहुरि अपना अपना द्रव्यकों अपना अपना आयाममात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष होइ। ताकों दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम निषेकविषे अर तिस गुणकारविषे क्रमतैं एक एक घटाइ एक घाटि अपने गच्छमात्र घटैं अंत निषेकविषे दीया द्रव्य हो है। इहां अंतरायामका गच्छ औसा २७।४ अर द्वितीय स्थितिका गच्छ औसा २७।८० जानना। तहां द्वितीय स्थितिविषे अंतकी अतिस्थापनावलीविषे द्रव्य दीजिए है। तातैं तिस गच्छविषे इतना घाटि है। तथापि ताकों किंचित् जानि संहतिविषे नाही गिन्या है। इनकी संहति ऐसी-

सूच्यसांपराय प्रथम कांडक प्रथम समय रचना

अतिस्थापना	
बली	स ३ १२ १६ १६-२ १८ ८० १-८
द्वितीयस्थिति	७ ओ २० २ १६ १६-२ १८ ८०
अंतरायाम	स ३ १२ १६ १६ १-८
	७ ओ २० २ १६ १६-२ १८ ८०
	स ३ १२ १६ १६ १-८
	७ ओ २० २ १६ १६-२ १८ ८०
गुणश्रेणि आयाम	स ३ १२ १६ १६ १-८
	७ ओ २० २ १६ १६-२ १८ ८०
	स ३ १२ १६ १६ १-८
	७ ओ २० २ १६ १६-२ १८ ८०

इहां नीचे गुणश्रेणि आयामकी क्रम अधिक रूप उपरि अंतरायामकी ताके उपरि द्वितीय स्थितिकी क्रम हीन रूप संघटि करि तहां आदि अंत निषेकविष दीया द्रव्य आगे

लिख्या है। मध्य निषेकानि की विंती सहनानी करी है। इनके उपरि अतिस्थापनावलीकी सहनानी च्यारिका अंक कीया है। अर इहां अंतरायामविषे पूर्वे द्रव्यका अभाव था नवीन ही द्रव्य दीया तातें दो बड़ी लीक करी। द्वितीय स्थितिविषे पूर्वे द्रव्य था नवीन ही दीया तातें दो बड़ी लीक करी। बहुरि द्वितीयादि समयविषे भी ऐसा क्रम जानना।

बहुरि प्रथम स्थितिकांडककी अंत फालिका पतनसमयविषे विधान कहिए है—द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेकविषे एक घाटि द्वितीय स्थितिमात्र विशेष घटाएं चरम फालिका अंत निषेक ऐसा स। ३। १२ इहां सत्व द्रव्यको द्वितीय स्थितिका भाग दीएं मध्य निषेक हो

७। २७। ४। २०

है। ताविषे जो विशेष हीन है तिनको द्रव्यका प्रमाण किंचित जानि नाही गिन्या है बहुरि ताको अंतरायाममात्र जो चरम फालिके निषेकनिका प्रमाण ताकरि गुणें चरम फालिका सर्व द्रव्य ऐसा स। ३। १२। २७। ४। ४ इहां विशेष अधिक है तिनिका द्रव्यको किंचित जानि नाही गिन्या है। इहां असे २७। ४ का अपवर्तन कीएं ऐसा स। ३। १२। ४

७। २७। ४। २०

याविषे गुणश्रेणिके अर्थ अपकर्षण कीया द्रव्य भिलावना ताको किंचित जानि संदृष्टिविषे नाही गिन्या है। बहुरि याको पत्यका असंख्यातवां भागका भाग देह एक भाग ऐसा स। ३। १२। ४ गुणश्रेणि आयामविषे पूर्वोक्त प्रकार क्रमरूप देना। बहुरि बहुभाग ऐसा

७। २०। ४

३

२५

१-८

स। ३। १२। ४। ५
७। २०। ५ ३

अपवर्तन कीएं औसा स। ३। १२। ४ याविषे अंतरायामविषे दीया द्रव्य औसा स। ३। १२। ३०

७। २०।

अर द्वितीय स्थिति विषे दीया द्रव्य औसा स। ३। १२। ३। १३ इनि दीए दोऊ द्रव्यनि विषे

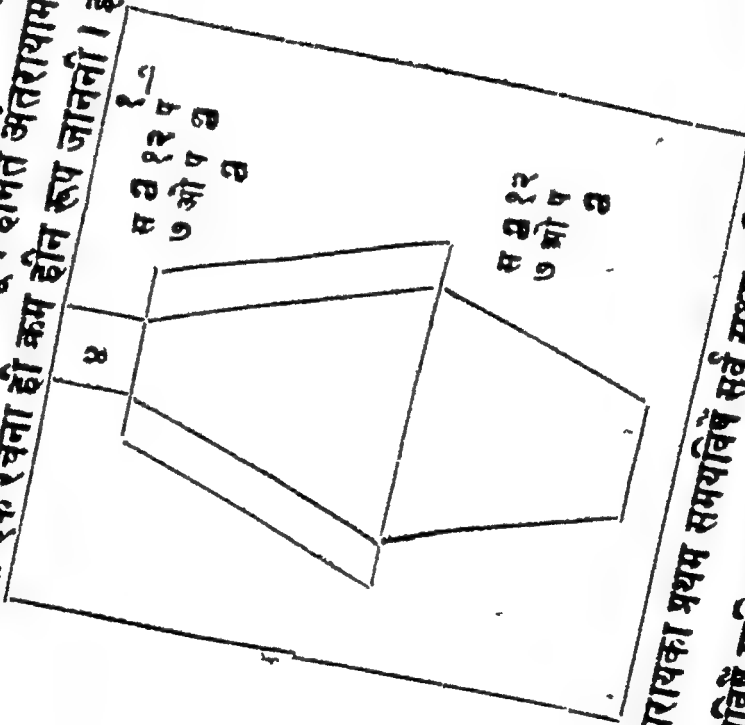
७। २०। १७

औसा गुणकार भागहार कैसे भया ताका मोकों नीकें ज्ञान नाहीं भया तातें विधान नाहीं
लिख्या है। बहुरि अंतरायामका गच्छ औसा २ ७। ४ अर कांडक घात इहां संपूर्ण भया
तातें कांडकायाम सहित अवशेष द्वितीय स्थितिका गच्छ औसा २ ७। ४ १ ४ सो अपने
अपने गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष
होइ ताकों दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम निषेक इस गुणकारविषे एक घाटि गच्छ घटाएं
अंत निषेक हो है। इनकी रचना औसी—

सूक्तसंख्याविषये प्रथमकांडक अन्वयफालि पठनसमय रचना ।	
४	स ३ १२ । ३ । १६ । १६-२७ ६४
प्रतिस्थापनावली	७ २० १७ २७ ६४ १६-२७ ६४
द्वितीयस्थितिः	स ३ १२ ३ १६ १६ १-२७ ६४ ७ २० २७ ६४ १६-२७ ६४
अंतरायाम	स ३ १२ २० १६-२७ ६४ ७ २० २७ ६४ १६-२७ ६४ स ३ १२ २० १६ १-२७ ६४ ७ २० २७ ६४ १६-२७ ६४
गुणश्रेणि	स ३ १२ ४ ६४ ७ २० ० ८५ स ३ १२ ४ ७ २० ८५

इहां रचना पूर्वोक्त प्रकार जाननी । अंतरायामविषे पूर्व भी द्रव्य था तातैं इहां दो नवी लीक करी हैं । बहुरि द्वितीय कांडकका प्रथम फालि पठन समयविषे सर्व द्रव्यकौ अप-

कर्षण भागहारका भाग दीएं ऐसा स १३। १२ द्रव्य ग्रहि ताकों पत्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग गुणश्रोत्रे आयामविषे बहुभाग उपरितन स्थितिविषे अतिस्था- पनावली छोड दीजिए है। इहां अंतरायाम पूर्ण होनेतें अंतरायाम अर द्वितीय स्थितिका एक गोपुच्छ भया। तातें एक रचना ही कम हीन रूप जाननी। इनिकी संहति ऐसी-



बहुरि सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषे सर्व सूक्ष्म कृद्विनिका प्रथम समयविषे कानी सूक्ष्म कृद्विनिका प्रमाणविषे साधिक कीएं ऐसा ४ ताकों पत्यका असंख्यातवां भागका

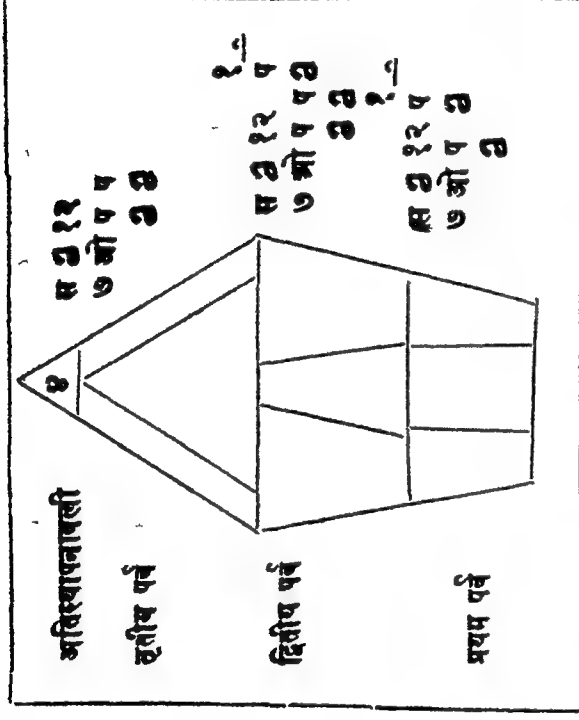
—
॥

<div style="text-align: center;"> <p>० ० ० ० ०</p> </div>	तृतीय	२ ३ ३	४ ३	३ ३
	द्वितीय	२ ३	४ ३	३ ३
	प्रथम	१ २ ३	४ ५ ६	७ ८ ९

इहाँ क्रम हीन रूप प्रथमादि समयविविधें उदय आवने योग्य प्रथमादि निष्क सिनकी

ऊर्ध्व रचनाकरि तहां प्रथमादि निषेकनिविधे नीचली अनुदय मध्यकी ऊपरली अनुदय कृष्टिनिकी आडी रचना करी है। अर तिनिका प्रमाण लिख्या है। तहां द्वितीयादि निषेक-
निविधे नीचली ऊपरली कृष्टिनिविधे दोय तीन भाग ये तिनकी संहृष्टि दोय तीनका अंक-
निका प्रमाण लिख्या है। वीचिमें सर्व कृष्टिनिकों दोय तीन आदि करि किंचिदुकी सहना-
नीकरि उदय कृष्टिनिका प्रमाण लिख्या है असा जानना। बहुरि सूक्ष्म सांपरायका अंत-
कांडका द्रव्य असा-स ३। १२ इहां किंचित् ऊन है ताको न गिण्या है। याको अपकर्षण
भागहारका भाग दीएं असा-स ३। १२ प्रथम फालिका द्रव्य हो है। याको पत्यका असं-

ख्यातवां भागका भाग देह बहुभाग सूक्ष्मसांपरायका अंतसमयपर्यंत गुणकार क्रमकरि दी-
जिए है। इहां यह गुणश्रेणि शीर्ष है। बहुरि अवशेष एक भागको पत्यका असंख्यातवां
भागका भाग देह बहुभाग पुरातन गुण श्रेणिका अंतपर्यंत विशेष घटता क्रमकरि दीजिए
है बहुरि अवशेष एक भाग ताके उपरि स्थितिनिविधे अतिस्थापनावली छोडे विशेष घटता
क्रमकरि दीजिए है। असें तीन पर्वनिविधे द्रव्य दीजिए है ताकी रचना ऐसी-



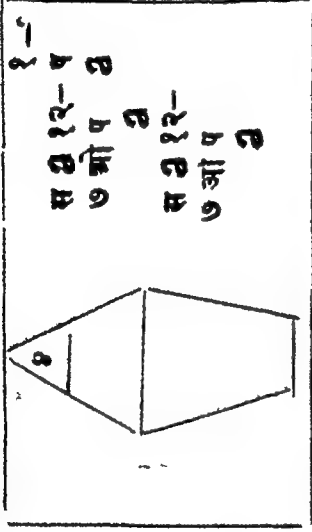
इहाँ नीचें अधिक क्रमरूप पुरातन गुणश्रेणिकी रचनाकरि ताविषें दीया द्रव्यकी दूसरी लीक नीचें प्रथम पर्वकी अधिक क्रमरूप ताके उपरि द्वितीय पर्वकी क्रमहीनरूप सह-ष्टि करी है। बहुरि ताके उपरि तृतीय पर्वका पुरातन नवीन द्रव्यकी दोऊ लीक क्रमहीन रूप करी हैं। इनके आगे दीया द्रव्यका प्रमाण लिहया है। उपरि अतिस्थापनावली लिखी है असा जानना। बहुरि अँमें ही द्वितीयादि फालिविषें विधान जानना। बहुरि अंतफालि का द्रव्य किंचिदून द्वयर्धगुणहानि गुणित समय प्रवद्ध प्रमाण असा स। ३। १२ ताकौ पत्यका असंख्यात वर्गमूलमात्र असंख्यातका भाग देह एक भागमात्र ताकौ सुक्ष्मसंपरायका द्वि-

चरम समय पर्यंत प्रथम पूर्वविषे असंख्यातगुणा क्रमकरि देना । तहां ताकों अंक संहष्टि करि पिव्यासीका भाग देह एक च्यारि सोलह चौसठिकरि गुणें प्रथमादिनिषेक हो हैं । बहुरि बहुभाग सूक्ष्मसांपरायका अंत समय संबंधी निषेकविषे दीजिए है । यह दूसरा पूर्व है इनकी संहष्टि रचना ऐसी—

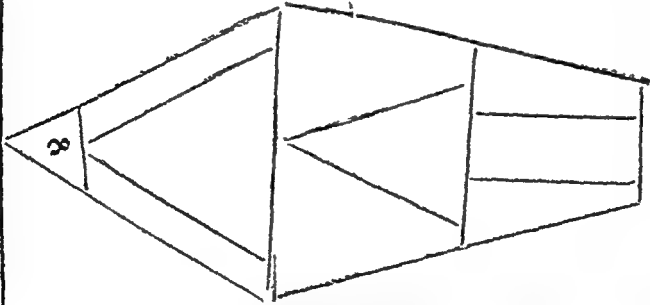
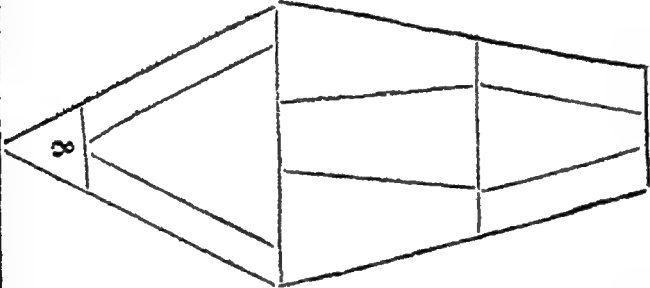
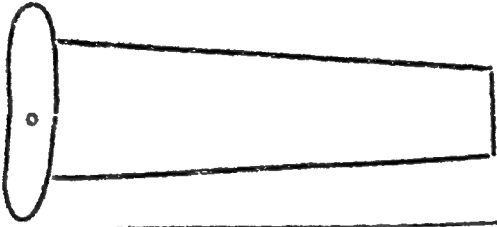
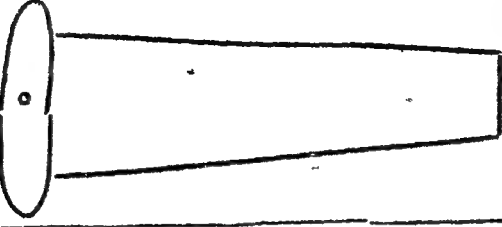
द्वितीयपूर्व	स ३ १२— ७ मू ३	१—
प्रथमपूर्व	स ३ १२— ७ मू ८५	६४
	स ३ १२— ७ मू ८५	१६
	स ३ १२— ७ मू ८५	४
	स ३ १२— ७ मू ८५	१

इहां नीचे प्रथम पूर्वकी अधिक क्रम रूप संहष्टि करी है । ताके आगे प्रथमादि निषेकका द्रव्य लिख्या है । ताके उपरि एक निषेक बडा लिख्या है । ताके आगे तहांही दिया द्रव्य लिख्या है जैसे कृष्टि वेदनाधिकारका विधानविषे संहष्टि जाननी । बहुरि क्षीण कथायविषे छह कर्मनिविषे विवक्षित एक कर्मका सत्त्व द्रव्य ऐसा स । ३ । १२ ताकों अपकर्षण भागहारका भाग देह एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि ताकों पत्यका असंख्यातवां भागका भाग देह तहां एक भाग गुणश्रेणि आयाम

विषे गुणकार क्रमकरि बहुभाग उपरितन स्थितिविषे अतिस्थापनावली छोडि विशेष घटता
क्रमकरि देना तिनकी संहति असी—



बहुरि निद्रादिक चोदह घातियानिका अंतकांडकविषे प्रथमादि फालिनिका वा अंत
फालिका द्रव्य देनेका विधान जैसे सुक्ष्म सांपरायविषे मोहका कह्या तैसे ही जानना ।
तिनकी रचना पूर्वोक्त प्रकार असी—

निद्रादिक प्रयमादिफालि	चौदह घातियानिकी प्रयमादिफालि	निद्रादिककी अंतफालि	चौदह घातियानिकी अंतफालि
			

बहुति तीन वेद व्यापि कषायनिविष्टे एक सहित चढनेकी अपेक्षा क्षपक जीव बारह प्रकार हैं। तहां पुरुष वेद क्रोध सहित चढनेवालेके नपुंसक स्त्री सात नोकषाय क्षपणा अश्व-करण कृष्टिकरण क्रोध मान माया लोभ क्षपणा क्रमैतें हो हे बहुति मान माया लोभ सहित चढ्याके नोकषाय क्षपणा पर्यंत तौ समान है पीछें क्रोधकी अर क्रोध मानकी अर क्रोध

मायाकी क्रममें क्षपणा हो है। पीछें अधिकरण कृष्टिकरण हो है पीछे क्रममें अवशेष कषायानि-
की क्षपणा हो है बहुरि अंतकरण पीछें कृष्टि करण पर्यंत तो जिस कषाय सहित चढ्या
ताकी प्रथम स्थिति स्यापे है। पीछें अवशेष कषायानिकी जुदी जुदी प्रथम स्थिति स्यापे है
सो प्रथम स्थिति गुणश्रेण्यायाम रूप है तातें तिनकी अधिक क्रम रूप रचना जाननी।
बहुरि नपुंसक स्त्रीवेद सहित चढ्या जीवकें स्त्रीवेदका क्षपणा कालविषे दोऊ वेदनिकी
क्षपणा हो है। इहां जिस वेद सहित चढ्या ताहीकी प्रथम स्थिति स्यापे है। ऐसा जानना।
ऐसे ए नव कालके प्रत्येक यथायोग्य अंतर्मुहूर्तमात्र जानने तिनकी संहति रचना ऐसी-

२७	लो स	लो स	लो स	लो स
२७	या स	या स	या स	कि का
२७	मा स	मा स	मा स	अ स्स
२७	को स	कि का	अ स्स	या स
२७	कि का	अ स्स	मा स	मा स
२७	अ स्स	को स	को स	को स
२७	नो ७	नो ७	नो ७	नो ७
२७	न ६	न ६	इ	इ
२७	न	म	न	न
२७	न	इ	मा	ति

इहाँ इनका प्राकृत नामका आदि अक्षरकी संहारि जाननी । बहुरि अवशेष तीन

घाति कर्मनिका नाशकरि सयोग केवली हो है । तहां प्रथमादि समयविषे आयुविना तीन घातियानिका द्रव्यकों अपकर्षण भागहारका भाग देह उदयादि गुणश्रेणि आयामविषे गुणकार कर्मकरि उपरितन स्थितिविषे विशेष घटता कर्मकरि अतिस्थापनावली छोड दीजिए है । ताकी संहिष्टि सुगम है । इहां स्वस्थान केवलीतें आवर्जित करणविषे अपकर्षण द्रव्य असंख्यात गुणा, गुणश्रेणि काल संख्यातवे भागमात्र जानना । बहुरि दंड कपाट प्रतरलोक पुरणविषे स्थिति सत्व घात कीया ताका प्रमाण दंडविषे पत्यका असंख्यातवां भागकों असंख्यातका भाग देह बहुभागमात्र अर कपाटविषे अवशेष एक भागकों तैसे ही भाग देह बहुभागमात्र बहुरि प्रतरविषे अवशेष एक भागकों तैसे ही भाग देह बहुभागमात्र अर लोकपूरणविषे अवशेष एक भाग संख्यात गुणा अंतर्मुहूर्तकरि हीन जानना । जैसे समय समय घात भए अवशेष स्थिति संख्यात गुणा अंतर्मुहूर्तमात्र रहै है । ताका संख्यात बहु-भाग आयाम रूप कांडक बिधानकरि कर्मतें घात कीएं आयुके समान तीन घातियानिकी अंतर्मुहूर्तमात्र स्थिति रहै है ताकी संहिष्टि औसी-

याहीका नाम स्पर्धक शलाका है। ताकी संहृष्टि नवका अंक है (९) बहुरि गुणहानि समूहरूप एक स्थान तीहिविषै गुणहानिका पत्यके असंख्यातवे भागमात्र है। याहीका नाम नानागुणहानि है। ताकी संहृष्टि औसी (ना) औसै जघन्य स्थान हो है। इनके प्रमाणकी संहृष्टि औसी जाननी-

अवि	वर्ग	वर्ग्या	स्पर्धक	गुणहानि	नानागुणहानि
≡	≡ ३	३	३ ३	१	३

बहुरि स्थान स्थान प्रति सूत्र्यगुलका असंख्यातवां भाग प्रमाण मात्र जघन्य स्पर्धक बंधे है। औसै उत्कृष्ट परिणाम योग पर्यंत क्रम है औसै पूर्वस्पर्धकविषै विधान है। तहां पूर्वस्पर्धकका जघन्य वर्गके अविभाग प्रतिच्छेदनिकी संहृष्टि औसी (व) याकौ स्पर्धक शलाका अर नाना गुणहानिकरि गुणै अंत स्पर्धकका प्रथम वर्गकी संहृष्टि होइ। तामें अंक संहृष्टि अपेक्षा वर्गणा शलाकाका प्रमाण ब्यारि तामें एक घटाएं तीन होइ सो अधिक कीएं पूर्व स्पर्धकका उत्कृष्ट वर्गके अविभाग प्रतिच्छेदनिकी संहृष्टि औसी- व। १। ना बहुरि इनके नीचै अपूर्वस्पर्धक हो है तिनका प्रमाण स्पर्धकशलाकाकौ असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र हो है सो औसा - ८ याका उत्कृष्ट वर्गविषै अविभाग प्र-
मो ३

तिच्छेद पूर्वस्पर्धकका जघन्य वर्गके असंख्यातवे भागमात्र है सो औसा व याकौ अपूर्व स्पर्धक प्रमाणका भाग अपूर्वस्पर्धकके जघन्यवर्गका अविभाग प्रतिच्छेद हो है। सो

ऐसा—व ९ बहुरि सर्व प्रदेशनिकों द्वयर्ध गुणहानिका भाग दीएं पूर्वस्पर्धककी प्रथम ३ ओ ३

वर्गणाका द्रव्य हो है । याकों दोगुण हानिका भाग दीएं एक विशेष हो है । बहुरि प्रथम-वर्गणातैं द्वितीयादि अंतवर्गणा पर्यंत एक एक विशेष घटता द्रव्य प्रथम गुणहानिविधें हो है । बहुरि द्वितीयादि गुणहानिविधें आधा आधा क्रम अंत गुणहानि पर्यंत जानना । बहुरि आदि वर्गणाकों द्वयर्ध गुणहानिकारि गुणें सर्व प्रदेश प्रमाण ऐसा (व १२) ताकों अपकर्षण भागहारका भाग देह एक भागमात्र द्रव्य ग्रहि ताकों अपूर्व पूर्व स्पर्धकनिविधें यथा योग्य दीजिए है । इनकी संदृष्टि यथासंभव जानि लेनी । पूर्व अपूर्वस्पर्धकनिकी रचना ऐसी—

पूर्वस्पर्धक	३—	व	९	ना
६ ना				यहां द्रव्यकी संदृष्टि यथा संभव जाननी
अपूर्वस्पर्धक		व	व	३
९ ओ ३		व	६	३ ओ ३

इहाँ रचना ऊभी लीक करी है । बहुरि द्वितीय समयविषे प्रथम समयतें असंख्यात गुणा द्रव्य अपकर्षण करे है सो ऐसा—च १२ इहाँ गुणकारकों भागहारका भागहार कीया जो

है । बहुरि प्रथम समयविषे कीने अपूर्वस्पर्धकनिके नीचें नवीन अपूर्वस्पर्धक करिए है । तिनका प्रमाण प्रथम समय संबंधी स्पर्धकनिके असंख्यातवे भागमात्र है सो ऐसा—९ इहाँ संदृष्टि रचना औसी—

१ ना	पूर्वस्पर्धक	३— ब ९ ना
२ ओ ३	प्रथमसमय अपूर्वस्पर्धक	ब ७ ओ ३
३ ओ ३ ३	द्वितीयसमय अपूर्वस्पर्धक	ब १ ६ ३।ओ । ३।३

इहाँ सर्व स्पर्धकनिकी वर्गणाकी संदृष्टिविषे समष्टिका करि आगें विशेष घटता क्रम की संदृष्टि करी है । तहाँ उपरि पूर्वं स्पर्धक नीचें प्रथम समयविषे कीने, अपूर्व स्पर्धकनीचें द्वितीय समयविषे कीने । अपूर्व स्पर्धककी रचना जाननी । अैसे ही अपूर्वस्पर्धककरणकाल

२४

का अंत समय पर्यंत जानना । बहुरि कृष्टि करण कालका प्रथम समयविषे सर्व पूर्व अपूर्व स्पर्धक संबंधी जीव प्रदेश ऐसे-व १२ । इनिकों अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र ऐसा व । १२ । ग्रहि प्रथम समयविषे कीनी प्रथमादि कृष्टिनिविषे अर अपूर्व स्पर्धककी प्रथ-

ग्रो

मादि वर्गणानिविषे द्रव्य दीजिए है । इहां कीनी कृष्टिनिका प्रमाण वर्गणा शलाकाके असंख्यातवे भागमात्र ऐसा ४ इनकी रचना ऐसी—



३

इहां कृष्टिकी समपट्टिकारूप संहतिकरि नीचें विशेष घटता क्रमकी संहति करी है बहुरि द्वितीय समयविषे पूर्व द्रव्यें असंख्यातगुणा द्रव्य ऐसा व । १२ । ग्रहि ताकौ प्रथम समय

को

३

विषे कीनी कृष्टि प्रमाणकों असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र ऐसा ४ । तिनके नीचें नवीन कृष्टि करै है । तिनविषे अर प्रथम समय संबंधी प्रथम कृष्टिकों

३३

आदि देय अंत कृष्टि पर्यंत कृष्टिनिविषे निक्षेपण करै है । इनकी रचना ऐसी—

द्वितीय समय कुल कृष्टि ४ ओ ३	प्रथम समयकृतकृष्टि समपट्टिका
	प्रथम समयकृतकर्णव्य विशेष
	अवस्तानशीर्ष
	प्रथमपल्लव
	उभय द्रव्य विशेष

इहां नीचें नवीन कृष्टिनीकी उपरि पुरातन कृष्टिकी संहति करी हे । तहां पुरातन कृष्टिविषे समपट्टिका अर विशेष घटता क्रमकी संहति करी हे । बहुरि पुरातन कृष्टिविषे अवस्तान शीर्ष विशेष द्रव्य दीपे सर्वकृष्टिकी समपट्टिका भई ताकी सर्व कृष्टिनिविषे मध्यम खंड द्रव्य दीपे समपट्टिका रही ताकी अर उभय द्रव्य विशेष दीपे विशेष घटता क्रम भया ताकी रचना करी हे । इहां औसैं आढी रचना करी हे । बहुरि इहां प्रथम समयविषे प्रया द्रव्य असा व । १२ याकौ पत्यका असंख्यातवां भागका भाग दीपे कृष्टि संबंधी द्रव्य असा ओ

व । १२ अवशेष बहुभागमात्र द्रव्य पूर्व अपूर्व स्पर्शकनिविषे दीजिए हे । बहुरि कृष्टिसंबंधी ओ

द्रव्यकौ प्रथम समयविषे कीनी कृष्टि प्रमाणमात्र गण्ड असा ४ ताका अर किंचित् न दोगुण

हानि ऐसा १६- ताका भाग दीएं प्रथम समय संबंधी विशेष होइ सो ऐसा व । १२ ताकौ
ओ प ४ १६-

दोगुणहानि करि गुणै प्रथमवर्गणा औसी व । १२ । १६ ताकौ द्वितीय समयविषै कीनी
ओ प ४ १६-

कृष्टि प्रमाण ऐसा-४ ओ ३ । ताकरि गुणै अधस्तन कृष्टिका द्रव्य हो है । बहुरि प्रथम समय
संबंधी विशेष ऐसा-व । १२ ताकौ एक घाटि प्रथम समय संबंधी कृष्टि प्रमाण गच्छ अर
ओ प ४ १६-

तातै एक अधिक प्रमाणकौ दोयका भाग दीएं तिस गच्छका संकलन घन होइ सो ऐसा-
४ । ४ याकरि गुणै अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य हो है । बहुरि द्वितीय समयविषै द्रव्य ऐसा-
४ ४ २

व १२ ओ ३ हहां भागहारका भागहारकौ राशिका गुणकार कीएं ऐसा व १२ । ३ याकौ
पत्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं कृष्टि संबंधी द्रव्य ऐसा व । १२ । ३ याविषै प्रथम
ओ प ३

समय संबंधी कृष्टि संबंधी द्रव्य मिलावनेकौ अगिला असंख्यातका गुणकार उपरि एक अ-
धिक कीएं उभय संबंधी कृष्टि द्रव्य ऐसा व । १२ ३ याकौ प्रथम समयविषै कीनी कृष्टि
ओ । प ३

प्रमाण विषै द्वितीय समय संबंधी कृष्टि मिलावनेको साधिक कीएं उभय समय संबंधी कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ औसा ४ ताका अर किंचिदून दोगुणहानिका भाग दीएं उभय द्रव्य विशेष औसा व १२ ३ याको उभयकृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ अर तातै एक अधिक प्रमाणको ।

ओ ५ ४ १६-

३ ३

। १-

दोयका भाग दीएं तिस गच्छका संकलन घन औसा ४ । ४ ताकरि गुणै उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है । बहुरि द्वितीय समय संबंधी द्रव्यविषै पूर्वोक्त तीन द्रव्य घटावनेकी आगै औसी

(३) संहष्टि कीएं अवशेष द्रव्य औसा व । १२ । ३ । ३ याको उभय संबंधी कृष्टिनिका भाग को । ५

३

दीएं एक खंड होह । ताको तिस ही करि गुणै सर्व मध्यम खंड द्रव्य हो है । इनकी संहष्टि औसी-

प्रधस्तन कृष्टि	ब। १२। १६। ४ ओ। ५। ४। १६ - ३। ओ३ ३ ३
प्रधस्तन शीर्ष	१ - ब। १२। ४। ४ ओ। ५। ४। १६ - ३ ३। २ ३ ३
उभय द्रव्य विशेष	१ - १ - ब। १२। ३। ४। ४ ओ। ५। ४। १६ - ३ ३। २ ३ ३
मध्यम खंड	१ - ब। १२। ३ = ४ ओ। ५। ४ ३ ३

बहुरि अंत कृष्टि करण कालका तृतीयादि समयनिविषे यथा संभव रचना जाननी ।
इहां अपूर्व स्पर्धकानिका वा सूक्ष्म कृष्टिका विधान अनिवृत्तिकरणवत् जानना । तहां कर्मपर-
माणनिविषे अनुभाग शक्ति अपेक्षा कथन है । इहां जीव प्रदेशनिविषे योग शक्तिका निरू-
पण है तहां प्रमाणादिकका विशेष है सो विशेष जानना । बहुरि कृष्टि वेदक कालका प्रथम
समयविषे विधान कहिए है-
कृष्टि करण कालका प्रथम समयविषे कीनी कृष्टि प्रमाणविषे अन्य समयविषे कीनी

कृष्टि प्रमाण मिलावनेको अधिककी संहष्टि कीएं सर्व कृष्टि प्रमाण ओसा ४ तार्को पल्यका ३

असंख्यातर्वा भागका भाग दीएं बहुभाग औसा

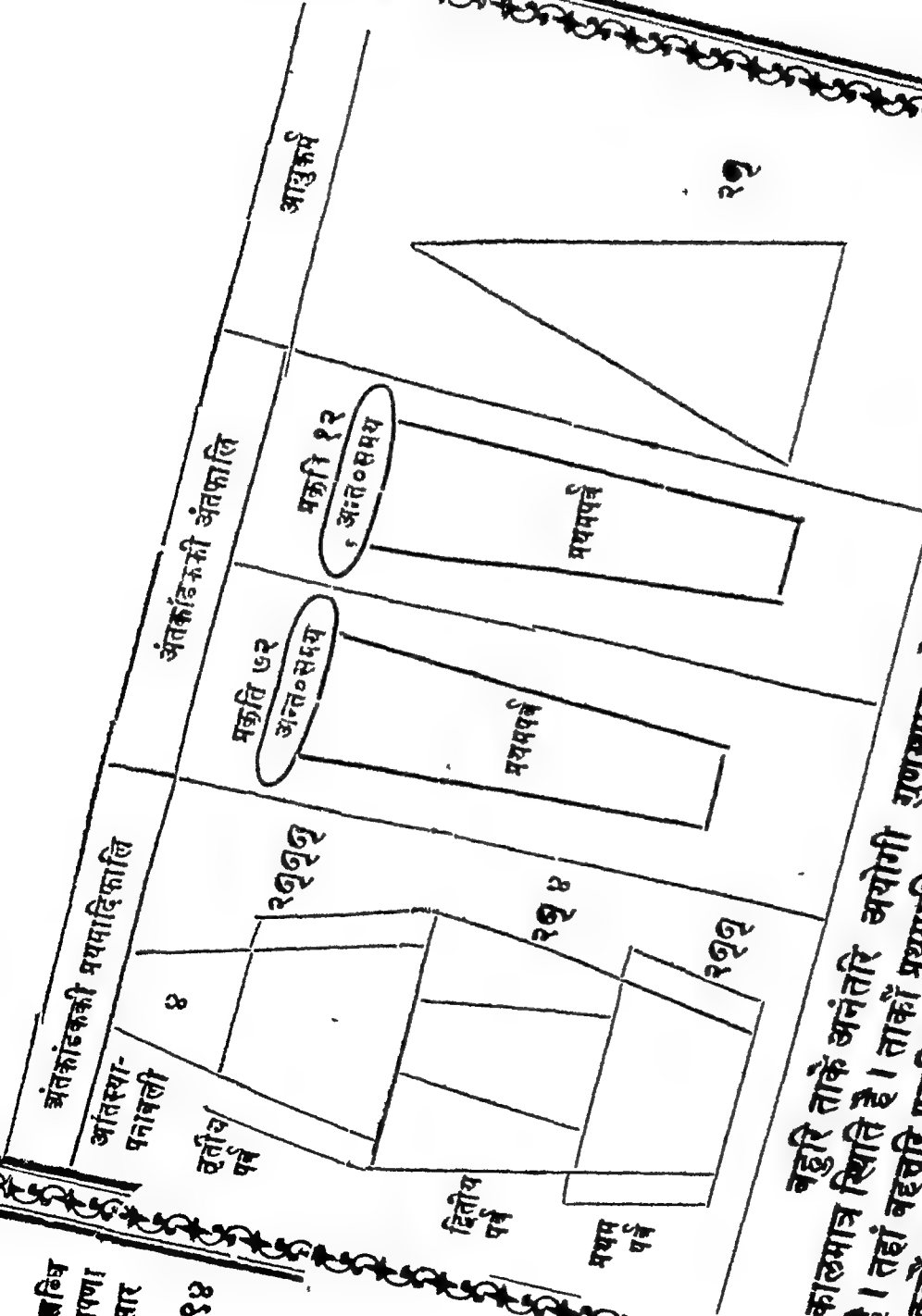
बहुरि एक भाग औसा ४ । प तार्कौ अंक संहृष्टि अपेक्षा पांचका भाग देह दोय भागमात्र
३।३

नीचेकी तीन भागमात्र उपरि की अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण जानना । बहुरि द्वितीय समय विषे नीचेकी अनुदय कृष्टिनिविषे तिनके असंख्यातेवे भागमात्र उदय रूप हो हैं । अर उपरि की अनुदय कृष्टिनिविषे तिनके असंख्यातेवे भागमात्र उदय कृष्टि हैं । ते अनुदय रूप हो हैं । अैसे ही तृतीयादि समयनिविषे विधान जानना । इस सूक्ष्म कृष्टि वेदक काल-विषे सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती शुद्ध्यान हो है । ताकी संदृष्टि अैसी-

द्वितीयसमय	० ० ०		
	अनुदय	उदय	अनुदय
प्रथमसमय	१ ४ २ ३ ३ ५ ५ ३	४ = ४ ३ ३ ३ ५ ५ ३	४ ३ ३ ३ ५ ५ ३
	अनुदय	उदय	अनुदय
	१ ४ २ ३ ३ ५ ५ ३	१ ५ ४ ३ ३ ५ ५ ३	४ ३ ३ ३ ५ ५ ३
	अनुदय	उदय	अनुदय

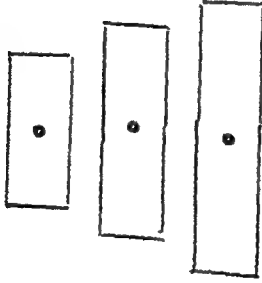
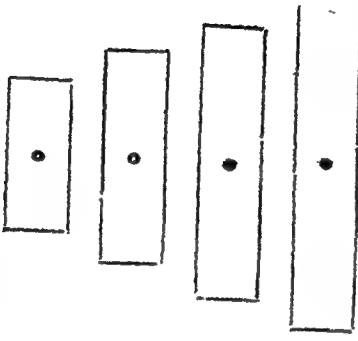
इहां प्रथमादि समयनिकी रचनाकरि तहां कृष्टिनिकी रचना आगैं करी है । तहां समपाटिका विशेष घटता क्रमरूप संदृष्टि करी है अर अनुदय उदय अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण लिख्या है बहुरि सयोगीविषे अंतर्मुहूर्त काल अवशेष रहै वेदनीय नाम गोत्रका अंत कांडककी प्रथम फालिका पतन हो है । तहां ताके द्रव्यको ग्राहि स्थिति कांडक घात कीएं

पीछे अवशेष जो स्थिति रहेगी ताविषे असंख्यातगुणा क्रमकारि अर ताके उपरि पुरातन गुणश्रेणि आयामका अंत पर्यंत चय घटता क्रमकारि अर ताके उपरि अतिस्थापनावली छोडि उपरितन स्थितिविषे चय घटता क्रमकारि द्रव्य दीजिए है। औसैं इहां तीन पर्व जानने औसैं ही ताकी द्वितीयादि चरमफालि पतन समय पर्यंत विधान जानना । बहुरि अंत फालि पतन समयविषे अवशेष स्थितिका द्विचरम समय पर्यंत एक पर्व अर अंत समयरूप द्वितीय पर्व औसैं दोय पर्वनिविषे द्रव्य दीजिए है । इहां पिन्व्यासी प्रकृतिनिका सत्त्वविषे बहुत्तरि प्रकृति तो अयोगीका द्विचरम समयविषे अर तेरह प्रकृति ताका अंत समयविषे सिपैंगी तातैं जुदी जुदी रचना करिए है । अर तेरह प्रकृतिनिविषे मनुष्यायुका स्थिति कांडक घात नाहीं । तातैं इहां बारह प्रकृतिनिका ग्रहण कीया है । सो इहां जैसैं क्षीण कषायविषे ज्ञानावरणादिकनिका अंत कांडकविषे विधान वा सम्यग्दृष्टिका स्वरूप कहया या तैसैं इहां जानना । बहुरि आयुकी अंतमुहूर्तमात्र स्थिति रही ताकी घटता क्रमलीएं निषेकनिकी रचना जाननी । औसैं इनकी संदृष्टि औसी हो है—



बहुरि ताकै अनंतरि अयोगी गुणस्थान हो है तहां पांच लघु अक्षर उच्चारण कालमात्र स्थिति है। ताकौ प्रथमादि समयनिविधे तिन पर्वनिका एक एक निषेककौ गलावे है। तहां बहुरि मकृतिनिका द्वित्रय समयविधे तेरह मकृतिनिका अंत समयविधे अंत निषेककौ गलावे है। सो इहां अयोगी कालका अंक संहितिकरि च्यारि समय मानि बहुरि

प्रकृतिक तीन निषेक रूप अर बारह प्रकृतिनिकी व्यारि निषेक रूप रचना ऐसी जाननी

प्रकृति ७२	प्रकृति १२
	

अर निषेक घटते क्रम लीएं हैं अर अधोगलन रूप जुदे जुदे हैं तातैं तिनकी जुदी जुदी रचना घटता क्रम लीएं करी है औसैं सर्व कर्मनिका क्षयकरि ताका अनंतर समयविषैं पर द्रव्य संबंधी रहित केवल आत्मा ऊर्ध्व गमनकरि लोकका अग्रभागविषैं जाइ विराजमान हो है। तहां अनंत काल पर्यंत तैसैं ही रहै है तातैं कृतकृत्य अवस्थाको प्राप्त भए तातैं तिनको सिद्ध कहिए। सो सिद्ध भगवान परम मंगलकारी होऊ। औसैं श्रीलब्धिसार नामा शास्त्र अर इसहीविषैं क्षणसागर शास्त्रका अर्थ गर्भित है। ताविषैं अर्थनिकी संहति अर तिन संहतिनिका स्वरूप निरूपण किया है। तहां जो चुक होइ सो विशेष ज्ञानी संवारि शुद्ध करियो मोको अत्यन्न मानि क्षमा करियो।

श्लोक-

गर्भितक्षपणासारं लब्धिसारश्रुतं महत् ।
तत्संहटिसमाख्यातिः पूर्णजातार्थभासिका ॥ १ ॥

मगलं मलहंताहन् सिद्धात्मा शुद्धमंगलं ।
मंगलं साधुसंघस्तद्धर्मो मंगलमुद्यमं ॥ २ ॥

इति क्षपणासार अर्थगर्भित लब्धिसारके अर्थनिकी संहतिनिका वर्णन संपूर्ण भया,
याकों संपूर्ण होतैं यह ग्रंथ समाप्त भया, ग्रंथ समाप्त होतैं प्रारंभ कीया
कार्यकी सिद्धि-होनेकरि हम आपको कृतकृत्य मानि इस कार्य
करनेकी आकुलता रहित होइ सुखी भए याके प्रसादतै
सर्व आकुलता दूरे होइ हमारैं शीघ्र ही स्वात्मज
सिद्धि जनित परमानंदकी प्राप्ति होउ ।



अथ ग्रंथप्रशस्तिवर्णन ।

श्रीमत् लब्धिसार वा क्षपणासार सहित श्रुत गोभट्टसार
ताकी सम्यग्ज्ञान चंद्रिका भाषामय टीका सुखकार ।

प्रारंभी अर पूरण भइ अब भए समस्त मंगलाचार

सफल मनोरथ भयो हमारो पायो ज्ञानानंद अपार ॥ १ ॥

दोहा—

आप अर्थमय शब्दजुत ग्रंथ उदाधि गंभीर । अवगाँह ही जानिये याकी महिमा धीर ॥ १ ॥
षट्कारक या ग्रंथके निश्चय अर व्यवहार । जानहु जानत होत है जातैं सत्य विचार ॥ २ ॥

सवैया—

सिद्ध श्रुत शब्द सोई है स्वतंत्र करतार भया यहु ग्रंथ सोई कर्म पहिचानिए ।
ग्रंथरूप जुरनेकी शक्ति सो करण जैन शासनके अर्थि औसो संप्रदान जानिए ।
ग्रंथहीतैं भयो ग्रंथ यहु अपादान जैन श्रुतविषै यहु अधिकरण प्रमानिए ।
स्वाश्रित स्वरूप षट्कारक विचारो औसै निश्चय करि आनको विधान न वखानिये ॥
जिन गन इंद्र नेमि इंद्र आदि करतार भयो ग्रंथ काज सोई कर्म शर्म थान है ।
याके होत भए जे सहाई हैं करण तेई भव्यनिके अर्थि किया औसै संप्रदान है ।
आन काज छूटनेतैं भयो यहु काज सोई अपादान नाम औसै जानत सुजान हैं ।
भयो क्षेत्रविषै अधः करण कहावे सोई औसै व्यवहार षट्कारक विधान है ॥ ५ ॥

ग्रंथ होंनके जे भए समाचार सुखकार-
दोहा-

वर्धमान केवलीके देहरूप पुद्गल ते जीव नाहि प्रेरे तौऊ उपकार करै हैं।
मेघवत् अक्षर रहित दिव्य ध्वनि करि घर्माघृत वरसाय भवताप हरै हैं।
ताहीका निमित्त पाह आन स्कंध पुद्गलके नानाविध भापारूप होइ विसतरे है।
जाकों जैसो इष्ट सो सुने है सो सत्य अर्थ सभा माहि असौ जिन महिमा अनुसरै है ॥
गनधर गौतम जु च्यारि ज्ञानधारी आप महा रुचि धारि तिनकों तहां सुने है ॥
तिनकों निमित्त अर श्रुतज्ञान शक्ति सेती साचे नाना अर्थिनिकों नीकी भांति सुने है।
राग अंश उदै होत भई उपकार बुद्धि तातें ग्रंथ गुणनेकों भले वर्ण चुने है।
अंग अंग बाह्यरूप रचना बनाई ताकों करिके अभ्यास भव्य सर्व कर्म घुने हैं ॥ ८ ॥
बुद्धि ऋद्धि धारी कोई संपूरण जानि ताहिकोई ताके अंग अंश जानि अर्थ पायो है।
केई ताके अनुसार ग्रंथ जोरै हैं नवीन करिकें संक्षेप सोई अर्थ तहां गायो है।
गणधरके ग्रंथ ग्रंथ तिनकों न पाठी अब असौ कलिकाल दोष आपको दिखायो है।
अनुसारी ग्रंथनि तैं शिव पंथ पाह भव्य अबहु करि साधन स्वभाव भाव भायो है ॥
मुनि भूतबलि यति वृषभ प्रमुख भए तिनि दूनें तीन ग्रंथ कीने सुखकार हैं।
प्रथम पवल अर दूजो है जयचवल तीजो महाचवल प्रसिद्ध नाम धार हैं।
श्लोक तो हैं लाखो अर अर्थ है कठिन घनो तातें बुद्धिमान विनु जानै नाहि सार है।

दक्षिणमें गोम्पट निकटि मूलविद्रपुर तहां ठीक कीए ग्रंथ पाहए अवार है ॥
दक्षिण दिशामें नेमिचंद आदि मुनिराज भये तिनहुंके भयो तिनको अभ्यास है ।
जैनी राजमल राजा ताको मंत्री आप राजा भयो है चामुंडराय तहां ताको वास है ।
तीहि कीनी प्रश्न तब धवलादि शास्त्रनिके अनुसारि कीयो हसग्रंथको उजास है ।
बंधकादि संग्रहैं नाम पंचसंग्रह है अथवा गोम्पटसार नामको प्रकाश है ॥ ११ ॥

दोहा-

बहुत सूत्रके करनेतैं नेमिचंद गुनधार । मुख्यपने यों ग्रंथके कहिए है करतार ॥
चोपड़ै ।

कनकनंदि फुनि माधवचन्द । प्रमुख भए मुनि बहु गुन कंद ।
तिनहुंको है यामैं सीर । सूत्र कितेक किए गभीर ॥ १३ ॥
मौक्तिक रत्न सूत्रमें पोय । गंध्या ग्रंथ हार सम सोय ।
अर्थ प्रकाशक अमल अनूप । हृदय धरे सो है सुखरूप ॥ १४ ॥
नेमिचंद जिन शुभपद धारि । जैसे तीर्थ कियो गिरिनारि ।
तैसें नेमिचंद मुनिराय । ग्रंथ कियो है तरण उपाय ॥ १५ ॥
देशनिमें सुप्रसिद्ध महान । पूज्य भयो है यात्रा थान ।
यामैं गमन करै जो कोय । उच्चपना पावत है सोय ॥ १६ ॥
गमन करणको गली समान । कर्णाटक टीका अमलान ।
ताको अनुसरती शुभ भई । टीका सुंदर संस्कृतमई ॥ १७ ॥

केशववर्णी बुद्धि निधान । संस्कृत टीकाकार सुजान ।
मार्ग कियो तिहिं जुत विस्तार । जहं स्थूलनिकौ भी संचार ॥ १८ ॥
हमहु करिके तहां प्रवेश । पायो तारन कारण देश ।
चितवन करि अर्थनिकौ सार । अैसे कीनो बहुरि विचारि ॥ १९ ॥
संस्कृत संहितनिकौ ज्ञान । नहि जिनके ते बाल समान ।
गमन करणकौ अति तरफरे । बल विनु नाहि पदनिकौ धरे ॥ २० ॥
तिनि जीवनिकौ गमन उपाय । भाषा टीका दई वनाय ।
वाहन सम यहु सुगम उपाव । याकरि सफल करो निज भाव ॥ २१ ॥
पूर्व कहे सिद्धान्त महान । तिनहीमें जयधवल प्रधान ।
ताका पंच दशम अधिकार । ताकरि करिके अर्थ विचार ॥ २२ ॥
नेमिचंद नामा मुनिराय । लब्धिसार श्रुतसार वनाय ।
वर सम्यक्त्व चरित्र वखान । करिके प्रगट किए गुणधान ॥ २३ ॥
उपशम श्रेणि कथन पर्यंत । ताकी टीका संस्कृतवंत ।
देखी देखे शास्त्रनि माहि । संपूरण हम देखी नाहि ॥ २४ ॥
माधवचंद यती कृत ग्रंथ । देख्यो क्षणसासर सुपंथ ।
संस्कृत धारामय सुखकार । क्षपक श्रेणि वर्णनयुत सार ॥ २५ ॥
वह टीका यह शास्त्र विचार । तिनि करि किछु अर्थ अवधार ।
लब्धिसारकी टीका करी । भाषामय अर्थनसौ भरी ॥ २६ ॥

औसँ ग्रंथ दोयकी बनी । भाषा टीका सुंदर घनी
इनिमें जैसे कियो वखान । क्रमतेँ जानौ ताहि सुजान ॥ २७ ॥
सबैया ।

करिकेँ पीठबंध जीवकांड भाषा कीनी तामेँ
गुणथान आदि दोय वीस अधिकार हैं ।
प्रकृति समुत्कीर्तन आदि नव ग्रंथनिको

समुदाय कर्मकांड ताकी भाषा सार है ।
औसँ अनुक्रम सेती पीछेँ लिख्यो इनिहीकी
संहृष्टीनिको स्वरूप जहां अर्थभार है ।

पूरण गोम्मटसार ग्रंथ भाषा टीका भई
याकौ अवगाहैं भव्य पावैं भव पार हैं ॥ २८ ॥

समकित उपशम क्षायिकको है वखान
पीछेँ देश सकल चारित्रको बखान है ।

उपशम अपक श्रेणी दोय तिनहुको
कीयो है वखान ताकौँ जानै गुणवान हैं ।

सयोगी अयोगी जिन सिद्धनिकौँ वर्णनकरि
लब्धिसार ग्रंथ भयो पूरण प्रमान है ।

इनकी संहृष्टिनिकौँ लिखिकेँ स्वरूप ताकी

संपूर्ण भाषा टीका कीनी भयो ज्ञान है ॥ २९ ॥

याविध गोम्मटसार लब्धिसार ग्रंथनिकी

भिन्न भिन्न भाषा टीका कीनी अर्थ गायकै ।

हनिक्कै परस्पर सहायपनौ देख्यो तातै

एक करि दई हम तिनिकी मिलायकै ।

सम्यग्ज्ञान चंद्रिका घरयो है याकौ नाम

सो ही होत है सफल ज्ञानानंद उपजायकै ।

कलिकाल रजनीमें अर्थको प्रकाश करे

यातै निज काज कीने इष्ट भाव भायकै ॥ ३० ॥

संशयादि ज्ञाननिकौ हेतुभूत जीवनिकै

तथाविध कर्मको क्षयोपशम जानिए ।

ताकरि हमारै किछू संशय विपर्यय वा

अनध्यवसाय भया होसी असै मानिये ।

तिनकरि ग्रंथविषै कहीं लिपं संशयको

कहीं विपरीत कहीं स्पष्ट न वखानिये ।

लिख्यो होइ अर्थ ताको भरो वश नाहि तातै

क्षमा करो गुनी, शुद्ध करो चूक मानिये ॥ ३१ ॥

दोहा ।

संशयादि होतै किछू जो न कीजिए ग्रंथ ।

तौ छद्मस्थानिकें मिटै ग्रंथ करनको पंथ ॥ ३२ ॥
जो कषाय उपजायकें धरै अर्थ विपरीत ।
तौ पापी है आप ही आज्ञा भंग अभीत ॥ ३३ ॥
आज्ञा अनुसारी भए अर्थ लिखे या मांहि ।
धरि कषाय करि कल्पना हम किछु कीन्हों नाहि ॥ ३४ ॥
चौपई ।

सम्यग्ज्ञान चंद्रिका नाम, भाषामय टीका अभिराम ।
भई भले अर्थनिकरि युक्त, जाविध सो सुनिये अब उक्त ॥ ३५ ॥
सवैया ।

मैं हों जीव द्रव्य नित्य चेतना स्वरूप मेरो
लग्यो है अनादितैं कलंक कर्ममलको ।
ताहीको निमित्त पाय रागादिक भाव भए
भयो है शरीरको मिलाप जैसे सलको ।
रागादिक भावनिकों पायकें निमित्त फुनि
होत कर्मबंध असो है बनाव कलको ।
ऐसैं ही अमृत भयो मानुष शरीर जोग
बनै तौ बनै इहां उपाव निज थलको ॥ ३६ ॥
दोहा ।

रमापति स्तुत गुन जनक जाको जोगी दास ।

सोई मेरो प्रान है धरि प्रगट प्रकाश ॥ ३७ ॥

चौपई ।

भैं आतम अर पुद्गल स्कंध । मिलिकैं भयो परस्पर बंध ।
सो असमान जाति पर्याय । उपज्यो मानुष नाम कहाय ॥ ३८ ॥
मातगर्भमें सो पर्याय । करिकैं पूरण अंग सुभाय ।
वाहिर निकसि प्रगट जब भयो । तब कुटुंबको भेलो थयो ॥ ३९ ॥
नाम धर्यो तिनि हरषित होइ । टोडरमल्ल कहै सब कोय ।
ऐसो यहु मानुष पर्याय । बधत भयो निज काल गमाय ॥ ४० ॥
देश दूढाहडमांहि महान । नगर सवाई जयपुर थान ।
तामैं ताकाँ रहनो घनो । थोरो रहनो ओढि बनो ॥ ४१ ॥
तिस पर्यायविषैं जो कोय । देखन जानन हारो सोय ।
मैं हौं जीव द्रव्य गुन भूप । एक अनादि अनंत अरूप ॥ ४२ ॥
कर्म उदयको कारण पाय । रागादिक हो है द्रव्य दाय ।
ते मेरे औपाधिक भाव । इनिकाँ विनशैं मैं शिवराव ॥ ४३ ॥
वचनादिक लिखनादिक क्रिया । वर्णादिक अर इंद्रिय हिया ।
ए सब हैं पुद्गलका खेल । इनमें नाहि हमारो मेल ॥ ४४ ॥
रागादिक वचनादिक घना । इनके कारण कारिजपना ।
तातैं भिन्न न देखै कोय । विनु विवेक जन अंधा होइ ॥ ४५ ॥

सवैया ॥

कर्मको क्षयोपशम होत भयो मेरे किछु
बुद्धिको विकास तातैं विद्याभ्यास कर्यो हे ।

होनहार नीकी तातैं औसा ही बनाव बन्यो

नाना जैन ग्रंथनिमैं ज्ञान विस्तार्यो हे ।

सार्थक गोमटसार लब्धिसार शास्त्रनिकों

अर्थ अवभास्यो तब अँसो भाव घर्यो हे ।

इनिकी जो भाषा दीका हे तो तुच्छबुद्धि धनी

जानैं सार अर्थ जो प्रमाण अनुसर्यो हे ॥ ४६ ॥

चौपई ।

रायमछ साधर्मी एक । धर्म सधैया सहित विवेक ।

सो नानाविध प्रेरक भयो । तब यहु उत्तिम कारज थयो ॥ ४७ ॥

ज्ञान राग तो मेरो मिल्यो । लिखनौ करनौ तनकौ मिल्यो ।

कागदमहि अक्षर आकारि । लिखि या अर्थ प्रकाशन हार ॥ ४८ ॥

अँसैं पुस्तक भयो महान । जानै जाने अर्थ सुजान ।

यद्यपि यहु पुद्गलकौ स्कंध । हे तथापि श्रुतज्ञान निबंध ॥ ४९ ॥

संवत्सर अष्टादश युक्त । अष्टादश शत लौकिक युक्त ।

माघ शुक्ल पंचम दिन होत । भयो ग्रंथ पूरन उद्योत ॥ ५० ॥



